A NEW GEOGRAPHY OF THE WORLD.

Part III.

A S I A.

FOR VERNACULAR AND ENGLISH MIDDLE CLASSES

नवीन भूगोल दर्पण

भाग ३

एशिया

जिसको

मुंशी ब्रजवासीलाल साहब बी०ए० असिस्टेण्ट इन्स्पेक्टर मदारिस ने उर्दू और अंग्रेजी मिडिल स्कूलों के लिये बनाया

LUCKNOW:
PRINTED BY M. L. BHARGAVA, B. A.,
AT THE NEWUL KISHORE PRESS.

1914.

५१
भूगोल

1st Edition.] मूल्य ।॥) [*Price 12 annas.*

वीर सेवा मन्दिर
दिल्ली

★

C 23
क्रम संख्या 51 पूजवा
काल नं०
खण्ड

छापे की वह गलतियां जिनका बना-लेना बहुत ज़रूरी है

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	११	महा द्वाप	महा द्वीप
८	१	चिलस्कन	चिलिस्किन
१४	चित्र में	बहेर	बहरे
१४	,,	लोनोर	लोबनार या लाबनोर
२०	१	T..ri-	Tarim
४५	७	द्रावड़	द्राविड़
७४	६	Futhe	Futher
७७	४	Bankong	Bankok
८०	२	शहतीरें	शहतीर
६१	५	Siking	Sikiang
११८	३	समय	समय से
२१३	२०	Fughana	Farghana
२१८	८	Pamers	P.mirs
२२०	चित्र में	काकेशश	काकेशस
२४३	१२	सरहद ईरान के	सरहद के
२४३	११	E. gerum	Erzerum
२५५	४	दशा	देशों

नोट—कहीं कहीं जो मात्राएं उड़गई हैं या साफ़ नहीं हैं वह इस में शामिल नहीं हैं।

नवीन भूगोलदर्पण भाग ३ की विषय सूची.

विषय | पृष्ठ

नवीन भूगोल दर्पण भाग ३
की चित्र सूची।

नोट - हरदेश के साथ में उसका नक़्शा, व्यौपार के वृत्त और आबादी के वर्ग जो इस पुस्तक में दिये गये हैं वह इस सूची में शामिल नहीं हैं।

चित्र	पृष्ठ

चित्र	पृष्ठ

एशिया

अध्याय १

१–**एशिया** का महाद्वीप सब महाद्वीपों से बड़ा है। इसका क्षेत्रफल दुनिया के स्थल का तिहाई है और इसकी आबादी दुनिया की आबादी के आधे से कुछ अधिक है। संस्कृत में उषा उस लाली को कहते हैं, जो सूर्य निकलने के एक घण्टे पहिले आकाश में दिखाई देती है। चूंकि पौ सदा पूर्व में पहले फटती है, इसलिये यूनानियों ने इस महाद्वीप का नाम **एशिया** रक्खा, क्योंकि यह महाद्वीप उनके देश से पूर्व की ओर है।

२–यह महाद्वीप और दूसरे महाद्वीपों से केवल क्षेत्रफल में ही बड़ा नहीं है, बल्कि और भी कई बातों में उनसे बढ़ कर है, जैसे—

(१) इसके पहाड़ों की चोटियां आकाश से बातें करती हैं।

(२) पृथ्वी के ऊंचे ऊंचे धरातल जैसे इस महाद्वीप में हैं, वैसे और कहीं नहीं।

(३) सर्दी और गर्मी जितनी अधिक इस महाद्वीप के कुछ हिस्सों में पड़ती है, उतनी और किसी महाद्वीप में नहीं पड़ती।

(४) प्राचीन समय में जितने बड़े बड़े राज्य हुये वह सब इसी महाद्वीप में थे। सभ्यता का केन्द्र भी यही था। भांति भांति की विद्यायें * हिन्दुस्तान से अरब के लोगों ने सीखीं, फिर उन से यूरप ने। दुनिया के इतिहास में जितनी बड़ी बड़ी बातें हुई हैं, उनमें से बहुतसी इसी महाद्वीप में हुई हैं।

(५) इस महाद्वीप की सब से बड़ी बात यह है कि वह दुनिया के सब बड़े बड़े मतों (इस्लाम, ईसाई और बौद्ध) की जन्मभूमि है।

लम्बाई चौड़ाई और क्षेत्रफल

३–यह महाद्वीप उत्तरी गोलार्द्ध में है और इसका सबसे नीचे का सिरा यानी **रोमानियां** अन्तरीप (C. Romania) भूमध्य रेखा के बहुत ही पास है। इसका सबसे ऊपर का भाग यानी **चिलिस्किन** अन्तरीप (C. Chelyuskin) शीत कटिबन्ध में है जहां से उत्तरी ध्रुव पास रह जाता है। इसकी सबसे दूर की पश्चिमी नोक **बाबा** अन्तरीप (C. Baba) और सबसे दूर की पूर्वी नोक **पूर्वी** अन्तरीप (East Cape) है।

+ **बाबुल मन्दब के मुहाने** (Bab-el-Mandeb)

---

* गणितविद्या, गानविद्या आदि।

+ बाब=दरवाज़ा, मन्दब=रोने की जगह यानी रोने का दरवाज़ा। चूंकि इस जगह अक्सर जहाज़ डूब जाते थे, इस लिये यह नाम पड़ा।

और **स्वेज़ की नहर** (Suez Canal) पर यह महाद्वीप अफ़्रीका के पास है। **दरे दानियाल** (Dardanelles) और **बासफ़ोरस के मुहाने** (Bosphorus) पर यूरप इससे बहुत पास रह जाता है। **बेरिंग** * **के मुहाने** (Bering) के मुहाने पर **अमेरिका** और **एशिया** के बीच में बहुतही कम दूरी रहजाती है।

एशिया के सामुद्रिक रास्ते और किनारे

४—एशिया का महाद्वीप **आस्ट्रेलिया** की तरह महासागरों से चारों ओर घिरा हुआ नहीं है। इसके उत्तर में उत्तरी समुद्र फैला हुआ है, दक्षिण और पूर्व में **हिन्दमहासागर** और **पासिफ़िक** महासागर हैं, जिनमें होकर और महाद्वीपों के साथ ब्यौपार के लिये रास्ते हैं।

एशिया से यूरप जाने के लिये दो रास्ते हैं:—

(१) जल का रास्ता जो लालसागर, रूमसागर और कालासागर होता हुआ जाता है।

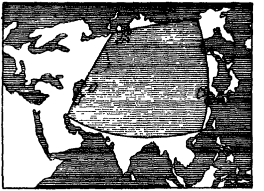
(२) थल का रास्ता जो साईबेरिया में होकर जाता है।

---

* कुछ भूगोलों में इसे बहिरंग भी लिखा है, परन्तु ठीक शब्द बेरिंग है।

एशिया के प्रायद्वीपों का असर उसके किनारे पर

५–इसके चौकोने धड़ से जैसा कि इस चित्र में प्रकट है,



दक्षिण में बड़े बड़े प्रायद्वीप अरब, हिन्दुस्तान, इन्दोचीन (Further India) हिन्द महासागर के भीतर दूर तक चले गये हैं।

इसी कारण अरब सागर, बंगाले की खाड़ी और स्याम की खाड़ी (Gulf of Siam) स्थल की ओर दूर तक फैली हुई हैं।

६–पूर्व में इस धड़ से कोरिया (Korea) और कमचटका (Kamchatka) पासिफ़िक महासागर के भीतर कुछ दूर तक चले गये हैं, जिनसे पीलेसागर और ओखोटस्क के समुद्र को स्थल के भीतर जाने का रास्ता मिल गया है।

७—उत्तर में सिर्फ़ एक बड़ा प्रायद्वीप तैमूर (Taimyr) है जिससे तैमूर की खाड़ी बनती है। परन्तु **ओबी** (Obi) **और यनीसी** (Yenisei) नदियों के दहानों से दो खाड़ियां और भी पैदा होती हैं, जो बर्फ़ से ढके रहने के कारण व्यौपार के काम में नहीं आतीं।

८—पश्चिम में **एशियाई कोचक** प्रायद्वीप है। जिस के दक्षिण में दो छोटी छोटी खाड़ियां हैं। **सीनाई** (Senai) प्रायद्वीप से लालसागर के उत्तरी सिरे पर दो खाड़ियां बन जाती हैं, इन चारों खाड़ियों के किनारों पर प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं।

९—अगर यह प्रायद्वीप न होते, तो एशिया का किनारा बिल्कुल सपाट होता। अब भी इसका किनारा इतना लम्बा नहीं है जितना कि क्षेत्रफल के विचार से उसे होना चाहिये। यूरप के किनारे से तो बहुत ही कम है। इसका कारण यह है कि खाड़ियां दूर दूर तक देशों के भीतर नहीं फैली हैं। इसी लिये भीतरी देशों का माल बड़े बड़े बन्दरगाहों तक सहज में नहीं आसकता।

एशिया के किनारे पर उसके द्वीपों का असर

१०—एशिया से सम्बन्ध रखने वाले बहुत से बड़े बड़े द्वीप हैं। सच तो यह है कि ऐसे द्वीपसमूह और महाद्वीपों में कम हैं। यह द्वीप पास्फ़िक महासागर को घेरकर कई हिस्सों

में बांट देते हैं, जिनसे एशिया का किनारा कुछ बड़ा होजाता है और बन्दरगाहों की संख्या भी अधिक होजाती है। पासिफ़िक महासागर के द्वीपों का सिलसिला ऐसा है, जैसा कि माला के दानों का।

एशिया के कुल द्वीपों का क्षेत्रफल पूरे महाद्वीप के क्षेत्रफल का छटा भाग है।

११—भिन्न भिन्न स्थानों पर होने के कारण इन द्वीपों के चार भाग किये जाते हैं।

(१) **उत्तरी महासागर के द्वीप—न्यू साईबेरिया** (New Siberia) **ल्याखौ** (Liakhov) आदि द्वीप उत्तरी महासागर के कुछ भाग को घेरकर अलग समुद्र बना लेते हैं।

(२) **पासिफ़िक महासागर के द्वीप—अल्यूशन** (Aleutian) के द्वीप बेरिंग समुद्र को बनाते हैं। **क्यूराइल** (Kurile) के द्वीप ओखोटस्क समुद्र को बहुत दूर तक घेरलेते हैं। **साखालीन** (Saghalien) के द्वीप से **तातार की खाड़ी** (Tartary) बनती है। **लूचू** (Luchu) **फ़ारमोसा** (Formosa) **फ़िलीपाइनद्वीप समूह** (Philippine Islands) और **बोर्नियो** (Borneo) से **चीनसमुद्र** (China Sea) बनता है। इसके अलग अलग भागों के नाम **पीलासागर** (Yellow Sea) आदि पड़

गये हैं। **हाईनान** (Hainan) के द्वीप से **टानकिन** की खाड़ी घिर जाती है। इन समुद्रों में कई प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं जिनका बयान आगे किया जायेगा।

(३) **हिन्दमहासागर** के द्वीपों में से **लंका** (Ceylon) से **मनार** (Manar) की खाड़ी बनती है।

(४) **रूमसागर** के द्वीपों में से **साईप्रस** (Cyprus) **रोड्स** (Rhodes) आदि से बड़ी बड़ी खाड़ियां नहीं बनतीं। परन्तु इन द्वीपों के किनारे कुछ मशहूर बन्दरगाह हैं, जिनका बयान एशियाई रूम के साथ किया जायेगा।

प्रश्न

१—हिन्दुस्तान जिस महाद्वीप में है उसका नाम एशिया क्यों रक्खा गया ?

२—एशिया का महाद्वीप किन किन बातों मे और महाद्वीपों से बड़ा है ?

३—एशिया का महाद्वीप किन किन कटिबन्धों में फैला हुआ है ? इसके जो भाग या देश उष्ण कटिबन्ध में हैं उनको नक़्शे में देखकर क्रमानुसार बताओ।

४—एशिया किन किन स्थानों पर यूरप, अफ़्रीक़ा और अमेरिका के पास है ?

५ नक़्शा देखकर बताओ कि मदरास की अपेक्षा रोमानियां अन्तरीप भूमध्यरेखा से कै अंश पास है ?

६–भूमध्यरेखा से **चिलस्कन** अन्तरीप की दूरी कितने अंश के लगभग है ?

७–एशिया की लम्बाई १०० अंश की देशान्तर रेखा पर बताओ।

८–एशिया की चौड़ाई ४० अंश की अक्षांश रेखा पर बताओ, जब कि इस वृत्त का एक अंश ४६ मील है।

९–**बाबा अन्तरीप** से **पूर्वी अन्तरीप** तक की दूरी नक़्शे के पैमाने से नापकर बताओ।

१०–इसी तरह भूमध्यरेखा से **रोमानियां** अन्तरीप की दूरी नापकर बताओ।

११–इसी तरह **चिलिस्किन** अन्तरीप और **रोमानियां** अन्तरीप की दूरी नापकर बताओ।

१२–नक़्शा देखकर बताओ कि **बाबा** अन्तरीप से **पूर्वी** अन्तरीप तक एशिया के किनारे पर यात्रा करने में कौन कौन से समुद्र, खाड़ियां और मुहाने मिलेंगे। किन किन जगहों पर पृथ्वी की नोकें समुद्रों में चली गई हैं ? इनकी सिलसिलेवार अलग अलग फ़िहरिस्त बनाओ।

१३–महाद्वीपों के नक़्शे में एशिया का क्षेत्रफल दिया हुआ है, इस क्षेत्रफल में हिन्दुस्तान का क्षेत्रफल कै बार शामिल है ?

१४–एशिया के धड़ से जो हिस्से समुद्र में दूर तक चले गये हैं, उनके नाम बताओ।

१५—एशिया और दूसरे महाद्वीपों में किन किन रास्तों से लोग आते जाते हैं ?

१६—एशिया का कौनसा समुद्र व्यौपार के लिये उपयोगी नहीं है और क्यों ?

१७—यूरप की अपेक्षा एशिया का किनारा क्यों कम है ?

१८—एशिया के किनारों के छोटे होने से उसके भीतरी देशों के व्यौपार पर क्या असर पड़ता है ?

१९—एशिया के द्वीपसमूह का उसके किनारे पर क्या असर पड़ा है ?

२०—नक़्शा देखकर बताओ कि **बाबुलमन्दब** के मुहाने से **लंका** होते हुये **बेरिंग** के मुहाने तक जहाज़ पर जाने में कौन कौन से बड़े द्वीप और द्वीपसमूह मिलेंगे ?

२१-पूर्व की ओर एशिया के दो सामुद्रिक किनारे हैं, इसका क्या मतलब है ?

२२-एशियाई रूम के दक्षिण में जो दो खाड़ियाँ हैं, उन के नाम नक़्शा देखकर बताओ।

२३—सीनाई प्रायद्वीप से कौन कौनसी खाड़ियाँ बनती हैं ? नक़्शा देखकर उनके नाम बताओ।

२४—ब्रिटिश द्वीप की तरह एशिया में कौनसे द्वीप हैं ? उनके मौक़े में क्या फ़र्क़ है ?

२५—एशिया और यूरप के पहाड़ों और नदियों का मुक़ाबिला करो।

एशिया की बनावट

१२—एशिया ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और ऊंचे ऊंचे मैदानों का घर है। इसी कारण इसके धरातल की औसत उँचाई और महाद्वीपों से अधिक है।

इसके धरातल की ५ सूरतें हैं :—

(१) **उत्तरी नीचा मैदान**—जो कास्पियन सागर (Caspian Sea) की दक्षिणी और पूर्वी नोक से कोलीमा नदी (Kolima) तक फैला हुआ है। (देखो पहला नक़शा)

(२) **मध्य प्लेटोओं की बड़ी श्रेणी**— जो काले सागर के दक्षिण और पूर्व की ओर से **ओख्वोटस्क समुद्र** के किनारे तक फैली हुई है।

(३) **अरब का प्लेटो।**

(४) **दक्षिणी प्लेटो यानी दक्षिणी हिन्दुस्तान**

(५) **भिन्न भिन्न देशों के नीचे मैदान।**

अ—फ़ुरात (Euphrates) **और दजला** (Tigris) का दोआबा और उसके आसपास का रेगिस्तान।

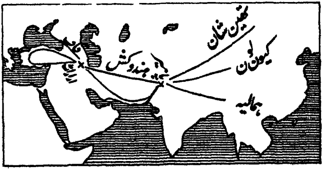
ब—हिन्दुस्तान का मैदान।

ज—इन्दोचीन के मैदान।

द—चीन के मैदान।

साईबेरिया के मैदान का सिलसिला यूरप तक चला गया


एशिया के प्लेटो और मैदान
میدان - حدب - دریا


تھین شان
کیون لون
ہمالیہ
ہندوکش

है, सिर्फ़ यूराल का पहाड़ बीच में है। इस मैदान में कहीं कहीं छोटी छोटी पहाड़ियां भी पाई जाती हैं।

मध्य प्लेटो के दो भाग हैं:—

(१) पश्चिमी प्लेटो।

१३—इस **प्लेटो** में **एशियाईरूम** के कुछ भाग, **फ़ारिस, अफ़ग़ानिस्तान और बिलोचिस्तान** शामिल हैं। एशियाई रूम के सिवाय बाक़ी तीनों देशों को ईरान का प्लेटो कहते हैं। यह प्लेटो किनारे पर ऊंचे ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ है। वास्तव में यह पहाड़ एकही सिलसिले में हैं, लेकिन उनके नाम भिन्न भिन्न देशों में अलग अलग पड़ गये हैं, जैसा कि पहले नक़्शे से प्रकट है। इस नक़्शे* में हाला और सुलेमान पहाड़ों के नाम नहीं लिखे गये हैं। यह फ़ारिस के दक्षिणी भाग में फैले हुये हैं।

दूसरे नक़्शे ※ में काकेशस पहाड़ के नीचे जहां ऐसा +

---

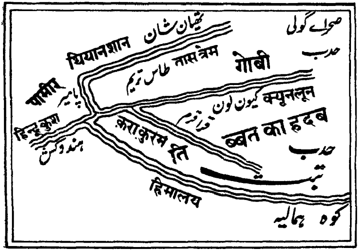
* इस नक़्शे में कमचटका के ज्वालामुखी पहाड़ भी नहीं दिखाये गये हैं, इस लिये इसको मैदान नहीं समझना चाहिये।

※ यह नक़्शा लाइड साहब के नक़्शे के नमूने पर है।

निशान बनाहुआ है, इन पहाड़ों के बीच की दूरी बहुत कम होगई है। इस स्थान से पहाड़ों की श्रेणियां फैलकर ईरान के प्लेटो को घेरती हुई फिर **पामीर** (Pamir) पर मिल जाती हैं। इसको **बामे दुनिया** भी कहते हैं। यह नाम बहुत ऊँचाई के कारण पड़ गया है, क्योंकि बाम छत को कहते हैं। यह छोटा प्लेटो तिब्बत के प्लेटो का कोना है। इस स्थान पर भी वैसाही निशान बना दिया गया है।

(२) पूर्वी प्लेटो।

१४—पामीर से पहाड़ों की श्रेणियां हाथ की अंगुलियों



की तरह फैली हुई हैं और पूर्वी सेटो को घेरती हुई ओखोटस्क सागर के पश्चिमी किनारे पर जाकर मिलगई हैं।

इस पूर्वी सेटो के तीन भाग भिन्न भिन्न उँचाई के हैं।

(१) तिब्बत का सेटो सब से ऊंचा है।

(२) चीनी तुर्किस्तान मंगोलिया का पूर्वी भाग और गोबी का रेगिस्तान।

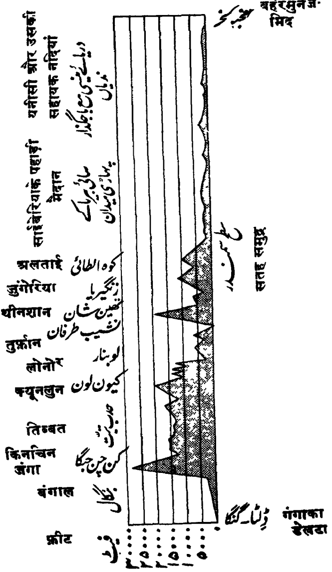
(३) **मंगोलिया** का पश्चिमोत्तर भाग, बैकाल के आस पास की भूमि।

१५—(१) तिब्बत के सेटो के दक्षिणी किनारे से कुछ पहाड़ **ब्रह्मा** की ओर चले गये हैं और कुछ खास **चीन** की ओर।

काकेशस पहाड़ की श्रेणी यूरप तक चली गई है। इससे प्रकट है कि एशिया और यूरप की मुख्य पर्वतश्रेणी रीढ़ की हड्डी की तरह पूर्व से पश्चिम को फैली हुई है।

(२) मध्य सेटो के भीतर किसी किसी स्थानपर पहाड़ हैं और गहरी गहरी घाटियां भी।

१६—अगर हवाई जहाज पर बैठकर गंगा के डेल्टा से उत्तरी महासागर तक के धरातल को आकाश से ९० अंश के देशान्तर पर देखें, तो वह इस तरह दिखाई देगा जैसा इस चित्र में।


बहेरमुनज़-
मिद
यनीसी और उसकी
सहायक नदियां
साइबेरियाके पहाड़ी
मैदान
अलताई
जुंगेरिया
थीनशान
तुर्फ़ान
लोनोर
क्यूनलुन
तिब्बत
किनचिन
जंगा
बंगाल
फ़ीट
गंगाका
डेलटा
सतह समुद्र
کوہ الطائی
زنگیریا
تھین شان
نشیب طرفان
لوبنار
کیون لون
بنگال

रेगिस्तान

१७—एशिया में रेगिस्तान का सिलसिला दक्षिण पश्चिम के कोने से उत्तर और पूर्व के कोने तक चला गया है। यह दुनिया के बड़े * रेगिस्तान सहारा का सिलसिला है और **अरब, फ़ारिस, अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान** और **तिब्बत** के प्लेटो में होता हुआ **गोबी** के रेगिस्तान तक पहुंच गया है। कहीं कहीं यह सिलसिला टूट भी गया है। इस रेगिस्तान में जिस जगह नदियों की घाटियां हैं या जहां पानी रस रस कर धरातल तक आ जाता है वहां घास पैदा होती है या खेती होती है। अरब और मंगोलिया ख़ासकर मरुभूमि हैं। ईरान का प्लेटो भी आधा रेगिस्तान है।

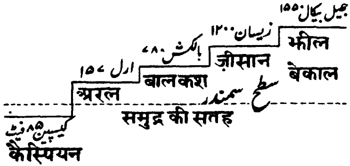
१८—दक्षिणी प्लेटो के सिवाय और सब प्लेटो बहुत ख़ुश्क हैं और उनमें तेज़ आंधियां पश्चिम या दक्षिण पश्चिम से आती हैं, जिनके साथ बालू भी आता है। मंगोलिया, चीनी और रूसी तुर्किस्तान में बहुतसे स्थान ऐसे पाये जाते हैं जहां किसी समय में खेती होती थी और आदमी रहते थे, परन्तु अब वह बालू से ढक गये हैं। जिस जगह पानी की कमी होती है लोग उसको छोड़कर दूसरी जगह चले जाते हैं।

---

* यह रेगिस्तान अफ्रीका में अटलांटिक महासागर से लालसागर तक फैला हुआ है।

झीलें

१९–झीलों के विचार से उत्तरी अमेरिका सब से बढ़-कर है, क्योंकि वहां मीठे पानी की बहुत सी सुन्दर झीलें हैं। दूसरे नम्बर पर **अफ़्रीक़ा** है। एशिया में कास्पियन और अरल (Aral) दो झीलें ऐसी बड़ी हैं कि जिनकी गिन्ती समुद्रों में है। किसी समय में यह दोनों सागर मिले हुये थे, क्योंकि इनके बीच की धरती रेतीली और रेह मिली हुई है और उसके नीचे ऐसे सामुद्रिक जानवरों के ख़ोल पाये जाते हैं जो अब भी कास्पियन समुद्र में मौजूद हैं। इन बातों से कुछ लोगों की यह राय है कि किसी समय में रूमसागर उत्तरी महासागर तक फैला हुआ होगा।



२०–एशिया की बड़ी बड़ी झीलें इसके मध्य स्रोटो में हैं, मगर बैकाल (Baikal) के सिवाय और सब प्रायः खारी हैं।

बालकश (Balkash) ज़ेसान (Zaisan) और बैकाल आदि झीलों का धरातल कास्पियन समुद्र के धरातल से सिड्ढियों की तरह ऊंचा होता जाता है। इससे प्रकट है कि इन झीलों के पास की धरती का ढाल उत्तर और पूर्व के कोने से दक्षिण पश्चिम को है।

नदियां

२१--एशिया के मध्य मे बहुत से पहाड़ और स्टेटो होने से उसकी नदियों का ढाल तीनों समुद्रो की ओर है। चूंकि इन स्टेटोओं में बहुतसे पहाड़ सदा बर्फ से ढके रहते हैं, इस लिये इस महाद्वीप की बड़ी बड़ी नदियों का निकास उन्हींके पहाड़ों से है (स्टेटो, मैदान आदि का नक़्शा देखो)। चूंकि यह पहाड़ समुद्र से बहुत दूर है, इस लिये जो नदियां उनसे निकलती हैं वह बहुत लम्बी लम्बी हैं।

ओबी,(Obi) यनीसी (Yenisei) और लीना (Lena) अल्ताई पहाड़ से निकलकर साईबेरिया के मैदान को सींचती हुई उत्तरी महासागर में गिरती हैं। यह नदियां व्यौपार के लिये बहुत उपयोगी नहीं हैं, क्योंकि वह ६ महीने तक बर्फ से ढकी रहती हैं। गर्मियों में इन तीनों नदियों के दक्षिणी भाग से माल आता जाता है। चूंकि इन नदियों में बड़ी बड़ी सहायक नदियां पश्चिम या पूर्व की ओर से आकर मिल जाती हैं, इस लिये साईबेरिया के अधिक भाग में

प्राय: पूर्व और पश्चिम की ओर से आना जाना रहता है।

एशिया की अक्सर नदियों में प्राय: इन्हीं दिशाओं में दूर दूर तक आना जाना रहता है।

व्यौपारिक नदियां बहुधा वह होती हैं जो **ठंडे भाग** से **गर्म भाग** की ओर बहती हैं, जैसे गंगा आदि।

२२—**हांगहो** (Hoang-ho) और * **यांग्सीक्यांग** (Yangtsekiang) तिब्बत के पहाड़ों से निकल कर चीन को सींचती हुई पासिफ़िक महासागर में गिरती हैं। इन दोनों नदियों से खेती को बहुत लाभ पहुंचता है और इनके द्वारा व्यौपार भी कुछ दूर तक होसकता है।

यांग्सीक्यांग में मामूली अग्निबोट माल से भरे हुये आते जाते हैं।

इसी तरह **अमूर** (Amur) में भी नावें दूर तक जाती हैं।

गंगा (Ganges) **ब्रह्मपुत्र** (Brahmaputra) और **सिन्ध** (Indus) भी हिमालय और तिब्बत के पहाड़ों से निकलती हैं।

गंगा की घाटी बहुत उपजाऊ है। **गंगा** और **सिन्ध** में भी कुछ दूर तक अग्निबोट आते जाते हैं।

२३—**इन्दोचीन** की नदियों के बीच में भी उपजाऊ मैदान हैं।

---

* चीनी भाषा में "हो" और "क्यांग" का अर्थ नदी है।

फ़ुरात और दजला का निकास आरमन के पहाड़ों से है।

किसी समय में इनका दोआबा बहुत उपजाऊ था और नहरों के द्वारा खेती होती थी, परन्तु अब यह नहरें रेत से भर गई हैं और इसी कारण खेती कम होती है। एशिया की नदियों में एक खास बात यह है कि क़रीब क़रीब एकही जगह से नदियों के जोड़े साथ साथ निकलते हैं और अलग अलग रास्तों से बहकर एकही जगह गिरते हैं, जैसे—

(१) गंगा और ब्रह्मपुत्र

(२) ह्वांगहो और यांग्सीकियांग

(३) फ़ुरात और दजला

(४) सैहूं (Syr) और जैहूं (Amu)—यूरप की नदियां इतनी लम्बी नहीं हैं जितनी एशिया की। परन्तु वह अधिक उपयोगी और लाभकारी हैं, क्योंकि एक तो वह गिनती में बहुत हैं दूसरे उनमें जहाज़ और अग्निबोट दूरतक जा सकते हैं।

स्थलीबेसिन

२४—यूरप को छोड़कर हर महाद्वीप में पृथ्वी के कुछ खंड ऐसे हैं जिनका बरसाती पानी नदियों के द्वारा किसी समुद्र में नहीं पहुंचता, बल्कि झीलों में चला जाता है। ऐसी धरती को स्थलीबेसिन कहते हैं।

चीनी तुर्किस्तान की • **नरीम नदी** (Tari)की घाटी का पानी एक झील में गिरता है और समुद्र में नहीं पहुंचता।

रूसी तुर्किस्तान का पानी **सैहून** और **जैहून** के द्वारा **अरल झील** मे जाता है।

एशिया के स्थलीबेसिन का क्षेत्रफल यूरप के क्षेत्रफल से भी अधिक है और अफ़्रीका के क्षेत्रफल का आधा है। और महाद्वीपों में कोई स्थलीबेसिन इतना बड़ा नहीं है।

प्रश्न

१—तुम्हारी किताब में जे. प्लेटो और मैदानों का नक़्शा बना है उसका अक्स उतारो।

२—एशिया में सब से ऊंचा धरातल कहां है और सब से नीचा कहां?

३—एशिया के धरातल की ख़ास सूरतें क्या क्या हैं? ६ हजार फ़ीट से ऊंची भूमि को नक़्शा खींचकर प्रकट करो।

४—साईबेरिया के मैदान का सिलसिला किस स्थान पर थोड़ी दूर तक टूट जाता है?

५—एशिया के प्लेटोओं का सिलसिला किन किन स्थानों पर तंग होगया है? हिन्दुस्तान के उस भाग को नक़्शा खींचकर दिखाओ जिसका धरातल एक हजार फ़ीट से अधिक ऊंचा है।

• तारिम भी कहते हैं।

६—बामे दुनिया से क्या मतलब है ? यह किन किन प्लेटोओं को अलग करता है ?

७—परिचमी और पूर्वी प्लेटोओं में कौन से देश शामिल हैं ? एशिया के दक्षिण में कौन कौन से प्लेटो हैं ?

८—एशिया के उत्तरी मैदान का ढाल किस तरफ़ को है और यह कैसे मालूम होता है ?

९—स्थली और समुद्री बेसिन में क्या अन्तर है ? एशिया के स्थली बेसिन की दो नदियों के नाम लिखो ।

१०—अगर कोई आदमी हवाई जहाज में बैठकर साईप्रस द्वीप से मध्य प्लेटो को पार करता हुआ बेरिंग के मुहाने तक पहुंच जाये, तो उसे कौन कौनसे ऊंचे ऊंचे पहाड़ दिखाईदेंगे ? (उत्तर देने के लिये नक़्शा देख सकते हो)

११—यद्यपि एशिया सब महाद्वीपों से बड़ा है, परन्तु उसकी नदियां दाक्षिणी अमेरिका की बड़ी बड़ी नदियों से छोटी हैं; इसका क्या कारण है ?

१२—क्या कारण है कि एशिया की नदियां यूरप की नदियों से अधिक लम्बी होने पर भी व्यौपार के लिये ऐसी उपयोगी नहीं हैं जैसी यूरप की नदियां ?

१३—एशिया के वाटरशेड और उसके रेगिस्तानी सिलसिले को बयान करो ।

१४—एशिया के प्लेटो प्रायः क्यों रेगिस्तानी हैं ?

१५—तिब्बत के प्लेटो से कौनसी बड़ी बड़ी नदियां निकलती हैं ?

१६—किस तरह सिद्ध हुआ है कि किसी समय में अरल सागर और कास्पियन सागर मिले हुये थे ?

१७—इसका क्या कारण है कि एशिया की बड़ी बड़ी झीलें प्रायः खारी हैं ? मीठे पानी की कौनसी बड़ी झील है ?

१८—एशिया के उत्तर में कौन कौनसी नदियां हैं और उनसे व्यौपार पर क्या असर पड़ता है ?

१९—किस तरह की और किस दिशा में बहनेवाली नदियां व्यौपारिक होती हैं ?

२०—एशिया के दक्षिण में कौन कौनसे नीचे मैदान हैं ! ईरान के प्लेटो से क्या मतलब है ?

२१—एशिया के पश्चिमी प्लेटो की मशहूर नदियां कौनसी हैं और खेती में कितनी सहायता देती हैं ?

२२—अगर उमान की खाड़ी से जहाजपर ओखोटस्क सागर तक इस तरह यात्रा करें कि कोई समुद्र, खाड़ी आदि न छूटे, तो किन किन नदियों के दहाने मिलेंगे ! (अगर जरूरत हो तो नक्शा देखकर जवाब दो)

२३—नक्शा देखकर उन झीलों को बताओ जिनसे नदियां निकल कर महासागर में गिरती हैं ।

२४—बैकाल का पानी किस समुद्र में जाकर गिरता है !

२५—चीनी तुर्किस्तान किस प्रकार का बेसिन है ? अपने जवाब की दलील भी दो ।

एशिया की आब हवा

२५—किसी मुल्क की आब हवा में वहां की गर्मी, सर्दी, वर्षा का परिमाण, हवा की खुश्की और तरी, जमीन की खुश्की और सीलन सब शामिल हैं ।

२६—(अ) हवा जिस स्थान से आती है वहां का असर अपने साथ लाती है, जैसे समुद्र की हवा मरतूब * रेगिस्तान की खुश्क + और गर्म, और बर्फिस्तान की बहुत सर्द होगी ।

(ब) गर्म और मरतूब हवा से वर्षा होती है, सर्द और खुश्क हवा से नहीं होती ।

(ज) हवा हमेशा सर्द जगह से गर्म जगह की ओर चला करती है ।

२७—चूंकि एशिया का महाद्वीप भूमध्यरेखा से उत्तरी ध्रुव के पासतक फैलाहुआ है और उसकी उँचाई ६ मीलतक पाई जाती है, इसलिये दुनिया में जितनी तरह की आबहवा हो सकती हैं सब एशिया में मौजूद हैं ।

इसको कठिन सर्दी, कठिन गर्मी, वर्षा और खुश्की की अधिकता सब कुछ झेलनी पड़ती है ।

---

* मरतूब हवा ऐसी हवा को कहते हैं जिसमें भाप मिली हुई हो ।

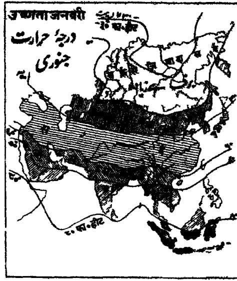
+ खुश्क हवा उस हवा को कहते हैं जिसमें भाप बहुतही कम हो ।

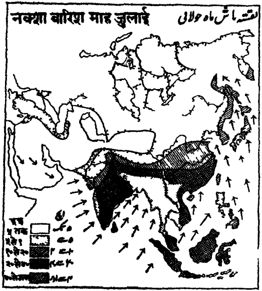


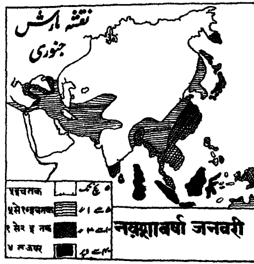
درجۂ حرارت جولائی




उष्णता जुलाई
درجۂ حرارت جولائی


उष्णता जनवरी
درجۂ حرارت
جنوری


नक्शा बारिश माह जुलाई
نقشہ بارش ماہ جولائی


نقشہ بارش
جنوری
नक्शा वर्षा जनवरी

(द) दक्षिण से उत्तर की ओर जाने मे वर्षा भी कम होती जाती है ।

आबहवा के विचार से एशिया के चार भाग हैं।

(उष्णता और वर्षा के नक़्शों को देखो)

(१) दक्षिणी और दक्षिणी पूर्वी देशो (हिन्दुस्तान, इन्दो-चीन, पूर्वीचीन, जापान और पूर्वी द्वीपसमूह) पर समुद्र की गर्म और मरतूब हवा (मानसून) का असर खूब पड़ता है। इसी कारण उनमे वर्षा अधिक होती है और गर्मी भी अधिक रहती है। जाडे मे यह देश उतने सर्द नही रहते जितने कि और देश।

इन देशो को एशिया का अधिक बरसाती भाग कहते है।

(२) पूर्वी स्टेपो यानी **चीनी तुर्किस्तान,** तिब्बत मगोलिया आदि की आबहवा बहुत खुश्क रहती है, यहा तक कि **तिब्बत** मे लकड़ी शीशे की तरह टूटजाती है। वर्षा भी इस भाग मे बहुत कम होती है। इस का सबब यह है कि कुल स्टेपो ऊचे ऊचे पहाड़ो से घिराहुआ है और उसके भीतर समुद्र का असर नहीं पहुँचता। समुद्र की गर्म और आर्द्रवायु से उसके किनारे ही पर मेंह बरस जाता है, स्टेपो के भीतर नहीं पहुँचता।

(३) **अरब** और **ईरान** के स्टेपो की आबहवा बहुत ही खुश्क रहती है, क्योंकि इनमें रेगिस्तान अधिक

हैं । गर्मियों में एशिया का सब से अधिक गर्म भाग यही है, क्योंकि इस भाग में अफ्रीका के बड़े रेगिस्तान से जो गर्म हवा आती है उसके असर को लालसागर, फ़ारिस की खाड़ी आदि जो बीच में पड़ती है कम नहीं कर सकतीं। इस भाग के अधिक गर्म रहने से गर्मियों में दक्षिण पश्चिम और दक्षिण पूर्व से हवा चलती है।

यहां सर्दी इतनी अधिक नहीं पड़ती जितनी तिब्बत में। एशियाई रूम के पश्चिमी किनारे पर जाड़ों में वर्षा होती है।

(४) **उत्तरी मैदान**—जाड़े के दिनों में **साईबेरिया** के किसी किसी भाग में बर्फ़ से भी अधिक सर्दी रहती है और कहीं कहीं बर्फ़ की सी ठिर रहती है।

इस कारण इस ऋतु में यहां से एशिया के दक्षिणी गर्म भाग की ओर सर्द हवा चलती है। (नक़्शों को देखो)

गर्मियों में भी यह भाग एशिया के और भागों की अपेक्षा कम गर्म रहता है।

प्रश्न

(उष्णता और वर्षा के नक़्शों को देखकर उत्तर देने की आज्ञा है)

१—किसी मुल्क की आबहवा से क्या मतलब है ? ख़ुश्क और मरतूब हवा में क्या अन्तर है ?

२—हवा के चलने से ज़मीन पर क्या असर पड़ता है ?

३—किस क़िस्म की हवा से वर्षा होती है और किस क़िस्म की हवा से नहीं ?

४—उष्णता की रेखाओं से क्या प्रकट होता है ?

५—तुम्हारी किताब में उष्णता के जो नक़्शे दिये गये हैं उनको देखकर बताओ कि—

अ—जाड़े में एशिया का कौनसा भाग बहुतही सर्द रहता है और कौनसा भाग गर्म ।

ब—जाड़े में जब एशिया का दक्षिणी भाग गर्म रहता है तो किस ओर से हवा चलती है और क्यों ?

ज—गर्मी के दिनों में एशिया का कौनसा भाग बहुत ही गर्म रहता है ?

द—इस गर्म भाग का हिन्दुस्तान और इन्दोचीन पर क्या असर पड़ता है ?

ह—जनवरी और जौलाई में हवा के चलने की दिशायें बताओ ।

६—जौलाई के महीने में सब से अधिक और सब से कम उष्णता के अंशों का अन्तर बताओ । इसी तरह जनवरी के महीने का भी ।

७—एशिया की भिन्न भिन्न दिशाओं में जाने से आब हवा में क्या अंतर पड़ता है ?

८—एशिया का उत्तरी भाग अधिक सर्द क्यों रहता है ?

९—मध्य स्टेटो मे वर्षा क्यों कम होती है ?

१०—अरब तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है, फिर भी उसमें वर्षा कम होती है। इसका क्या कारण है ?

११—बताओ कि आबहवा के विचार से एशिया के कितने भाग ह।

१२—गर्मियों में लंका लाहौर से क्यों अधिक सर्द रहती है ?

१३—जाड़े में एशिया के किस भाग में अधिक वर्षा होती है और क्यों ?

१४—जाड़े में हिन्दुस्तान के किस भाग मे वर्षा होती है ? इसका सबब बताओ।

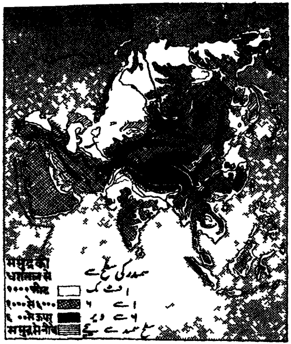
१५—ब्रह्मा और अरब में जौलाई की वर्षा का मुक़ाबिला करो ?

१६—गर्मियों मे जापान के किस भाग में अधिक वर्षा होती है और क्यों ?

१७—एशियाईरूम और ईरान के स्टेटोओं में बहुधा जाड़े में क्यों वर्षा होती है ?

१८—जाड़े में साईबेरिया के उत्तरी और पूर्वी भाग में वर्षा क्यों नहीं होती ?

१९—जापान के उत्तरी और पश्चिमी भाग में दक्षिणी



ایشیا کی قدرتی نباتات
एशिया की स्वभाविक वनस्पति का नक्शा



और पूर्वी भाग की अपेक्षा जाड़े में क्यों अधिक वर्षा होती है?

२०—गर्मी के दिनों में दक्षिणी हिन्द का पश्चिमी भाग पूर्वी भाग से क्यों अधिक ठंडा रहता है?

एशिया की वनस्पति

३०—हरदेश की पैदावार वैसी ही होती है जैसी वहां की धरती और आबहवा। चूंकि एशिया में तरह तरह की ज़मीन और आबहवा पाई जाती है, इसलिये यहां भिन्न भिन्न भागों में तरह तरह की वनस्पति पैदा होती हैं।

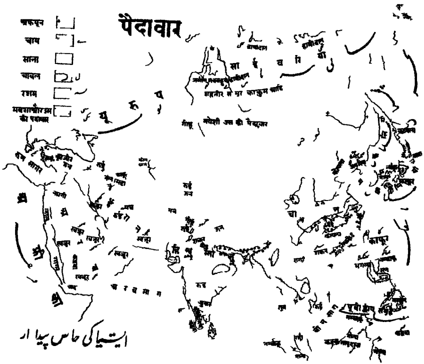
३१—पैदावार के विचार से एशिया के मुख्य भाग तीन हैं।

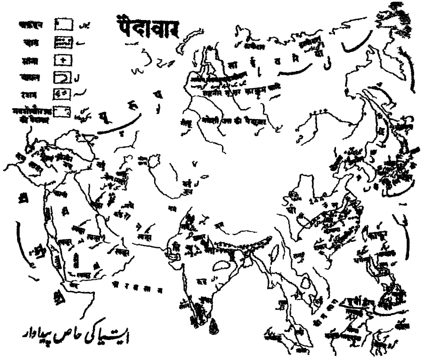
(देखो नक़्शा)

(१) **दक्षिणी पूर्वी भाग** (जहां मेह अधिक बरसता है) चूंकि इस भाग में गर्मी बहुत पड़ती है और मेह अधिक बरसता है, इसलिये इसी भाग में अनाज बहुत पैदा होता है। बड़े बड़े पेड़ और पेड़ों के जंगल भी पाये जाते हैं।

(२) **अरब और मध्य प्रांटों** के देशों में मेह कम बरसता है, इस कारण वहां अन्न भी कम पैदा होता है। जहां मेह बहुत ही कम होता है, वहां घास के सिवाय कुछ नहीं पैदा होता।

(३) **उत्तरी मैदान** के मध्य भाग में ऐसे बन हैं


पैदावार
चाय
सोना
चावल
रेशम
मवेशी और उन की पैदावार
कपूर
ایشیا کی خاص پیداوار



ایشیا کی خاص پیداوار

में भी होती है। यह नाज बाहर और देशों को नहीं भेजे जाते, क्योंकि यह गरीबों के खर्च में आजाते हैं।

३४–गेहूं के लिये थोड़ी नमी, भुरभुरी जमीन और थोड़ी गर्मी होनी चाहिये, इसलिये इसकी खेती धान की अपेक्षा अधिक देशों में होती है।

अरब, हिन्दुस्तान का पूर्वी द्वीपसमूह और पूर्वी सेटो के बहुत सर्द भागों में गेहूं नहीं पैदा होता, क्योंकि पहले दो देशों में गर्मी अधिक पड़ती है और पिछले मे अधिक सर्दी, जिन को यह सह नहीं सकता। गेहूं की फ़स्ल भी हर मुल्क में एक ही समय पर नहीं होती। बनारस की कमिश्नरी में गेहूं मार्च के दूसरे हफ़्ते में पकजाता है।

मेरठ और पंजाब की कमिश्नरियों में इसकी फ़स्ल अप्रेल में कटती है। ब्रह्मा में इसकी फ़स्ल दिसम्बर में तय्यार हो जाती है। एशिया के और देशों की अपेक्षा गेहूं हिन्दुस्तान में अधिक पैदा होता है और इसी देश से यूरप को जाता है।

३५–**जौ** गेहूं की अपेक्षा अधिक सर्दी सह सकता है और थोड़ी ही गर्मी में पक जाता है, इसलिये इसकी खेती तिब्बत की सर्द घाटियों में भी होती है, जहां गर्मी थोड़े दिनों तक पड़ती है और कोई अनाज अधिक सर्दी के कारण पैदा नहीं हो सकता। यही कारण है कि **साइबेरिया** के थोड़े भाग में भी जौ और जई की खेती होती है।

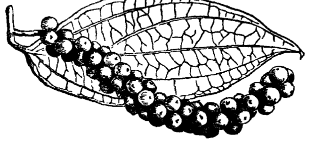
३६—गन्ना—गन्ने को गर्मी और पानी दोनों की ज़ियादा ज़रूरत होती है, परन्तु पानी की इतनी ज़रूरत नहीं होती जितनी धानों को । गन्ने के खेत में पानी ठहरने से इसकी पैदावार अच्छी नहीं होती, इसलिये इसकी खेती हिन्दुस्तान, चीन, हिन्दुस्तान के पूर्वीद्वीपसमूह आदि के गर्मभागों में होती है। फ़ान्स और जर्मनी की तरह एशिया के किसी देश में चुक़न्दर से खांड नहीं बनाईजाती, बल्कि गन्ने के रस से बनाईजाती है। हिन्दुस्तान के पूर्वीद्वीपसमूह में शक्कर यूरप का खासकर जाती है ।



चुक़न्दर چقندر

३७–**मसाले**–चूंकि गर्म मसाले के पेड़ों को गर्म और तर हवा और अधिक मेंह की ज़रूरत होती है, इसलिये लंका, पूर्वी द्वीपसमूह और इन्दोचीन का दक्षिणी भाग इन चीज़ों के घर है।

नारियल और साग़ूदाने के पेड़ भी यहां बहुत पैदा होते हैं।



स्याह मिर्च का गुच्छा

पीने की चीज़ें

३८–**क़हवा और चाय** ऐसी ज़मीन में होती हैं, जहां धूप ख़ूब तेज़ पड़े और पानी बहुधा बरसे, परन्तु बिल्कुल न ठहरे। इसी लिये इनकी खेती **हिन्दुस्तान, लंका, चीन, जापान** और **पूर्वी द्वीपसमूह** के पहाड़ों के ढाल पर होती है और कहीं कहीं उनकी तलहटी में भी, जैसे देहरादून और सिलहट में।





क़हवे की डाली



क़हवा

क़हवा अरब में भी लाल सागर के पास एक पहाड़ पर पैदा होता है, जहां वर्षा होती है।

३९–तम्बाकू गर्म और मरतूब हवा में ऐसी धरती में जहां रेह अधिक हो, बहुतायत से होता है। चूंकि यह भिन्न भिन्न आबहवा को सह सकता है, इस लिये इसकी खेती एशिया के अधिक भागों में होती है। अच्छा तम्बाकू पूर्वी द्वीपसमूह में पैदा होता है।

४०–अफ़ीम नर्म और उपजाऊ धरती में होती है, जहां थोड़ी नमी और गर्मी रहती है। इसीलिये यह नशा पैदा करने वाली चीज़ **हिन्दुस्तान, चीन, एशियाई रूम, रूसी तुर्किस्तान** और **फ़ारिस** में पैदा होती है। हिन्दुस्तान से अफ़ीम दूसरे देशों को अधिक जाती है।

तरकारियां

४१—**आलू** की खेती अमेरिका से एशिया में फैली। आलू समुद्र के किनारे पर मैदानों और पहाड़ों में पैदा होता है, परन्तु अधिक सर्दी और गर्मी नहीं सह सकता।

फल

४२—ऐसे फल जो बहुत गर्म और मरतूब हवा चाहते हैं, जैसे केला, अनन्नास आदि, वह पूर्वी द्वीपसमूह में अधिकता से पैदा होते हैं। यह फल समुद्र से दूर के देशों में भी पैदा होते हैं, जहां की आबहवा गर्म और मरतूब होती है, परन्तु बहुतायत से नहीं।

कड़े छिलकेवाले फल जैसे अखरोट, बादाम, पिस्ता आदि खुश्क मुल्कों (**एशियाई रूम, फ़ारिस आदि**) की पैदावार हैं, क्योंकि इनके छिलके नमी को सूखने से रोकते हैं। खजूर का पेड़ इन पेड़ों से भी **अधिक खुश्क** आबहवा सह सकता है, इसलिये वह अरब के रेगिस्तानों में अधिकता से पाया जाता है। सेब, नाशपाती, अंगूर आदि भी ईरान के खेटो में अधिक पैदा होते हैं।

कपड़े के पौधे

४३—कपास के लिये नर्म और खारी या चूना मिली हुई धरती चाहिये, जहां सर्दी अधिक न पड़नी हो। इसको पाले

से बहुत नुक़सान होता है। कपास को पानी और गर्मी भी औसत दर्जे की चाहिये। अधिक गर्मी से इसके रेशे लम्बे नहीं होते। ऐसी जगहों में भी कपास अच्छी पैदा नहीं होती जहां बादल बराबर बने रहते है, क्योंकि यह कई महीनों की धूप में पकती है।

हिन्दुस्तान और **चीन** के ऊंचे भागों में खासकर इसकी खेती होती है। **एशियाई रूम, फ़ारिस** और **रूसी तुर्किस्तान** मे भी कपास पैदा होती है, यानी कपास की खेती भूमध्य रेखा के ३७° उत्तर और ३५° दक्षिण तक होसकती है। रुई अधिकतर **हिन्दुस्तान** से **इंगलैंड** को जाती है। अच्छी रुई उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्यों (यूनाइटेड स्टेट्स) के द्वीपो में पैदा होती है, जहां गर्मी अधिक नहीं पड़ती और ज़मीन खारी है।

प्रश्न

१—एशिया के भिन्न भिन्न भागों में तरह तरह की पैदावार क्यों होती है?

२—एशिया के किस भाग में वनस्पति अधिक पैदा होती है और क्यों?

नोट—गेहूं की तरह और फ़स्ल भी हर देश में एक ही समय पर तैयार नहीं होतीं। इसका यह कारण है कि हर एक फ़स्ल जितनी गर्मी में तैयार हो सकती है, उतनी गर्मी उसको हर जगह एक ही वक्त में नहीं मिल सकती।

३–एशिया के उत्तरी भाग में उत्तरी समुद्र से कुछ दूर पेड़ छोटे क्यों होते हैं ?

४–एशिया के किस भाग में अन्न कम पैदा होता है और क्यों ?

५–धान किस प्रकार की आबहवा में पैदा होता है ? तिब्बत के लोग इसकी खेती क्यों नहीं करते ?

६–पंजाब और ईरान के स्टेटो में कम वर्षा होने पर भी मक्का क्यों पैदा होती है ?

एशिया से मक्का, ज्वार, बाजरा और महाद्वीपों को क्यों नहीं जाता ?

७–एशिया के अधिक सर्द भागों में भी जौ पैदा होता है, इसका क्या कारण है ?

८–चाय और क़हवा की खेती किस तरह की आब हवा में और कहां कहां होती है ?

९–मसाले के पेड़ संयुक्तप्रदेश में क्यों नहीं होते ?

१०–कपास किस क़िस्म की आबहवा में और कहां कहां पैदा होती है ?

११–क्या सबब है कि बनारस की कमिश्नरी में गेहूँ मार्च में कटने लगते हैं, परन्तु अलमोड़ा और गढ़वाल में अप्रैल और मई में ?

१२–मैंने **बद्रीनाथ** के पास अक्टूबर में जौ कटते देखे, इसका सबब बयान करो।

१३–साईबेरिया में गेहूँ की फ़स्ल किस महीने में तैयार होती है ?

१४–नैनीताल और अलमोड़ा के बाज पहाड़ों पर आलू अगस्त ही में तैयार होजाता है, मगर मैदानी ज़िलों में बहुधा जाड़े ही में इसकी फ़स्ल तैयार होती है। इसका सबब बयान करो।

१५–एशिया के किस किस भाग से कौन कौन से नाज दूसरे महाद्वीपों को जाते हैं ?

१६–बादाम, पिस्ता आदि किस क़िस्म की आबहवा में और कहां कहां पैदा होते हैं ?

१७–अरब में अनाज कम पैदा होता है, मगर खजूर ज़ियादा होती है, इसका क्या कारण है ?

१८–सागूदाने और नारियल के पेड़ किस तरह की आबहवा में पैदा होते हैं ?

१९–विलायती शक्कर किस चीज़ से बनती है ? गन्ने के लिये कैसी आबहवा चाहिये ? एशिया के किस भाग से शक्कर दूसरे महाद्वीपों को जाती है ?

२०–अफ़ीम कैसी आबहवा चाहती है ? एशिया के किन किन देशों में अफ़ीम पैदा होती है ?

२१—सागूदाना और नारियल एशिया के किन किन देशों से और महाद्वीपों को जाते हैं ?

२२ -एशिया में मुख्य कौन कौन सी बनस्पति पैदा होती हैं ?

खानिज पदार्थ

४४—एशिया प्राचीन समय से क़ीमती धातों और जवाहिरात के लिये मशहूर है। किसी समय में गोलकुंडे का हीरा एशिया के और देशों में बिकता था। यूरप में सबसे पहिले हीरा यहीं से गया था। कोहनूर हीरा जो हमारे सम्राट के मुकुट में लगा है, वह भी यहीं का है। सोना अब भी मैसूर में निकलता है। साईबेरिया, चीन और जापान में भी सोने चांदी की खानें हैं। और देशों में भी भिन्न भिन्न धातों की खानें हैं, परन्तु अमेरिका की तरह उनको कलों से निकालने का रिवाज अभी यहां पूरी तरह से नहीं हुआ है। खास खास धातें जो एशिया के भिन्न भिन्न देशों में मिलती हैं, उनका वर्णन उन देशों के साथ किया जायेगा।

नमक की खानें और मिट्टी के तेल के सोते भी इस महाद्वीप में पायेजाते हैं।

४५—लोहा और कोयला जो व्यौपार और खेती में बहुत काम आते हैं, वह भी इस महाद्वीप में पाये जाते हैं, परन्तु हिन्दुस्तान, चीन और जापान को छोड़कर और देशों में

उनको कलोंद्वारा नहीं निकाला जाता। यहां बहुधा लोहे की चीजें और महाद्वीपों से आती हैं।

४६—यूरप में कोयले की खानें प्रायः समुद्र के पास या ऐसी नदियों के किनारे हैं, जहां से वह जहाजों में भरकर दूसरे देशों में भेजा जासकता है। एशिया में कोयले की खानें अधिकतर उसके भीतरी भाग में है और उसे समुद्र तक लाने में खर्च अधिक पड़ता है। यही मुख्य कारण है कि लोहे की चीजों के व्यौपार में एशिया और महाद्वीपो की बराबरी नहीं कर सकता।

प्रश्न

१—प्राचीन समय मे हिन्दुस्तान के जवाहिरात में से कौनसी चीज एशिया के और देशो को जाती थी?

२—एशिया के किस भाग मे चादी और सोना पाया जाता है?

३—एशिया के किन किन देशों में कोयला निकलता है?

४—कोयला एशिया से और महाद्वीपों को क्यों नहीं जाता?

५—लोहे की अक्सर चीजें यूरप और अमेरिका से बनकर एशिया में आती है, इसका सबब बयान करो।

६—जवाहिरात के विचार से एशिया किस बात में बढ़कर है?

एशिया के पशु

४७—आबहवा का असर बनस्पति की तरह पशुओं पर

भी होता है। चूंकि एशिया में आबहवा तरह तरह की है, इसलिये यहां और महाद्वीपों की अपेक्षा जानवर भी तरह तरह के और बहुतायत से होते हैं, खासकर दूध पिलाने वाले और फाड़ खानेवाले जानवर।

४८--पशुओं के विचार से भी इस महाद्वीप के तीन भाग होसकते हैं:--

(१ दक्षिण और पूर्व में जहां बड़े बड़े पेड़ों के बन हैं और जिनमें घनी घनी झाड़ियां फैली रहती हैं, हाथी, चीते आदि पाये जाते हैं।

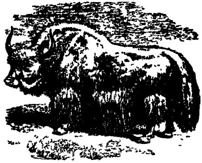
चूंकि इस भाग में अधिक वर्षा होने के कारण खेती बहुत होती है, इसलिये यहां बैल की जाति के पशु अधिक होते हैं।

(२) अरब और ईरान के स्टेपो का खास जानवर ऊंट है, यद्यपि यह जानवर अब और देशों में भी पाया जाता है।

(३) ईरान और तिब्बत के स्टेपो में जहां अधिकतर घास ही होती है, बकरियां अधिक पैदा होती है। भेड़ बकरी और घोड़ा खास स्टेपो और ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के जानवर हैं, क्योंकि यह पहाड़ों के तंग और कठिन रास्तों पर सहज में चल फिर सकते हैं।

चूंकि जानवर भिन्न भिन्न प्रकार की आबहवा सह सकते हैं, इस लिये वह भिन्न भिन्न देशों में पाये जाते हैं।

सुरागाय तिब्बत का खास जानवर है। यह दस हज़ार फ़ीट से कम ऊंचे स्थानों की गर्मी नहीं सह सकती।



सुरागाय

उत्तरी महासागर और साईबेरिया के सर्द भागों के जानवर **समूर, क़ाक़ुम** आदि है और बर्फ़िस्तानी दलदलों का खास जानवर **रेनडियर** (बारहसिंगा) है।



बारहसिंगा



समूर



क़ाक़ुम

यूरप और अमेरिका में खेती का काम घोड़ों से लिया जाता है, इसलिये वह एशिया की अपेक्षा इन देशों में अधिक होते हैं। एशिया में यह कमी बोझ ढोनेवाले पशु जैसे हाथी, ऊंट आदि से पूरी होजाती है।

इस महाद्वीप से दूसरे देशों को चौपाये कम जाते हैं, परन्तु ऊन और ख्वालें बहुधा जाती हैं।

प्रश्न

१—एशिया में किस क़िस्म के चौपाये अधिक हैं और क्यों?

२—यूरप और अमेरिका की अपेक्षा एशिया में घोड़े क्यों कम होते हैं?

३—तिब्बत और ईरान के सेटों में बकरियां क्यों अधिक पाई जाती हैं?

४—एशिया में कौन कौनसे जानवर बोझ ढोने के काम में आते हैं?

५—रेगिस्तानी मुल्कों का ख़ास जानवर कौन है और क्यों?

६—एशिया के दक्षिण और पूर्व में सब से बड़ा कौनसा चौपाया पाया जाता है और इसी भाग में क्यों?

७—सर्दी के कारण एशिया के भिन्न भिन्न भागों में जानवरों के रंग और बालों में क्या अन्तर हो गया है ?

८—सुरागाय मध्यप्रदेश में क्यों नहीं पाई जाती ?

९—साबित करो कि रेनडियर (बारहसिंगा) साईबेरिया के बर्फ़िस्तानी दलदलों का ख़ास जानवर है ।

१०—तिब्बत म ऊंट क्यों नहीं होता ?

आबादी

४९—यह लिखा जा चुका है कि एशिया की आबादी दुनिया की आबादी के आधे से कुछ अधिक है, परन्तु उसकी औसत आबादी प्रति वर्ग मील यूरप मे कम है। इसका यह कारण है कि एशिया का अधिक भाग जैसा कि सामने के नक़्शे से प्रकट है, कम आबाद है।

घनी आबादी जापान, चीन और हिन्दुस्तान में है, जहां मेह बहुत बरसता है और इसी लिये खेती भी अधिक होती है। सच तो यह है कि एशिया के दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में यानी स्थल के दसवें भाग में दुनिया की आधी आबादी ठूँसकर भरी हुई है। अरब, एशियाई रूम और ईरान की आबादी कम है, इससे कम चीनी तुर्किस्तान, तिब्बत, मंगोलिया आदि की, इससे कम साईबेरिया की। आबादी के नक़्शे को पैदावार और वर्षा के नक़्शों के साथ मिलाकर


नक्शा आबादी
نقشہ آبادی
آبادی فی مربع میل
आबादी फी वर्ग मील
२ से कम
२ से २५
२५ से १२५
१२५ से २५०
२५० से ५००


نسلیں
नसलें
मंगोल
منگول
कौकासी
قفقاسی
द्राविड़
دراوڑ
तुर्क
ईरानी
द्राविड़

देखने से प्रकट होगा कि घनी आबादी उन देशों में है जहां खाने पीने की चीजें बहुतायत से मिलती हैं।

५०—एशिया में मनुष्य जाति के मुख्य भेद * तीन हैं, जिन के रहने की जगह सामने के नक़्शे में दिखाई गई है।

ईरान के प्लेटो और उत्तरी हिन्दुस्तान के लोग **क़ौक़ासी** यानी **गोरे रंग वाली जाति** के हैं।

दक्षिणी हिन्द के द्रावड़ लोगों के लिये यह कहा जाता है कि वह हबशी नस्ल के हैं।

अरब के रहनेवाले भी **क़ौक़ासी** है, परन्तु वहां गर्मी अधिक होने से उनका रंग काला होगया है।

मल्य प्रायद्वीप और उसके पास के द्वीपों में **मल्य जाति** के लोग पाये जाते है। बाक़ी मुल्कों में मंगोल बसते हैं, जो तीन चौथाई के लगभग है।

यूरप के क़ौक़ासी जाति के लोग एशिया में साईबेरिया के सिवाय और कहीं बसे हुये नहीं हैं।

एशिया के पश्चिम में जो लोग बसते हैं, वह मुसलमान हैं।

हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं। बाक़ी हिस्सों में अधिकतर बौद्धमत फैला हुआ है। साईबेरिया में जो रूसी बसते हैं, वह ईसाई हैं। ईसाई मत के मानने वाले और देशों में भी हैं, परन्तु वह गिन्ती में बहुत थोड़े हैं।

* इस भूगोल के प्रथम भाग में इनके चित्र दिये गये हैं।

शिल्प और सभ्यता

५१—एशिया के लोगों की कारीगरी और सभ्यता पर भी यहां की आबहवा का असर पड़ा है। इस महाद्वीप के अधिक भाग में वह लोग हैं, जो घर बनाकर नहीं रहते और अपना डेरा डम्बर साथ लिये फिरते हैं। इनकी गिन्ती घर बनाकर रहने वालों से बहुतही कम है।

५२—उत्तरी मैदान के बर्फ़ से ढके हुये भाग में जहां खेती नहीं होसकती और चराने के लिये घास भी काफ़ी नहीं मिलती, लोगों का निर्वाह शिकार पर ही होता है। यह लोग सभ्यता में बहुत ही गिरे हुये हैं।

५३—पूर्वी स्टेप्पी के लोग भी अपना घरबार साथ लिये फिरते हैं और भेड़ बकरियां पालकर अपने दिन काटते हैं। ऊन और खाल उनकी ख़ास व्यौपारिक चीजें हैं। सभ्यता में इनका नम्बर दूसरा है।

५४—पश्चिमी स्टेप्पी में भी भेड़, बकरियां अधिक पाली जाती हैं, क्योंकि खेती कम होती है, परन्तु इस स्टेप्पी के लोग घर बनाकर रहते हैं।

५५—एशिया के दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में खेती बहुत होती है। प्राचीन समय में इराक़, अरब, हिन्दुस्तान और चीन के उपजाऊ मैदान सभ्यता के केन्द्र थे। इन देशों में पैदावार अच्छी

होने के कारण उस समय भी आबादी घनी थी। चूंकि घनी आबादी सभ्यता की जड़ है, इसलिये यह लोग * दस्तकारी भी करते हैं, परन्तु कलों से कम।

एशिया के देशों में भीतर के रास्ते और व्यौपार

५६—इस महाद्वीप के देशों में प्राचीन समय से व्यौपार होता चला आया है। ऊंट, घोड़े, बैल और बकरियां बोझ ढोने के काम आती थीं। अब भी ऐसा ही होता है। तिब्बत के



* इन देशों के निवासी एशिया के उत्तरी भाग की अपेक्षा अधिक सभ्य थे और अब भी हैं।

व्यौपारी बकरियों पर सुहागा लादकर हिन्दुस्तान में लाते हैं।

जब से यूरप की सभ्यता का प्रभाव (असर) इस महाद्वीप पर पड़ा है, इसके देशों में रेल और जहाज़ों पर भी माल आता जाता है।

५७—एशिया मे यूरप की तरह अच्छी अच्छी सड़कों का जाल नहीं फैला हुआ है। हिन्दुस्तान के सिवाय और देशों में सिर्फ़ छोटे छोटे रास्ते है, जो एशिया के पूरे नक़्शे में दिखाये गये हैं। जहाज़ आने जाने के रास्ते पहिले दिखाये जा चुके है।

एशियाई रूम, चीन और **साईबेरिया** में भी रेल की सड़कें बनगई हैं, परन्तु वह हर तरफ़ इतनी फैली हुई नहीं हैं, जितनी हिन्दुस्तान में। बड़ी बड़ी रेल की सड़कें भी पूरे नक़्शे में दिखाई गई है।

एशिया में व्यौपार ख़ासकर खेती बाड़ी की पैदावार का होता है, जिसका बयान पहिले हो चुका है। इसके सिवाय और व्यौपारिक चीज़ों का हाल प्रत्येक देश के साथ दिया जायेगा।

राज्यप्रबन्ध

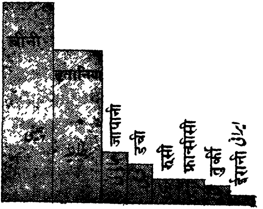
५७ अ—एशिया के देशों में प्राय: यहींके निवासियों का राज्य रहा है। दूसरे महाद्वीप का सब से पहला बादशाह **सिकंदर आज़म** था, जिसने अब से लगभग २३०० वर्ष

पहिले यूरप से चढ़ाई करके एशियाई रूम, ईरान आदि देशों पर अपना अधिकार कर लिया था। उसके बाद **पुर्तगाल** वाले समुद्र के रास्ते से पन्द्रहवीं सदी में इस महाद्वीप में आये, फिर **डच, फ्रांसीसी** और **अंगरेज़**। राज्य के लिये इन लोगों में बहुत समय तक परस्पर लड़ाइयां होती रहीं, परंतु अंगरेज सब से बलवान् रहे।

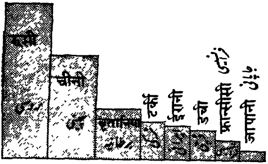
रूसियों ने भी सोलहवीं सदी में ख़ुश्की की राह से एशिया में आना शुरू किया और धीरे धीरे उसके उत्तरी भाग पर अपना अधिकार कर लिया।

नीचे के दोनों चित्रों में एशिया के भिन्न भिन्न राज्यों और उनकी आबादी का मुक़ाबिला करके दिखाया गया है।

आबादी آبادی



क्षेत्र फल



प्रश्न

१—एशिया का कौनसा भाग अधिक आबाद है और क्यों ?

२—एशिया के भिन्न भिन्न देशों की वर्षा और आबादी का मुक़ाबिला करो ।

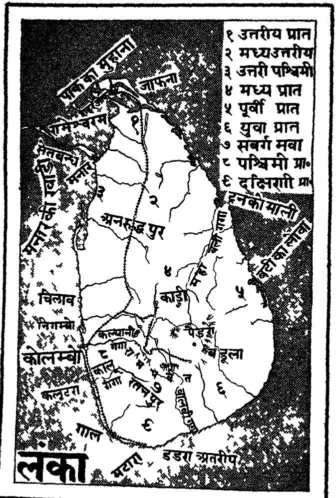
३—एशिया में किस किस जाति के आदमी बसते हैं और कहां कहां ?

४—एशिया में कौन कौनसे मत फैले हुये हैं और कहां कहां ?

५—सभ्यता पर आबादी का असर किस तरह पड़ता है ?

६—एशिया के उत्तर और अरब के बीच में आबादी क्यों कम है ?

७—एशिया के अधिक भाग में लोग घर बनाकर क्यों नहीं रहते ? इसका क्या कारण है ?



१ उत्तरीय प्रात
२ मध्यउत्तरीय
३ उत्तरी पश्चिमी
४ मध्य प्रात
५ पूर्वी प्रात
६ युवा प्रात
७ सबर्ग मवा
८ पश्चिमी प्रा०
९ दक्षिणी प्रा०
पाक का मुहाना
जाफना
रामेश्वरम
सेतुबन्ध
मनार
मनार की खाड़ी
अनरुद्ध पुर
काण्डी
चिलाव
निगम्बो
कोलम्बो
कलुटरा
गाल
मटारा
डंडरा अन्तरीप
लंका

८—एशिया के किस भाग के लोगों का निर्वाह शिकार ही पर होता है ?

९—एशिया का कौनसा भाग सब से कम आबाद है और क्यों ?

१०—एशिया के लोगों का मुख्य उद्यम (पेशा) क्या है ?

११—एशिया और यूरप के लोगों के पेशे में क्या अन्तर है ?

१२—यूरप की तरह एशिया में रेल की सड़कों और नहरों का जाल क्यों नहीं है ?

१३—एशिया में किस जाति (नस्ल) के आदमी अधिक आबाद हैं ?

१४—तिब्बत से हिन्दुस्तान में व्यौपारिक चीजें किस तरह आती जाती हैं ?

१५—आदमियों और माल के आने जाने में एशिया पर यूरप का कैसा असर पड़ा है ?

लंका द्वीप (Ceylon)

५८—हिन्दू लड़कों में से बिरला ही कोई ऐसा होगा, जो इस रमणीक और उपजाऊ टापू का नाम न जानता हो, क्योंकि इसका हाल **रामायण** में आया है । संस्कृत में इस को सिंहलद्वीप भी कहते हैं । अरब के यात्रियों ने इसका नाम सीलान रक्खा था, उसी को बदल कर यूरपवालों ने **सीलोन** कर दिया है ।

रामेश्वर और **मनार** के द्वीपों ने लंका को क़रीब क़रीब हिन्दुस्तान से मिला दिया है। रामेश्वर द्वीप और हिन्दुस्तान के बीच में समुद्र का एक तंग और उथला भाग है।

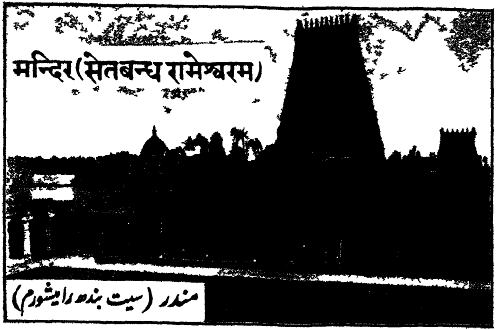
हाल में इस तंग हिस्से और ऊपर के दोनों टापुओं पर होती हुई एक रेल दक्षिणी हिन्दुस्तान से लंका तक जारी हुई है। रामेश्वर एक मूंगे का पहाड़ है जिसको प्रायः सेतुबन्ध रामेश्वर (Adam's Bridge) कहते हैं। यहां एक बहुत सुन्दर मन्दिर * बना हुआ है।

५६—लंकाद्वीप का आकार बादाम या आम की तरह है। विस्तार में रियासत मैसूर से कुछ कम है। हिन्दुस्तान की तरह इसका किनारा सपाट, चौरस और रेतीला है, जिसको समुद्र जगह जगह काटकर जूते की नाल जैसी झीलें बनाता हुआ एक या आध मील तक अन्दर चला गया है। यह झीलें बहुत ही छिछली हैं। इनमें बड़े बड़े स्टीमर या जहाज़ नहीं चलसकते। इनके भीतर कोई बड़ी खाड़ी दूरतक नहीं गई है, इसलिये ट्रंकोमाली (Trincomali) के सिवाय और कोई सुन्दर प्राकृतिक बन्दरगाह नहीं है।

गाल (Galle) भी एक छोटा कुदरती बन्दरगाह है और **कोलम्बो** (Colombo) एक बनाया हुआ बन्दरगाह है।

जाफ़ना (Jaffna) के प्रायद्वीप में भी इसी नाम का एक और छोटासा बन्दरगाह है, जिसमें छोटे छोटे स्टीमर जासकते हैं।

* चित्र में "सेत" को "सेतु" पढ़ो।


मन्दिर (सेतबन्ध रामेश्वरम)
مندر (سیت بندھ رایشورم)

६०—**बनावट**—इस द्वीप में मध्य से कुछ हटकर एक प्लेटो है, जिसके किनारे के पहाड़ों का ढाल चारों तरफ़ समुद्र की ओर है। इस पहाड़ी भाग का क्षेत्रफल कुल द्वीप के क्षेत्रफल का छठा भाग है।



राम पर्वत

इस प्लेटो में कोहे आदम "राम पर्वत" (Adam's peak) और पैडरो (Pedro) दो ऊंची ऊंची चोटियाँ हैं, जिनकी ऊँचाई नैनीताल के पहाड़ों की ऊँचाई के लगभग है। पहाड़ी भाग के चारों ओर की नीची धरती संजाफ़दार गोट की तरह फैली हुई है, जिसको नदियां सींचती हैं।

६१—**नदियां**—प्लेटो के बीच में होने से नदियों का बहाव चारों ओर को है। इसी कारण यह देश पृथ्वी पर बहुत उपजाऊ समझा जाता है। यहां सबसे बड़ी नदी **महाबली**

गंगा (Mahavali Ganga) है। छोटी छोटी नदियों में **कल्याणी** (Kalyani) अधिक प्रसिद्ध है। चूंकि सब नदियों के दहाने बालू से भरे हुये हैं, इसलिये इनमें बड़े बड़े जहाज या स्टीमर नहीं आते जाते।

६२—**आबहवा**—चूंकि लंका भूमध्य रेखा के पास है, इसलिये यहां गर्मी अधिक पड़ती है, परन्तु समुद्र के निकट होने के कारण गर्मी का असर अधिक नहीं होता। (उष्णता के नक्शे को देखो)

६३—**वर्षा** के नक्शों को देखने से प्रकट है कि यहां जौलाई में हवा दक्षिण और पश्चिम के कोने से चलती है और जनवरी में उत्तर और पूर्व से। चूंकि दोनों मानसून हवायें समुद्र से आती हैं, इसलिये कोई महीना ही ऐसा जाता होगा जिसमें वर्षा न होती हो। यहां केवल मार्च और अप्रैल ही में गर्मी अधिक रहती है।

लंका जैसे उष्ण कटिबन्ध के टापुओं में वर्षा की ऋतु दो बार आती है और जाड़े की ऋतु होती ही नहीं।

६४—**पैदावार**—सामुद्रिक किनारों पर चारों ओर नारियल के पेड़ बहुतायत से होते हैं। (सेतुबंध का चित्र देखो) नीचे मैदानों और पहाड़ों के नीचे जहां पानी मिलता है वहां धान की खेती बहुत होती है। सिंचाई के लिये बहुधा

तालाब बने हुये हैं। पहाड़ों पर चाय भी बहुत होती है। पहिले क़हवा की खेती भी बहुत होती थी, परन्तु सन् १८८० ई० में इसके पत्तों में कुछ ऐसा रोग लग गया कि इसकी खेती कम होगई। सुपारी, दारचीनी, इलायची और कालीमिर्च भी बहुत पैदा होती है। आबनूस, रबड़ और कोनैन के पेड़ भी होते है। उत्तरी और पूर्वी नीचे मैदान में जंगल हैं।

राय बहादुर लाला बैजनाथ साहब अपने सफ़रनामे में यहां की पैदावार का हाल यह लिखते हैं, "मैं नारियल और सुपारी के पेड़ों की सैर करता हुआ बाग़ में पहुँचा जहां दारचीनी के सैकड़ों पेड़ हैं *। **शहर कोलम्बो** से निकलते ही नारियल, सुपारी, धान और केले के बन के बन दिखाई पड़े। एक इंच धरती भी बंजर या रेतीली नहीं पाई गई।"

६५—**खानिज पदार्थ**—लंका प्राचीन समय से रत्नों (जवाहिरात) के लिये प्रसिद्ध है। याकूत, नीलम, पुखराज और बहुत से रत्न **रत्नपुर** गाँव के खेतों और नदियों की

---

* कम्पनीबाग़।

नोट—जब सीप के जानवर को किसी कठिन चीज़ के चुभने से दुःख पहुँचता है, तो वह उससे बचने के लिये रेशम के कीड़े की तरह उस पर अपने पेट के लुआब से प्याज की तरह तहे चढ़ाने लगता है, जिनसे मोती बन जाता है।

बालू में मिलते हैं। सुर्मा जिससे पेन्सिल बनती है, यहां बहुत पैदा होता है।

मनार की खाड़ी में एक तरह की सीपी पाई जाती है, जिसमें से मोती निकलता है। इनको गोता मारने वाले डुबकी लगाकर निकालते हैं।



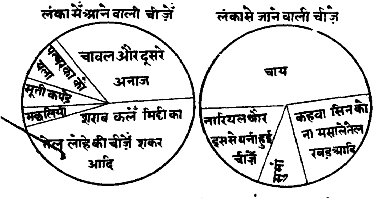
६६ **शिल्प और कारीगरी**—यहां के दो तिहाई लोग खेती करके अपना निर्वाह करते हैं। वह धान बोते हैं, नारियल के पेड़ लगाते हैं और चाय के बागों में काम करते हैं। और लोग तरह तरह के उद्यम करते हैं, जैसे नारियल की जटाओं से रस्सी बनाना, नारियल के भीतर से गोला निकालना, मछलियों को पकड़ना, जवाहिरात का निकालना आदि।

६७—**आने जाने के रास्ते**—बड़े बड़े शहरों और

क़स्बों के बीच में सड़कें बनी हुई हैं। डच लोगों की बनवाई हुई बहुतसी नहरें हैं। पश्चिमी भाग में रेल भी दक्षिण से उत्तर को जाती है। (नक़्शा देखो)

लंका के स्वदेशी और विदेशी व्यापार का मुक़ाबिला नीचे के वृत्तों में किया गया है। यहां लोहे की बहुतसी चीज़ें इंगलैंड की बनीहुई आती हैं। सिनकोना का पेड़ जिसकी छाल से कोनैन बनाई जाती है, यहां पैदा होता है।

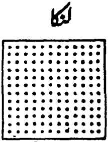
चूंकि यहां के लोगों को नारियल की पैदावार से अधिक लाभ होता है, इसलिये अनाज कम बोया जाता है। यही कारण है कि यहां ब्रह्मा और हिन्दुस्तान से धान अधिक आते हैं।



६८—**आबादी**—दक्षिण और पश्चिम के कोने में आबादी घनी है, क्योंकि यह भाग मेह के कारण अधिक उप-

आऊ है। बाक़ी हिस्से कम आबाद हैं, खासकर उत्तरी और पूर्वी भाग।

लंका की औसत



आबादी का फ़ी वर्गमील

CEYLON

६९—बाशिन्दे—यहां के असली बाशिन्दे वेधा हैं, जो बहुत ही असभ्य हैं।



वेधा

यह लोग जंगलों में रहते और शिकार से पेट भरते हैं।

इनसे कई सौ वर्ष पीछे सिंघाली लोग उत्तरी हिन्दुस्तान से आये और बेघाओं को जीतकर वहां बस गये । इन हिन्दुओं का नाम सिंघलद्वीप में रहने के कारण सिंघाली पड़गया ।

फिर दक्षिणी हिन्द की तामिल जाति सिंघालियों को जीतकर यहां रहने लगी, परन्तु थोड़े दिनों के बाद सिंघालियों का राज्य फिर हो गया । अब अधिकतर दक्षिण में सिंघाली और उत्तर में तामिल लोग बसते हैं । इनके सिवाय **मुअर** और **बरघर** भी बसते हैं ।

मुअर अरब के लोग और सिंघाली स्त्रियों की सन्तान (औलाद) हैं । यह तामिल भाषा बोलते हैं ।

बरघर लोग डच और पुर्तगालवालों की नस्ल से हैं, जिन्होंने तामिल और सिंघाली स्त्रियों स विवाह करलिया था ।

सिंघालियों की संख्या दो तिहाई है और उनकी भाषा विहार की प्राचीन समय की प्राकृतिक हिन्दी है, जिसमें संस्कृत शब्द अधिकता से पाये जाते हैं । और लोग दक्षिणी हिन्दुस्तान की तामिल भाषा बोलते हैं ।

७०—**मत (मज़हब)** सिंघालियों का मत बौद्ध है जिसको सन् ईस्वी से लगभग ३०० वर्ष पहिले राजा अशोक के पुत्र महेन्द्र ने यहां आकर फैलाया था । यहां बौद्धमत के बहुतसे पूजनीय स्थान हैं, जिनके दर्शनों के लिये और और

देशों से बौद्धमत के माननेवाले लोग आते हैं। मुअर लोगों का मत इस्लाम है, और बरघर लोगों का ईसाई।

रामपर्वत की चोटीपर चूने के पत्थर का एक निशान आदमी के पैर का सा बन गया है। इसको मुसलमान लोग हज़रत आदम के और सिंघाली महात्मा बौद्ध के चरण का चिह्न कहते है।

७१—**मशहूर शहर**-सब से बड़ा शहर **कोलम्बो** है, जो इस द्वीप की राजधानी है। पुर्तगाल वालों और **डच** लोगों के समय में भी वहां एक क़िला था। डचों ने व्यौपार के लिये यहां नहरें बनवाई थीं जो अब तक मौजूद हैं। चूंकि कोलम्बो का बन्दरगाह यूरप, एशिया, अफ़्रीक़ा और आस्ट्रेलिया का चौराहा है, इसलिये यात्री लोग यहां आस्ट्रेलिया, चीन, हिन्दुस्तान आदि आने जाने के लिये जहाज़ बदलते हैं। यहां कोयले के लिये भी जहाज़ ज़रूर ठहरते हैं।

हिन्दुस्तान की खानों का कोयला यहां बहुत ही कम आता है, बहुधा इंगलैंड से आकर बिकता है।

ट्रंकोमाली महाबली गंगा के दहाने पर सब से बड़ा बन्दरगाह है। यह हिन्द महासागर में हमारी सरकार के जहाज़ों की छावनी है।

चिलाव (Chilaw) **निगम्बो** (Negambo) **कलोत्रा** (Kallutra) पश्चिमी किनारे पर और

गाल और **मटारा** (Matara) दक्षिणी किनारे पर हैं। यहां नारियल के पेड़ बहुत होते हैं और मछलियों का शिकार किया जाता है।

अनरुद्धपुर में बौद्ध राजाओं के बनवाये हुये मन्दिरों के बहुतसे खंडहर पड़े हुये हैं। एक मकान के खंडहर में अब तक पत्थर के १६०० खम्भे मौजूद हैं। यह मकान नौखना था जिसमें पूरे १००० कमरे थे। इसकी छत पीतल की थी। यह सन् ईस्वी से २०० वर्ष पहिले बना था।

इस द्वीप में बहुत जगह बौद्ध और हिन्दू राजाओं के मकानों के खंडहर और तालाब पाये जाते हैं। दक्षिणी और पूर्वी किनारे पर दो चट्टानें समुद्र के धरातल से कुछ ही नीची हैं, जिनको यहां के लोग **रावण का क़िला** बताते हैं। इसी तरह कुछ और स्थानों का सम्बन्ध भी रावण के साथ बताया जाता है।

कान्डी (Kandy) पहाड़ पर बसा हुआ है जो सिंघाली राजाओं की अंतिम राजधानी थी। कोलम्बो और उसके बीच में रेल जारी है। यह शहर बहुत सुन्दर और मनोहर है, जैसा कि राय बहादुर लाला बैजनाथ लिखते हैं,

" **न्यूरेलिया**(१) से लौटने के समय **कान्डी** में पहुँचा। यहां का सरकारी बाग कि जिसको **पैरीडिन्या बाग़**(२)

(१) New Ralia. (२) Paredinya Garden.

कहते हैं, बड़ा सुन्दर है। इसमें अनोखी बात यह है कि यहां न केवल एशिया ही के बल्कि यूरप के भी सब तरह के पेड़ पैदा होसकते हैं। यहां पर मैंने बड़े बड़े जायफल सेब की तरह पेड़ों के ऊपर लटकते हुये और काली मिर्च के गुच्छे के गुच्छे बेलों पर और आबनूस के पेड़ देखे। रबड़ के पेड़ों की तो गिन्ती ही नहीं थी। रबड़ का पेड़ बरगद के पेड़ की तरह होता है और इसके पत्ते जामन के से होते हैं। पेड़ के भीतर चाकू से छेद कर दिया जाता है और छोटी छोटी हांड़ियां बांध दी जाती हैं। उनमें दूध टपक टपक कर इकट्ठा होजाता है और वह मांस के टुकड़ों की तरह नर्म और लाल रंग का होता है। यही दूध सैकड़ों मन यूरप को जाता है और वहां से लाखों रुपये की रबड़ की चीजें बनकर आती हैं। इस बाग में मैंने एक पेड़ की लकड़ी देखी कि जो रूप और तोल में लोहे के समान थी और काम भी लोहे के बराबर देती है। ताड़, नारियल और सागूदाने के पेड़ बहुतसे हैं। इसी कारण सीलोन छोटासा द्वीप होने पर भी व्यौपार में अधिक बढ़ा हुआ है और दक्षिण में बौद्ध लोगों के धर्म की बड़ी जगह है। चीन के जो यात्री सन् ५०० ईस्वी में वहां गये थे, वह भी इसकी आबहवा और बागों की सराहना करते हैं।"

७२–इतिहास और राज्यप्रबन्ध–सन् ईस्वी से

लगभग ५५० वर्ष पहिले उत्तरी हिन्दुस्तान के एक राजा ने अपने लड़के को किसी बात पर अप्रसन्न होकर निकाल दिया था, उसने इस टापू को जीता ।

कई सौ वर्ष तक सिंघालियों का राज्य रहा । पुर्त्तगाल के लोग सन् १५०५ ईस्वी में यहां आये और सामुद्रिक किनारे पर अपना अधिकार करलिया । सन् १६४० ईस्वी में डचों ने उनको निकाल दिया । फिर सन् १७९६ ईस्वी में अंगरेज़ों ने डचों से इस टापू को लेलिया । वहां की प्रजा के रोने पीटने पर आखिरी सिंघाली राजा सन् १८१५ ईस्वी में गद्दी से उतार दिया गया और पूरे द्वीप पर अंगरेज़ों का अधिकार होगया । यहां ब्रिटिश राज्य की ओर मे एक गवर्नर रहता है, जिसको सम्राट आप मुक़र्रर करते हैं । पूरा देश नौ सूबों में बांटा गया है, जिनके नाम नक़्शे के किनारे पर लिखे हुये हैं ।

प्रश्न

१—लंका शब्द का क्या अर्थ है ? संस्कृत में इसका क्या नाम है ?

२—इस द्वीप का नाम सीलोन कैसे पड़ा ?

३—एशिया के नक़्शे में जो पैमाना लिखा हुआ है, उससे लंका की अधिक से अधिक लम्बाई और चौड़ाई नापकर बताओ ।

४—बताओ कि भूमध्य रेखा से डंडरा अन्तरीप कितने अंश पर है।

५—मनार और रामेश्वरम् क्या हैं ? सेतुबंध रामेश्वर से क्या समझते हो ?

६—लंका की बनावट अच्छी तरह समझाओ।

७—लंका की नदियां चारों दिशाओं में क्यों बहती हैं और दक्षिण की नदियां उत्तर की नदियों से क्यों छोटी हैं ?

८—लंका में मेह क्यों अधिक बरसता है ? क्या कारण है कि यहां हर महीने मे थोड़ा बहुत मेह बरस जाता है ? लंका के उत्तर और पूर्व में और भागों की अपेक्षा मेह क्यों कम बरसता है ?

९—सीलोन की आबहवा कैसी है ? ऐसी आबहवा में क्या क्या चीजें पैदा हो सकती हैं ?

१०—लंका में कौन कौनसी खानिज वस्तुयें पाई जाती हैं और कहां कहां ?

११—लंका में नारियल और केले के बन के बन पाये जाते हैं, इसका क्या कारण है ?

१२—मोती किस तरह बनता है और लंका के किस भाग में निकलता है ?

१३—लंका की मुख्य व्यौपारिक वस्तु क्या है ? रबड़ कैसे मिलता है ?

१४—जब कि लंका की आबहवा में धान बहुत अच्छी तरह पैदा हो सकता है, तो फिर और देशों से चावल यहां क्यों मंगाये जाते हैं ?

१५—लंका में कौन कौन जातियां बसती हैं और वह लोग किस मत को मानते हैं ?

१६-लंका के असली बाशिन्दे कौन हैं और वह अपना निर्वाह किस तरह करते हैं ?

१७—सिंघाली लंका में कब आये और फिर हिन्दुस्तान की किस जाति ने उनपर अपना अधिकार किया ?

१८—ट्रंकोमाली, महाबली, अनुरुद्धपुर, गाल, कल्याणी, जाफ़ना, निगम्बो, सेतुबंधरामेश्वर, मनार, कांडी, मटारा और रत्नपुर क्या हैं और उनमें से कौन कौनसे बहुत प्रसिद्ध हैं ?

१९—लंका पर यूरप के किन किन लोगों का अधिकार था और अब किसका है ?

२०—लंका यद्यपि हिन्दुस्तान के बहुत पास है, परन्तु यहां कोयला इंगलैंड से आकर बिकता है। इसका क्या कारण है ?

२१-कोलम्बो एशिया में पूर्वी सामुद्रिक रास्तों का चौराहा क्यों गिना जाता है ?

२२–ब्रिटिश राज्य के सामुद्रिक प्रबन्ध मे लका से क्या मदद मिलती है ?

२३–लका मे बौद्ध मत किस तरह फैला ?

महाद्वीपी द्वीप

७३–लका जैसे टापू को महाद्वीपी द्वीप कहत है। ऐसा द्वीप जिस महाद्वीप के पास होता है, उसमे उसी महाद्वीप की तरह वनस्पति और चौपाये होत है।



महाद्वीपी द्वीप किसी समय मे महाद्वीपों से मिले हुये थे, परन्तु उनके किनारे की धरती धीरे धीरे नीचे दब गई और वहा समुद्र का पानी चढ़ आया। इस कारण ऐसे टापू महाद्वीपों से अलग हो गये। जहा अब पाक का मुहाना है उस के नीचे की पथरीली धरती हिन्दुस्तान से कभी मिली हुई थी। (ऊपर का चित्र देखो)

लकाद्वीप (Laccadives) **और मालद्वीप** (Maldives)

७४—पश्चिमी घाट के पश्चिम और दक्षिण की ओर छोटे छोटे बहुतसे टापू हैं, जिनको लकाद्वीप कहते हैं। सीलोन के दक्षिण और पश्चिम में भी सैकड़ों छोटे छोटे टापू हैं, जिनको **मालद्वीप** कहते हैं। मालद्वीप का अर्थ दस हज़ार द्वीप है और लकाद्वीप * का एक लाख द्वीप। लोगों का विचार यह है कि द्वीपों की बहुतायत से इनके यह नाम पड़ गये हैं।

७५—इनमें से कुछ द्वीप विस्तार में एक वर्गमील हैं और कोई इससे बड़े और छोटे। इनमें बहुतसे द्वीप पहाड़ की चोटियों की तरह निकले हुये हैं। वास्तव में यह सब द्वीप मूंगे के पहाड़ हैं और अपने चारों ओर के समुद्र से कुछ योंहीं ऊंचे हैं।

मूंगे का द्वीप भीतर की



और उसके झील।

कोई कोई टापू नाल की शक्ल के हैं जिनके भीतर समुद्र का पानी रहता है। कोई नदियों के कछार की तरह हैं, कोई

* लका=लक्ष, १ लाख।

उनमें से बिल्कुल सपाट हैं जैसा नीचे के चित्र में।



जो टापू चटियल हैं वे बसे हुये नहीं हैं और जिन पर नारियल के पेड़ हैं वह कुछ बसे हुये हैं। वहां के लोग बहुधा नारियल और मछली खाकर रहते हैं।

नारियल से प्याले, गिलास, चटाइयां, रस्सियां, नावें और मकान आदि बनाये जाते है। यह लोग सिंघालीजाति के मालूम होते हैं, क्योंकि उनकी भाषा सिंघाली भाषा से मिलती है और मुसलमानी मत को मानते हैं। इनका राजा जो सुल्तान कहलाता है लंका के गवर्नर को कर में सूखी मछलियां और कौड़ियां देता है।

७६–कौड़ियां इस तरह इकट्ठा की जाती हैं कि जब समुद्र का पानी चढ़ता है, तो कौड़ियां पानी के साथ पहाड़ों के गड्ढों और गुफाओं में अटक जाती हैं। जब पानी उतर जाता है, तो लोग उनको इकट्ठा करके कीड़ों से साफ़ कर लेते हैं।

चौदहवीं सदी में अफ़्रीक़ा का प्रसिद्ध यात्री **इब्न बतोता** यहां आया था। उसके सफ़रनामे से कुछ इबारत नीचे लिखी जाती है।

इन द्वीपों में एक बात बड़ी अनोखी है यानी वह गिन्ती में २००० के लगभग हैं, इनमें से १०१ के लगभग एक दूसरे से इतने पास है कि उनका घेरा बन गया है, परन्तु हर एक द्वीप अलग समुद्र से घिरा हुआ है। जब इनमें से किसी एक के निकट जहाज़ पहुँचते हैं, तो जहाज़वालों को यह बात अवश्य बतानी पड़ती है कि वह कौन हैं।

अगर वह यह बात न बतायें, तो दोनों द्वीपों के बीच में से निकलने का रास्ता नहीं बताया जाता। यह द्वीप इतने पास पास हैं कि एक टापू के आदमी दूसरे टापू वालों से सहज में बात चीत कर सकते हैं।

इन द्वीपों में सबसे बड़ा पेड़ नारियल का होता है, जिस के फल को यह लोग मछली के साथ खाते हैं।

नारियल और ताड़ के पेड़ यहां अधिक हैं। यह साल

भर में एक ही बार फलते हैं । हर स्थान पर पेड़ों के झुंड बड़े सुहावने दिखाई देते हैं । कोई फल छोटा, कोई बड़ा, कोई सूखा, कोई हरा होता है। इनसे शराब और तेल निकाला जाता है और इनके रस से मिठाई बनाई जाती है, जिसको यह लोग सूखेहुये मेवों के साथ खाते हैं। यह लोग नारियल के रेशों से एक तरह का सन बनाते और उसका व्यौपार करते हैं। हर एक द्वीप के लोग मछलियां भी पकड़ते हैं जिनको वह नमक लगाकर हिन्दुस्तान और चीन की ओर भेजते हैं।

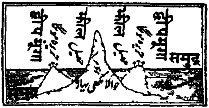
महासमुद्री द्वीप

७७-वह टापू जो समुद्र में किसी महाद्वीप से दूर होते हैं **महासमुद्री द्वीप** कहलाते हैं, जैसे मालद्वीप और लका द्वीप। महासमुद्री टापुओं में खुश्की के चौपाये नहीं होते, जब तक कि वह किसी महाद्वीप से लाकर न पाले जायें।

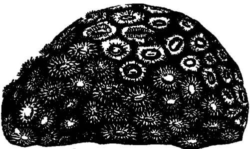
पहले बता चुके हैं कि समुद्र की तह में किसी जगह पहाड़, कहीं ज्वालामुखी, कहीं ऊंचे सेटो और कहीं गहरी घाटियां हैं। महासमुद्री टापू इन पहाड़ों और सेटोओं के वह ऊंचे भाग हैं, जो समुद्र के धरातल के ऊपर निकले हुये हैं।

महासमुद्री द्वीप प्रायः समुद्र के नीचे की धरती के उभरने से बने हैं और किसी महाद्वीप से कभी मिले हुये नहीं थे। इनकी शक्ल बहुधा गोल होती है और अक्सर इनका

झुड का झुड होता है । कहीं कहीं समुद्र की तह के पहाड़ और सेटा के सिरे पानी के धरातल से कुछ फ़ीट नीचे रहते है । समुद्र के ऐसे कम गहरे भाग मूगे के कीड़ों के खोलों से धीरे धीरे भरते जाते है और कुछ समय मे धरातल तक भर कर टापू बन जात है, जसा कि नीच के चित्र मे प्रकट है ।



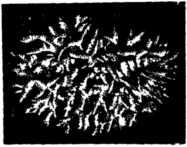
मूगे के कीड़ो की बहुतसी किस्मे हैं । उनकी शक्लें सितारो की सी हाती है । एक तरह क काड़ो की शक्ल नीचे के चित्र मे दिखाई गइ हे ।



मूगे के कीडे مونگے کے کیڑے

७८—द्वीप बनानेवाले कीड़े बहुधा गर्म समुद्रों में पानी के धरातल से ३० फ़ीट नीचे रहते हैं, कोई कोई कुछ और गहराई में भी, परन्तु वह इतने अधिक गहरे पानी में जहां सूरज की धूप और प्रकाश न पहुँचता हो नहीं जी सकते। लाखों कीड़े एक साथ रहते है। हर एक कीड़ा समुद्र का चूना मिला हुआ पानी पीता है और अपने शरीर के ऊपर खोल बनाता रहता है, यहा तक कि एक का खोल बढ़ कर दूसरे कीड़े के खोल से मिल जाता है।

इस चित्र में बाईं ओर के कीड़े बढ़े हुये दिखाई देते हैं। यह कीड़े आपस में मिलकर कभी प्याले की कभी पेड़ की कभी झाड़ियों की शक्ल बन जाते हैं। कभी वह गावदुम टीला होजाते है। यह बनावट बहुत मज़बूत होती है और समुद्र की लहरों से बड़ी मुश्किल से टूटती है। जो भाग टूट जाता है उसे लहरे तोड़ फोड़ कर बालू बना देती हैं।



मूंगे का पेड़

७६—जो कीड़े मरते जाते हैं, उनके खोलों और उनके बालू से समुद्र की तह भरती जाती है। हजारों वर्ष में **करोड़ों कीड़ों** के इस काम से **मूंगे के सैकड़ों टापू** और **पहाड़** बन गये हैं। इन टापुओं पर समुद्र में बहकर और उड़कर आई हुई मिट्टी के बैठने से धरती बन जाती हैं। यहां बहकर आये हुये या चिड़ियों के गिराये हुये बीज उगते, जमते, फूलते और फलते हैं, फिर वहां मनुष्य भी जाकर बसने लगते हैं।

मालद्वीप और लकाद्वीप के टापू मूंगे के कीड़ों की **कारीगरी के नमूने** हैं।

प्रश्न

१—महासमुद्री और महाद्वीपी टापुओं की परिभाषा लिखो और दोनों के उदाहरण दो।

२—महासमुद्री और महाद्वीपी टापू कैसे बन जाते हैं और दोनों में विशेष अंतर क्या रहता है?

३—मूंगे के टापू कैसे बनते हैं और कै तरह के होते हैं?

४—मूंगे के कीड़े क्या हैं और कहा पाये जाते हैं?

५—मालद्वीप और लकाद्वीप कहां हैं? उनके यह नाम क्यों पड़ गये?

६—इन द्वीपसमूहों में किस जाति के आदमी बसते हैं और वह अपना निर्वाह कैसे करते हैं ?

७—कौड़ियां किस प्रकार मिलती हैं ?

८—लकाद्वीप और मालद्वीप के टापुओं से कौनसी व्यौपारिक वस्तुयें और देशों में जा सकती हैं ?

९ - यह द्वीप किस राज्य के आधीन हैं ?

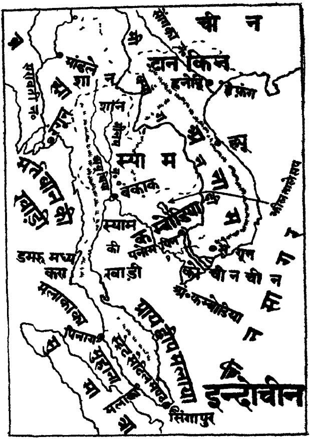
१०—जो महासमुद्री द्वीप समुद्र में दूर अकेला पाया जाता है, वह किस तरह बना हुआ है ?

इन्दोचीन (Furthe India)

८० यह प्रायद्वीप सब का सब प्राय: बंगाले की खाड़ी और चीन सागर के बीच उष्ण कटिबन्ध में है। हिन्दुस्तान और चीन के निकट होने के कारण इसका नाम **इन्दोचीन** (Furthe India) पड़ा है।

विस्तार—इसका क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का दो तिहाई है।

८१--**किनारा**—द्वीपों, अन्तरीपों, खाड़ियों और नदियों के डेल्टाओं के कारण इसका किनारा हिन्दुस्तान के किनारे की अपेक्षा अधिक कटा हुआ है और इस पर अच्छे अच्छे बन्दरगाह हैं। इस देश में स्याम की खाड़ी और मर्तबान की खाड़ी के कारण प्रायद्वीपों के भीतर प्रायद्वीप बन गये हैं।


चीन
टानकिन
हनोई
मांडले
स्याम
बंकाक
स्याम की खाड़ी
मर्तबान की खाड़ी
डमरू मध्य
करा
सिंगापुर
इन्दोचीन

८२—**बनावट**—हिमालय पहाड़ की कुछ श्रेणियां उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई हैं, परन्तु उनका हाल अच्छी तरह मालूम नहीं है। इन पहाड़ों के बीच में नदियां बहती हैं, जिनकी घाटियाँ कहीं कहीं अधिक चौड़ी हैं।

एरावती (Irawady) **सालविन** (Salwin) **मीनाम** (Menam) **मीक्यांग** (Me-kiang) और **सांगको** * (Sang-Ko) बड़ी बड़ी नदियां हैं। इनमें से पहिली, दूसरी और चौथी की गिन्ती एशिया की बड़ी नदियो में है। (स्केटो और नदियों का चित्र देखो) सब ब्योपार प्रायः इन्हीं नदियो के द्वारा होता है।

८३—आब हवा के चित्रो से प्रकट है कि यह प्रायद्वीप उस भूमि मे है, जहां मानसून हवा से मेह बरसता है। यहां मेह बहुत बरसता है और गर्मी भी अधिक पड़ती है। समुद्र के किनारे गर्मी कुछ कम होती है। बहुधा स्थानो में दलदल हैं। हवा के अधिक गर्म और मर्तूब रहने के कारण यहां के लोग कड़ी मेहनत नहीं कर सकते। बुखार और पेचिश की बीमारी यहां अधिक रहती है।

८४—**पैदावार**—जो चीजें लंका में पैदा होती हैं, प्रायः वह सब इस प्रायद्वीप में भी होती हैं, जैसे चाय, क़हवा,

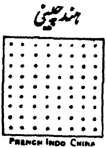
* इसको 'सांगका' भी कहते हैं।

गर्म मसाले आदि। यहां पर धान इतना अधिक पैदा होता है कि जितना संसार में और कहीं नहीं होता। इनके सिवाय रुई और शक्कर भी पैदा होती है। बेंत यहा की मुख्य पैदावार है।

८५—**खानिज पदार्थ**—सोना, रांगा, सुर्मा, नीलम, याक़ूत, मिट्टी का तेल इत्यादि हैं। जितना रांगा कुल दुनिया में निकलता है, उसका आधा इस प्रायद्वीप से मिलता है।

८६—**आबादी**—इस प्रायद्वीप की आबादी इस लिये कम है कि इसके अधिक भाग में जंगल हैं और यहां की आबहवा नीरोग नहीं है।

इन्दोचीन की औसत फ़ी



आबादी का वर्गमील

८७—**राज्यप्रबन्ध** के विचार से इस देश के तीन भाग हैं:—

(१) अंगरेज़ी राज्य (२) फ्रान्सीसी राज्य (३) स्वतंत्र रियासतें,

जिनके देश नीचे लिखे जाते हैं :—

देश का नाम	राज्य भेद	राजधानी
(१) **ब्रह्मा**	ब्रिटिश राज्य	रंगून (Rangoon)
(२) **स्याम**	स्वतंत्र	बंकाक (Bankong)
(३) **मलय की रियासतें**	ब्रिटिशराज्य की रक्षा में हैं	
(४) **मलाका के मुहाने की अंगरेज़ी बस्तियां**	ब्रिटिशराज्य,	सिंगापुर (Singapur)
(५) **कम्बोडिया**	फ्रांसीसी राज्य की रक्षा में है,	पनूमपेन (Phompenh)
(६) **कोचीन**	फ्रांसीसी राज्य,	सैगून (Saigon)
(७) **अनाम**	फ्रांसीसी राज्य की रक्षा में है,	ह्यू (Hue)
(८) **टानकिन**	फ्रांसीसी राज्य,	हनोई (Hanoi)

स्याम (Siam.)

८८— यह देश **स्याम की खाड़ी** के उत्तर में ब्रह्मा के सूबे टनासिरम से मीक्यांग तक फैला हुआ है। इस में मलाया प्रायद्वीप का आधा भाग भी शामिल है। इसके बीच में मीनम नदी बहती है, जिसके दोनों किनारों पर पहाड़ हैं।

८९—मीनम और उसकी सहायक नदियों की उपजाऊ

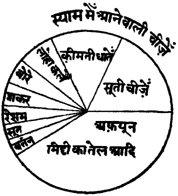
नोट ब्रह्मा का बयान हिन्दुस्तान के साथ दिया गया है।

घाटियों और पहाड़ों में साल के बन, राँगे और सोने की खानें हैं। इसी लिये यह देश बहुत धनवान है।

सुपारी, नारियल और बाँस आदि के पेड़ों के होने से यहां के गांव बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं। यहां बहुधा नदियों ही में नावों पर आना जाना होता है।

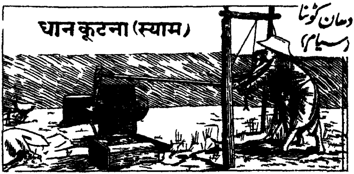
१०—मीनम नदी के डेल्टा और उसकी तराई में धान बहुत पैदा होते हैं, और लाखों मन चावल और देशों को जाता है। धान ही घोड़ों को खिलाया जाता है और धानों ही से शराब खिंचती है।

प्राचीन समय से यहां यह रीति चली आती है कि पहिले राजा आप हल चलाकर धान बोते हैं फिर किसान। इस समय देश के हर भाग से लोग इकट्ठे होते हैं और उस दिन बड़ा भारी त्यौहार मनाते हैं। सामने के पृष्ठ पर पहला चित्र इसी त्यौहार का है और दूसरे में धान की कुटाई दिखाई गई है।





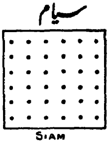

راجا کا دھان بونا (سیام)
राजा का धान बोना (स्याम)


धान कूटना (स्याम)
دھان کوٹنا (سیام)

आबादी और बाशिन्दे

६१—स्याम के असली बाशिन्दे मंगोल जाति के ताई लोग हैं। इनका रूप रंग ब्रह्मा के लोगों से मिलता जुलता है। ब्रह्मा के रहनेवालों की तरह यह लोग भी बौद्धधर्म के माननेवाले हैं और सफ़ेद हाथी की पूजा करते हैं। आसपास के देशों के लोग भी इस देश में रहते हैं।

स्याम की औसत फ़ी



आबादी का वर्ग मील।

६२—**राज्यप्रबन्ध**—यहां के राजा अपने बारह मंत्रियों की सहायता से आप राज्यप्रबन्ध करते हैं। **शान** (Shan) और **मलाया** के छोटे छोटे राज्य जो राजा के आधीन हैं वह अपना प्रबन्ध अपने आप करते हैं। यहां का राज्यप्रबन्ध बहुत दिनों तक एशिया की पुरानी रीति पर होता रहा, परन्तु अब उसमें अंगरेज़ी हाकिमों की सहायता से बहुत सुधार होगये हैं।

६३—स्याम की राजधानी **बंकाक** मीनम नदी के दहाने से कुछ ऊपर और उसके दोनों ओर बसी हुई है। दुकानें

बाँस के बीड़ो पर रहती है और घर लकड़ी के बने हुये हैं, जिनको शहतीरे गाड़कर ऊचा कर लेत है, जिसस वह बाढ में न डूब जायें।



स्याम के घर

इस देश की पुरानी राजधानी **अयूथिया** थी। यहा बौद्ध लेगो के बहुतस पुराने मदिर है। यहा सड़को के बदले नहरे और गाड़ियो के बदले नावे काम मे लाई जाती हैं। मीनम क दहाने पर जा बन्दरगाह है उससे एक छोटी रेल बकाक तक आती है।

मल्य और मलाका के मुहाने (Malay and Straits Settlements) की बस्तियां

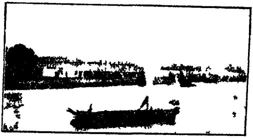
६४—इन्दोचीन का वह नुकीला भाग जो समुद्र में दूर

तक चलागया है और जिसकी शक्ल बोतल की सी है, **मलय** प्रायद्वीप कहलाता है। **क्रा** (Kra) का डमरुमध्य उसकी गर्दन है जो ३० या ४० मील से अधिक चौड़ी नहीं है। यहांके रहनेवाले अपने देश को **मलय देश** (Malya) कहते है। जैसा कि पहले लिखा गया है इसका आधा उत्तरी भाग स्याम के आधीन है और बाक़ी आधे दक्षिणी भाग मे हिन्दुस्तान की तरह कहीं तो अंगरेजी राज्य है और कहीं देशी रियासतें। **सूबा विलज़ली** (Wellesley) और ज़िला मलक्का मलाका के मुहाने की ओर ब्रिटिश राज्य के प्रसिद्ध आधीन देश हैं। **राजपूताना** के रजवाड़ों की तरह नौ छोटी छोटी रियासतें ब्रिटिश राज्य के आधीन हैं।

केदा, प्राक, जोहर प्रसिद्ध रजवाड़े है। यह हिन्दुस्तान के द्वीपसमूह के नक़्शे मे दिखाये गये हैं। प्रत्येक राज्य में एक रज़ीडंट (अंगरेज़ी हाकिम) रहता है।

१५—मलाका के मुहाने के छोटे छोटे द्वीप **पिनांग** (Penang) **सिंगापुर** (Singapur) आदि भी ब्रिटिश राज्य के अधिकार में हैं। यह द्वीप सूबा विलज़ली और ज़िला मलक्का सहित मलाका की बस्तियां (**स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट्स**) कहलाते हैं। यह बस्तियां पहिले

हिन्दुस्तान मे शामिल थी, परन्तु अब लका की तरह इनका राज्यप्रबन्ध भी एक अलग गवनर करता है । सिंगापुर राज-



मिहपुर سنگاپور

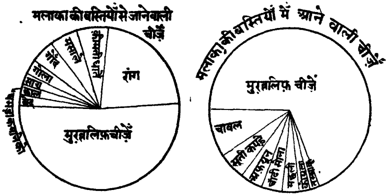
धानी है और यही सिंगापुर द्वीप का बन्दरगाह भी है। यह बस्तिया भी लका की तरह ऐतिहासिक स्थान है, क्योकि पहिले पुर्तगीजो के अधिकार मे थी फिर डचो के अधिकार मे आई जिनसे अठारहवी सदी के अन्त मे अगरेजो ने ले लीं।

१६ यह नोकीला प्रायद्वीप भी पहाड़ी है, परन्तु पहाड़ इतने ऊचे नही है जितने स्याम मे।

१७—आबहवा और पैदावार स्याम की तरह है। राँग यहा भी बहुतायत से निकलता है।

१८—यहां के खास बाशिन्दे **मलय** है, जिनमें से बहुतसे मुसलमान होगये है । इसी जाति के लोग और

इन्हींकी भाषा सुमात्रा, जावा आदि में फैली हुई है। यह लोग बहुत अच्छे मल्लाह होते हैं और मछलियां खूब पकड़ते हैं। प्राचीन समय में यह समुद्र में जाकर जहाजों को लूटते थे। यह जुआ बहुत खेलते है और मुर्ग की लड़ाई मे भी बाजी बदते हैं। यह लोग सिर्फ एक लम्बा कुर्ता पहिनते हैं। पहाड़ों में छोटे डील के हब्शी पाये जाते हैं। इनके सिवाय सूबा मदरास के कुछ हिन्दुस्तानी चीनी और अंगरेज भी हैं। चीनी बहुधा राँग की खानो में काम करते हैं और मारवाड़ियों की तरह यहां और स्याम में व्यौपार अधिकतर इन्हीं के हाथ में है। शहर सिंगापुर भी कोलम्बो की तरह हमारी सरकार के जहाजों की छावनी है और व्यौपार की बहुत बड़ी मंडी है। यहां पर भिन्न भिन्न देशों के आदमी बसते हैं। मलाया स्याम आदि का माल यहां आता है और यहांसे दूसरे देशों को जाता है। अनन्नास, केले और उष्ण कटिबन्ध के कुछ और फल यहां बहुतसे पैदा होते और दूसरे देशों को भेजे जाते हैं। मलाया प्रायद्वीप की मुख्य पैदावार बेंत है जिसकी मोटी लकड़ी के पुल बनाये जाते हैं। इसकी मेज, कुर्सियां, छड़िया और छतरी की डंडियां बनती हैं, इसलिये यह लकड़ी अधिकतर यहींसे यूरप को जाती है। नीचे के वृत्तों में इस बन्दरगाह की भिन्न भिन्न चीजों के व्यौपार का सम्बन्ध दिखाया गया है।



कम्बोडिया (Combodia)

९९- यह छोटासा राज्य आसाम के दक्षिण पूर्व और कोचीन के पश्चिम में है । किसी समय में यह एक बड़ा राज्य था, परन्तु स्याम और अनाम के राज्यों ने इसको अपनी अपनी तरफ़ दबा लिया । अब यह राज्य फ़ान्स के अधिकार में है जिसकी ओर से यहां एक रज़ीडंट (हाकिम) रहता है । इसके भीतर **तालेसप** (Talesap) नाम की एक बड़ी झील है, जिसमें मछलियां बहुतसी पाई जाती हैं । इस झील के उत्तर की ओर घने वन में एक शहर के खंडहरों से इसकी पुरानी बड़ाई प्रकट होती है । अब भी वहां एक मन्दिर बना हुआ है जिसकी दीवारों पर देवताओं



कम्बोडियाके वीरान शहर अंगकोर का मंदिर
जिसपर संस्कृत रामायण के श्लोक लिखे हैं

की मूर्त्तियां हैं और संस्कृत में रामायण के श्लोक लिखे हुये हैं। चूंकि इस मुल्क का नाम संस्कृत में कम्बोज है और यहां कुछ लोग कौक़ासी जाति के हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि किसी समय में यह हिन्दुओं की बस्ती थी। आब हवा और पैदावार वैसी ही है जैसी स्याम की। इसकी राजधानी पनूमपेन मीनम के डेल्टा के सिरे पर है, जहां इस नदी की चार धारें होजाती हैं। कम्पोत (Kampot) इसका बन्दरगाह है जहां कुछ ब्योपार होता है।

कोचीन, अनाम, टानकिन

१००–किसी समय में यह तीनों देश चीन के राज्य में शामिल थे, जिससे अलग होकर अनाम का राज्य बना। पिछली सदी में अनाम के उत्तरी और दक्षिणी भाग फ़ांसीसियों के अधिकार में आगये, परन्तु मध्य भाग पर एक राजा फ़ांसीसियों के अधिकार में राज्य करता है।

कोचीन चीन (Cochin China.)

१०१–कोचीन में मीक्यांग का डेल्टा शामिल है। यह देश भी बहुत ही गर्म है और तराई में होने से बीमारियों का घर है। यहां फ़ांस के कुछ क़ैदी बसाये गये हैं। इसकी राजधानी **सेगून** है जहा से चावल, साल आदि और देशों को जाता है। एक छोटीसी रेल की लाइन भी जारी है।

अनाम (Annam.)

१०२–अनाम की राजधानी **ह्यू** है जिसका क़िला बहुत मज़बूत बना हुआ है। अधिकतर लोग मंगोल जाति के हैं जिनके पांव के अँगूठे बहुत बड़े होते हैं। इन्दोचीन के सब लोगों में यही अधिक मैले कुचैले रहते हैं। प्रायः पूरे देश में बौद्ध धर्म फैला हुआ है। अनाम की मुर्गियां और बत्तखें बहुत अच्छी होती हैं और यूरप को जाती हैं। यह राज्य फ़ांस के आधीन है। एक रजीडंट ह्यू में रहता है।

टान्किन (Tonquin.)

१०३—फ्रान्स की यह बस्ती बहुत आबाद और उपजाऊ है। इसका किनारा दो उपजाऊ घाटियों के डेल्टा से मिला हुआ है। इस सूबे की आबहवा कोचीन से अच्छी है। धान और दूसरे मामूली अनाजों के साथ कहवा और अंगूर की खेती फ्रांसीसियो ने आरम्भ की है। संगमरमर और कोयला भी निकलता है। इनकी खानों में हजारों मजदूर काम करते है। यहांसे अंडे की जर्दी (अंडे के भीतर का पीला भाग) चमड़ा कमाने के लिये फ्रान्स जाती है। इसकी राजधानी **हनोई** सांगको नदी के किनारे यूरप के शहरों के नमूने पर बसाई गई है। इन्दोचीन के सब फ्रासीसी राज्यो के गवर्नर यहीं रहते है। टान्किन का बन्दरगाह **हाईफोङ्ग** (Haiphong.) है। इन दोनो शहरों के बीच में एक रेल जारी है।

टान्किन के रहनेवाले लकड़ी पर सुंदर बेल बूटे बनाते हैं। आबनूस पर सीप की पच्चीकारी बहुत अच्छी करते हैं।

चीन का राज्य (Chinese Empire.)

१०४—चीन का राज्य बहुत बड़ा और पुराना है। क्षेत्र-फल के विचार से अंगरेजी राज्य पहिले नम्बर, रूस का राज्य दूसरे नम्बर और चीन का राज्य तीसरे नम्बर पर है,

परन्तु आबादी के विचार से सब दुनिया मे यही अव्वल नम्बर पर है। यह राज्य इतना पुराना है कि इसके आरम्भ का कोई ठीक पता नहीं लगता। इस देश ही के इतिहास की किताबो से अब से केवल पाच हज़ार वर्ष पहिले की बातों का पता लगता है। चीन की पुरानी सभ्यता का प्रमाण यह है कि यहाके लोग यूरप से पहिले बारूद, चुम्बक, छापे का काम और नोटो के व्यौहार को जानते थे। चीन की दीवार और बादशाही नहर जो दुनिया की अनोखी चीज़ो में से हैं, इनकी पुरानी इंजीनियरी को प्रकट करती है।



चीनकी दीवार

१०५—दो हज़ार वर्ष पहिले यहा हर ज़िले में छोटे छोटे

नोट—यह दीवार लगभग ७८ हज़ार फ़ीट लम्बी और बीस से तीस फ़ीट तक ऊची है। चोडी इतना ह कि छ सवार एक लाइन मे काठे से कोठा मिलाकर इसके ऊपर चल सकते हे। सो सो गज़ की दूरी पर बुर्ज बने हुये हैं। जहा पहाड़ और नदी आगई हैं, वहा पुल बॉधकर उनके ऊपर दीवार उठाई गई है।

राजा डेढ़ चावल की खिचड़ी अलग पकाते थे, परन्तु **चीनहोंगती** ने सबको जीता । इसीके नाम पर इस राज्य का नाम चीन पड़ा ।

विस्तार

१०६—इसकी सूरत ऐसे तिकोने खेत की तरह है जिस की मेड़ें टेढ़ी हों । पामीर का प्लेटो इसका शीर्ष कोण है ।

थियानशान, अल्ताई आदि इसकी उत्तरी भुजा, क़राकुरम, हिमालय, इन्दोचीन आदि दक्षिणी भुजा और पासिफ़िक महासागर पूर्वी भुजा है । किसी समय में एशिया के आधे भाग में यह राज्य फैला हुआ था । परन्तु बहुतसे सूबे इसके हाथ से निकल गये और अब भी निकल रहे हैं । इस समय चीन राज्य का क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का लगभग तिगुना है और एशिया के चौथाई से कुछ अधिक ।

१०७—चीन के राज्य में नीचे लिखेहुये देश शामिल हैं;—

(१) **चीन ख़ास** (२) **मंचूरिया** (३) **मंगोलिया** (४) **पूर्वी तुर्किस्तान** (५) **तिब्बत** । पुराने समय में मंचूरिया, मंगोलिया और तुर्किस्तान **तातार** के नाम से प्रसिद्ध थे ।

चीन ख़ास (China.)

१०८—कुल राज्य में यह भाग बहुत उपजाऊ और अधिक

घना बसा हुआ है। इसका क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का ३/४ है।

चारों सीमायें

पश्चिम में ब्रह्मा और तिब्बत, **पूर्व** में पास्फ़िक महासागर, **दक्षिण** में चीनसागर, अनाम और स्याम और **उत्तर** में मंचूरिया और चीन की दीवार * है।

१०६–**किनारा**–इसका किनारा इस देश की बहुतसी आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस पर कई एक बन्दरगाह भी है। पीतसागर, होंगहो नदी के पास स्थल के भीतर बहुत दूरतक चला गया है जिसके सबब से **कोरिया की खाड़ी** Gulf of Korea) **पिचली की खाड़ी** (Gulf of Pechili) और **ल्यावटंग की खाड़ी** (Liao-Tung) बनगई हैं। इस भाग में डेल्टा की नई धरती समुद्र को इतना दबाती जाती है कि कुछ समय में चीन का कोरिया से मिलजाना सम्भव है। द्वीपों में केवल **हाईनन** का द्वीप चीन के अधिकार में रह गया है।

११०–**बनावट**–चीन का मुल्क पहाड़ी है। इसके पश्चिम में पहाड़ों की श्रेणियां उत्तर से दक्षिण की ओर चली गई हैं।

* सन् ईस्वी से २१४ वर्ष पहिले तातारियों को रोकने लिये यह दीवार बनाई गई थी। यह दीवार वास्तव में पृथ्वी पर एक अनोखी वस्तु है।

उत्तर में † पेलिंग और दक्षिण में † नानलिंग पहाड़ पूर्व से पश्चिम की ओर चलेगये हैं। यह दोनों पहाड़ इतने ऊंचे नहीं हैं जितने पश्चिम के, इसलिये आने जाने में कठिनता नहीं होती।

१११–**नदी**–चीन में बड़ी बड़ी नदियाँ चार हैं। **ह्वांगहो, यांगसीक्यांग, सीक्यांग** (Si King) और **पीहू** (Peho)।

ह्वांगहो–तिब्बत के डेल्टा से निकलकर पिचली की खाड़ी में गिरती है। इसका बेसिन सूबा बंगाल से तिगुना है। इसमें पहाड़ों से रामरज की तरह इतनी पीली मिट्टी मिली हुई आती है कि इसका भंडार किनारे की धरती से ऊंचा हो गया है। इसके किनारे पर बाढ़ रोकने के लिये मिट्टी के ऊंचे बाँध बनाये गये हैं। जब यह बाँध टूटते हैं, तो सैकड़ों गाँव बहजाते हैं। इसके दहाने कई बार बदल चुके हैं। किसी समय में यांगसी के डेल्टा से इसका दहाना मिला हुआ था।

यांगसीक्यांग भी तिब्बत से निकलकर चीनसागर में गिरती है। चीनियों के लिये यह नदी बहुत ही लाभकारी और उपयोगी है। इसमें कई छोटी छोटी सहायक नदियां गिरती हैं और इसकी घाटी में इससे मिली हुई बहुतसी झीलें हैं। इसके द्वारा भीतर के सूबों में माल अधिकता से आता

† चीनी भाषा में **पे** के मानी उत्तर हैं और **नान** के मानी दक्षिण।

जाता है। इसी सबब से हररोज़ सैकड़ों नावें आती जाती रहती हैं। इसके किनारे पर भी ऊंचे ऊंचे बाँध सैकड़ों मील तक बांधे गये हैं।

सीक्यांग दक्षिणी चीन की मुख्य व्यौपारिक नदी है जिसमें कई छोटी छोटी नदियां गिरती हैं।

पीहू उत्तरी चीन की मुख्य नदी है जिसपर चीन की राजधानी * **पेकिन** (Pekin) बसी हुई है।

११२—चीन का उपजाऊ **मैदान** ह्वांगहो नदी और यांगसीक्यांग का नीचे का भाग है।

(पहाड़ स्लेटो और मैदान का चित्र देखो)

इसका क्षेत्रफल सूबा बंगाल से कुछ बड़ा है। पीली मिट्टी जो पहाड़ों से इस मैदान में आती है वही इस मैदान के उपजाऊ होने का कारण है। इसी पीली मिट्टी के कारण ह्वांगहो का नाम **पीत नदी** है। (ह्वांग=पीला)—इसी सबब से जिस समुद्र में यह नदी गिरती है उसका नाम पीत सागर पड़ गया है।

इस भाग में पहाड़, नदी, मकान, ग्राम, खेत सब पीले हैं। हवा भी इस पीली मिट्टी की गर्द से पीली मालूम होती

---

* चीनी भाषा में किन=दफ्तर (कचहरी) इसलिये पेकिन का अर्थ उत्तरी राजधानी हुआ।

है। इस पीली मिट्टी के कारण यहां के राजा की पदवी **ह्वांगती** है (ती=बादशाह)। बादशाह इस पीली मिट्टी की उपजाऊ होने के कारण इतनी इज़्ज़त करता है कि राजकुटुम्ब के सिवाय प्रजा में से किसी को पीला कपड़ा पहनने की आज्ञा नहीं है। यह मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि किसानों को खाद देने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यहां के एक एकड़ की पैदावार से आठ आदमियों का निर्वाह हो सकता है।

११३–सिंचाई और माल के आने जाने के लिये पुराने समय से एक बादशाही नहर पेकिन के पास से हागचाव तक ह्वांगहो और यांगसीक्यांग को पार करती हुई झीलों से मिलती हुई और पहाड़ों को काटती हुई जारी है।

११४–**आबहवा** महाद्वीपी है। चूंकि जाड़ों में चीन के उत्तरी भाग की ओर साईबेरिया की सर्द हवा आती है, इस लिये इस भाग में इतनी सर्दी पड़ती है जितनी इंगलैंड में। पेकिन के पास की नदियाँ बर्फ़ से ढक जाती हैं। दक्षिणी भाग की आबहवा हिन्दुस्तान की तरह है।

११५–चूंकि भीतर के पहाड़ बहुत ऊँचे नहीं हैं, इस लिये वह मौसिमी हवा को नहीं रोकते। यही कारण है कि चीन के भीतरी भागों में भी बारिश होती है। मौसिमी हवा के बदलते समय किनारे पर सख़्त तूफ़ान आते हैं।

११६–**पैदावार**–शक्कर और धान तराई में; गेहूं और

मक्का इत्यादि ऊँचे मैदानों में; बांस, अफ़ीम, और रुई खुश्क हिस्मों में; शहतूत, फलियां, नारंगियां, फल इत्यादि शेष भागों में; और चाय पहाड़ों के ढाल पर पैदा होती है।

यहां पीली मिट्टी के कारण बहुत ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर भी गेहूँ पैदा होता है। कई ढेकलियों से पानी को धीरे धीरे ऊँचाई पर पहुँचाते है।

यहा दो प्रकार के वृक्ष ऐसे अनोखे होते हैं जिनसे चर्बी और गोंद की तरह गूदा निकलता है, जिससे बत्तियां बनाई जाती हैं। यहा कपूर के पेड़ भी पैदा होते है, जिनको काट कर घास के साथ देगों मे आग पर उबालते है। कुछ देर के बाद कपूर पेड़ों के पत्तों और डालियों से अलग होकर घास पर जमजाता है।

११७—**खानिज पदार्थ**—इस देश में सब प्रकार की उपयोगी और लाभदायक धातुएं लोहा, ताँबा, जस्त इत्यादि पाई जाती हैं। अच्छे प्रकार का कोयला उत्तरीय भागों में **पेकिन** के पास निकलता है, और उससे घटिया **केन्टन** के सूबे में। यूरप में जितनी कोयले की खानें हैं उनसे अधिक यहां हैं। थोड़े समय से कलों के द्वारा कोयला निकालना भी शुरू हुआ है। दक्षिण और पश्चिम के पहाड़ों में कुछ चाँदी और सोना भी निकलता है।

११८—**सफ़ेद मिट्टी**—जिससे चीनी के बर्तन बनते

हैं, चीन के मध्य भाग में बहुतायत से निकलती है।

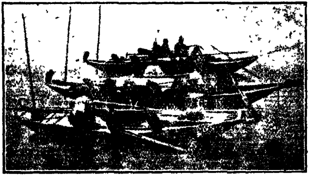
११६—**पशु**—अधिक खेती के कारण यहां फाड़ खाने वाले जानवर बहुत कम हैं। चूंकि चीन के लोग दूध नहीं पीते, इसलिये गाय बैल भी कम होते हैं। भैंसे खेती के काम में आते हैं। सूअर, मुर्गाबियां, बत्तखें इत्यादि अधिक पाली जाती हैं। चीन के घोड़े छोटे और मजबूत होते हैं।

१२०—**शिल्प और कारीगरी**—(अ) यहां के लोगो का मुख्य पेशा खेती है। किसान ऐसे मिहनती होते हैं कि खेतों में घास का एक तिनका भी नहीं रहने देते। जमीन को इतना कमाते हैं कि चिड़ियों के उड़ाने के लिय ढेला भी नहीं मिलता। हिन्दुस्तान के किसानों के विरुद्ध वह खेतों में पशुओं के खाद के सिवाय पेशाब, मैला इत्यादि भी डालते हैं।

(ब) यह लोग जिस प्रकार बाग लगाते हैं उसी तरह मछलियों के पालने के लिये तालाब भी खोदते हैं, क्योंकि लोग उनको बहुत चाह से खाते हैं। इसी कारण बहुतायत से बिकती हैं। मछलियां भिन्न भिन्न रंग की होती हैं। सुनहरी मछलियां यहींसे आती हैं।

यहां मछलियां कई तरह से मारी जाती हैं। उनमें से एक बहुत अनोखी रीति यह है। एक प्रकार की चिड़िया को इस तरह सधाते हैं कि वह पानी में डूबकर मछलियों को पकड़ लाती है और उनको बर्तनों में रखजाती

हू। इनको यह लोग नावोंपर इकट्ठा करते जाते हैं। इन चिड़ियों के गले में एक छल्ला इसलिये डाल दिया जाता है कि वह मछलियों को आप न खा जायें। जब वह बहुत मछलियां पकड़ चुकती हैं, तो कुछ मछलियां उनको भी दे दी जाती हैं।



चिड़ियां से मछलियां पकड़वाना

(स) **रेशम के कीड़े** शहतूत के पेड़ों पर पाले जाते हैं, इसी लिये यहां शहतूत के बाग अधिक लगाये जाते हैं। यहां का रेशम बहुत अच्छा होता है। इसी देश से **एशिया** के और देशों ने रेशम के कीड़ों का पालना सीखा है। यहां रेशम के कीड़े उत्तरीय चीन के जंगलों में अपने आप पैदा होते हैं, परन्तु उनका रेशम इतना अच्छा नहीं होता जितना पालतू कीड़ों का।

यूरप में एक पादरी साहब कुछ कीड़े एक पोली छड़ी के भीतर रखकर ले गये थे।



रेशम-उसका कीड़ा

१२१—पहिले पहिल चीनी मिट्टी इसी देश में मालूम हुई। प्राचीन समय से यहां के लोग इस मिट्टी के बहुत सुन्दर बर्तन बनाते हैं। थोड़े दिन हुये कि **इंगलैंड** में इसी प्रकार की एक मिट्टी मालूम हुई, परन्तु लोग उसके बर्तनों को इतना पसन्द नहीं करते जितना चीनी मिट्टी के बर्तनों को। इसी कारण चीनी मिट्टी के बर्तन और देशों को अधिक जाते हैं।

१२२—यह लोग चाय की खेती भी करते हैं। वास्तव में यही देश इस पौधे का असली घर है। इसकी खेती यहीं से और देशों में फैली है। यहां कई प्रकार की चाय और

उसकी टिकियां बनाई जाती हैं । चाय यहां का मुख्य व्यौपारिक पदार्थ है ।

क़न्दीलें और कागज़ के खिलौने बनाने और छपाई आदि के कामों में भी यह लोग बड़े निपुण हैं । हाथीदांत के काम में तो यहां के कारीगर सबसे बढ़ेहुये हैं । रंगसाज़ी और चित्रकारी में भी उनकी बराबरी कोई नहीं करसकता ।

इब्नबतूता अपने सफ़रनामे में यों लिखता है:—

"चीन के लोग बड़े शिल्पकार हैं । रंगसाज़ी और चित्रकारी में भी इनके समान और कोई नहीं है" ।

"मैंने एक अनोखी बात देखी । एक नगर में मुझे आये हुये दस मिनट भी नहीं बीते थे अर्थात् नगर में घुस ही रहा था कि मैंने अपने और अपने साथियों के चित्र गलियों और बाज़ारों में लगे हुये देखे" ।

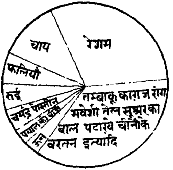
१२३—रेशम और रेशमी कपड़े हाथ से काते और बुनेजाते हैं, जैसा कि इस चित्र से प्रकट है । थोड़े दिन से यूरप और जापान के लोगों ने कपड़े बुनने के लिये कुछ कलें जारी की हैं ।



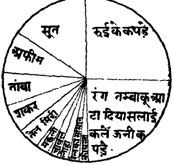
१२४–आने जाने के रास्ते–इस देश में अभी आने जाने के रास्ते ऐसे अच्छे नहीं हैं, जैसे और सभ्य देशों में। सड़कें बहुधा कच्ची और छोटी हैं। उन पर छोटे छोटे ठेले और इक्के चल सकते हैं। ऐसी सड़कें भी केवल उत्तरीय भाग में ही हैं। देश के भीतर व्यौपार का माल नदियों और नहरों के द्वारा आता जाता है। नदियों का बहाव ऊपर की ओर तेज होने के कारण चीज़ों के लाने और लेजाने में खर्च अधिक पड़ता है। इसका असर इस देश से जानेवाली और दूसरे देशों से आनेवाली चीजों पर पड़ता है। अब यूरप वालों की कोशिश से रेल की कुछ सड़कें बनगई हैं और बन रही हैं। एशिया का पूरा नक़्शा देखो जो रेलें जारी होने वाली हैं वह कम काली हैं।)

१२५—व्यौपार—इस देश के भीतर जितना व्यौपार होता है, उतना व्यौपार यहां की चीजों का और देशों के साथ नहीं होता। नीचे के वृत्तों से यह मालूम होता है कि यहांसे कौन कौनसी चीजें और कितनी कितनी बाहर जाती हैं। कौन कौनसी चीजें और कितनी कितनी और देशों से यहां आती हैं। हिन्दुस्तान से अफ़ीम और कपड़ा चीनको बहुत जाता है।

चीनसेजानेवालीचीज़ें

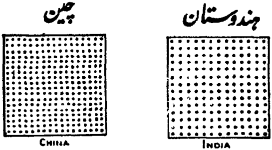


चीनमेंआनेवाली चीज़ें



१२६—यहां चाँदी और सोने के सिक्कों का इतना चलन नहीं है जितना हिन्दुस्तान में। तांबे के पैसों में छेद बने होते हैं। दुकानदार उन पैसों को सुतली में पिरो कर लटकाये रखते हैं। कीमती चीजों के लिये पैसों के ढेर लेने देने पड़ते हैं। कुछ चीजों के लिये चाँदी की डली भी दी जाती है। अब चाँदी और सोने के सिक्के चलाने की कोशिश हो रही है।

१२७–**आबादी**–जितनी घनी आबादी इसके उपजाऊ मैदान की है, उतनी पृथ्वी पर और किसी देश की नहीं है। इन वर्गों में चीन और हिन्दुस्तान की आबादी का मुक़ाबिला किया गया है।



आबादी का दसवाँ हिस्सा सदा नावों ही पर रहता है।

१२८–आबादी के अधिक होने के कारण चीनी लोग **हिन्दुस्तान के पूर्वी द्वीपसमूह,** आस्ट्रेलिया, अफ़्रीक़ा, और अमेरिका आदि में जाकर बसगये हैं। वह उन देशों में या तो व्यौपार करते हैं या खानों में काम करते हैं।

१२९–**बाशिन्दे**–इस देश के असली बाशिन्दे बहुधा पहाड़ों में पायेजाते हैं। चीनी और मान्चू और भागों में रहते हैं। मान्चू **मंचूरिया** के रहनेवाले हैं जो चीन को जीतकर यहां बसगये। यहा जाति पाँति का कुछ भेद नहीं है, मानों उनका विचार यह है कि–

" जाति पाँति मानै नहिं कोई ।
हरि को भजे सो हरि का होई ॥ "

१३०—खाना पीना—चावल और मछली चीनियों का मुख्य भोजन है । यह गाय बैल का मांस नहीं खाते । इसके सिवाय दुनिया में बिरली ही चीज़ ऐसी होगी जिसे वह न खाते हों, यहां तक कि निर्धन लोग तो कुत्ते का मांस भी खा जाते हैं । अबाबील के घोंसलों की यहां इतनी क़दर है कि लोग उनका शोरबा बनाते हैं । ग़रीब लोग टिड्डी और रेशम के कीड़ों को भी खा जाते हैं ।

यहां के लोग बाँस के बने हुये कांटे और चमचे से खाते हैं, जैसी कि नीचे के चित्र से प्रकट है ।



१३१–चावल की शराब यहां भी बनती है, परन्तु वह विवाह या त्यौहार पर पी जाती है। यह लोग चाय इतनी अधिक पीते हैं कि हिन्दुस्तान के ख़्वांचे बेचनेवालों की तरह वहां चाय बेचनेवाले हर गली और कूंचे में फिरते रहते हैं। कोई चीनी ठंडा पानी नहीं पीता या तो वह चाय पीता है या गर्म पानी।

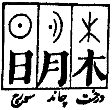
१३२–यह लोग चंडू पीने और अफ़ीम खाने के इतने शौक़ीन हैं कि वहा हजारों मन अफ़ीम हिन्दुस्तान से जाकर बिकती है। इस बुरी लत को छोड़ने के लिये चीनी लोग अपने आप कोशिश कर रहे हैं और हमारी सरकार अपनी हानि करके उनकी सहायता कर रही है, यानी दिन पर दिन हिन्दुस्तान में अफ़ीम की खेती कम की जा रही है।

१३३–**वस्त्र** (पोशाक)–चीनी ढीले ढाले वस्त्र पहनते हैं। चीनी औरतों के कपड़े मेमों के कपड़ों से कुछ मिलते जुलते हैं। अँगरखे के बदले अब कोट का रिवाज फैल रहा है, परन्तु वह बहुत लम्बा होता है। सिर को आगे की ओर मुंडा हुआ रखते हैं और पीछे बहुत लम्बी चोटी होती है (पृष्ठ १०५, १०६ के चित्रों को देखो)। साधारण लोग भी एक या दो कमरों को चित्रों या सदाचार के लेखों से अच्छी तरह सजाये रखते हैं। मेज कुर्सियां आदि भी होती है। धनी पुरुषों के घरों के सिवाय और लोगों के घरों में चहारदीवारी नहीं होती।

१३४–**स्वभाव**–चीनी लोग सोच समझ कर खर्च करनेवाले, समझदार, मिहनती, सदाचारी और मिलनसार होते हैं। दूसरों से वह इतनी घिन करते हैं कि अपने देश और धर्म के सामने न तो किसी और देश के लोगों को पसन्द करते हैं, न उनसे मिलना ही चाहते हैं और न उनके साथ खाना खाते हैं। जो चीनी अन्य देश में जाता है वह भी सब से अलग रहता है और अपने ही देश में आकर मरना चाहता है।

चीनवालों ने यूरप के लोगों को कई लड़ाइयों के बाद अपने बन्दरगाहों में व्यौपार करने की आज्ञा दी है। अगर यह पुराने ढंगों पर लट्टू न रहते और अन्य जातियों से घिन न करते, तो यूरपवालों की तरह आज कल के शिल्प और कारीगरी में बहुत उन्नति कर गये होते। अब थोड़े समय से यह अपनी इस कुटेव को छोड़ रहे हैं और अपने देशों में कलें और रेल आदि जारी कर रहे हैं। हर साल सैकड़ों विद्यार्थी अन्य देशों में शिक्षा पाने के लिये जाते हैं।

१३५–**भाषा और शिक्षा**–चीनी भाषा सब से निराली है। इसमें वर्णमाला ही नहीं। हर एक वस्तु और विचार के लिये अलग अलग चिह्न हैं। ऐसे शब्दों की संख्या कई हजार है।



हर सूबे की भाषा अलग है जैसे उत्तरीय चीन में नदी को "हो" कहते हैं और दक्षिण में "क्यांग"। इन कारणों से और देश के लोगों को इन भाषा के सीखने में बहुत कठिनता होती है। लिखना हर जगह एकसा है, परन्तु लिखते समय लकीरें ऊपर से नीचे को खड़ी लिखी जाती हैं।

१३६—सात आठ वर्ष पहिले यहां के देहाती मदरसे हिन्दुस्तान की चटशालाओं के समान थे, परन्तु अब सरकारी स्कूलों की तरह शिक्षा देने की रीति जारी होगई है।



प्राचीन काल से सरकारी नौकरी इम्तिहान पास करने पर मिलती है, और ऐसा ढंग रक्खा गया है कि गरीबों के लड़के भी अपनी योग्यता के कारण बड़ी बड़ी जगहों पर पहुँच जाते हैं। अन्तिम परीक्षा मे किसी विषय पर प्रबंध लिखाया जाता है। इसमें इतनी चौकसी की जाती है कि हर एक विद्यार्थी अलग कमरे में बन्द कर दिया जाता है और चारों ओर पहरा रहता है। चूंकि यहां किसानों के बाद पढ़े लिखे लोगों का ही अधिक मान होता है, इस लिये पढ़े लिखे आदमियों की संख्या अधिक है। प्रायः हर गाँव में पाठशाला होती है *।

१३७—**धर्म**—चीन मे मुख्य मत दो हैं। पढ़े लिखे लोग **प्रसिद्ध विद्वान् कनफ्यूशस** की सदाचार की शिक्षाओं को (सत्य बोलना, पित्रों का मान करना आदि) मानते हैं। यह हकीम सन् ईस्वी से ५०० वर्ष पहिले पैदा हुआ था। इसने लोगों के आचरण और स्वभाव के सुधारने में बहुत उद्योग किया था। इसकी पूजा के लिये हर नगर में मन्दिर बने हुये हैं।

* चीनी भाषा में भिन्न भिन्न विषयों पर बहुतसी पुस्तकें हैं।



चीन का प्रसिद्ध विद्वान् कनफ्यूशस

इसकी सदाचार की शिक्षायें तख़्तियों पर लिखी हुई हर घर में लटकी रहती हैं। पढ़ना शुरू करने से पहिले हर लड़का इस तख़्ती के सामने सिर झुकाता है।

(२) अधिकतर लोग बौद्ध धर्म के माननेवाले हैं। बौद्ध धर्म के साधुओं को **लामा** कहते हैं, जिनका चित्र नीचे दिया गया है।



यहां मन्दिरों में एक पहिये पर बौद्ध धर्म की मुख्य मुख्य बातें खुदी होती हैं। इसका घुमाना पुण्य समझाजाता है। चीन का प्रसिद्ध विद्वान् यात्री **ह्यूनशांग** बारह वर्ष तक हिन्दुस्तान में रहा। वह संस्कृत पढ़ कर बौद्ध धर्म की बहुतसी पुस्तकों का अनुवाद चीनी भाषा में करके उनको अपने साथ चीन लेगया। उसकी यात्रा के वृत्तान्त से हिन्दुस्तान का अब से सत्ताईस सौ वर्ष पहिले का हाल मालूम होता है।

१३८–चीनी अपने पित्रों की पूजा को भी धर्म समझते हैं। अपने मा बाप का बहुत मान करते है। हर घराने में एक तख़्ती लटकी रहती है जिस पर पुरुषाओं के नाम और मरने की तारीख लिखी रहती है। हर साल एक ख़ास तारीख को मरघट में जाकर समाधि पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। यह लोग मंत्र, तंत्र आदि को भी मानते हैं। देवी और देवताओं को भी पूजते हैं। भूत प्रेत से इतने डरते हैं कि उन से बचने के लिये अपने द्वारो पर भयानक चित्र बनाकर लटका देते हैं।

मुख्य मुख्य रीतियां

१३९–चीन में तारीख गिनने की अनोखी ही रीति है। हर राजा के गद्दी पर बैठने के दिन से एक नया सन् शुरू होता है। इस कारण सन् के संग राजा का नाम अवश्य लिखना होता है।

चीन के धनी लोग अपने घर के वैद्य को माहवारी तनख़्वाह देते हैं। परन्तु जब घर में कोई बीमार पड़ जाता है, तो वैद्यजी की तनख़्वाह बन्द कर दी जाती है। इससे यह लाभ है कि वैद्य उनको हमेशा नीरोग रखने का प्रयत्न करता रहता है।

१४०-इस देश में स्त्रियों के **पाँव छोटे होना** उनकी सुन्दरता समझी जाती है। अमीरों की लड़कियों के पाँव के पंजे बचपन ही से एक तरह के लोहे के जूते में कस दिये जाते हैं जिससे उनको महीनों बड़ा कष्ट रहता है। जवान होने पर उनके पाँव केवल ४ इंच रह जाते हैं, इस लिये वह उचक उचक कर चलती हैं।



मान्चू स्त्रियों में यह रीति नहीं है। चीनियों में भी इस के बन्द होने की कोशिश हो रही है।

१४१-धनी लोग अपने दायें हाथ के नाख़ून इस लिये नहीं कटवाते कि वह मज़दूर न समझे जायें, परन्तु अब यह रिवाज भी बहुत कम होगया है।



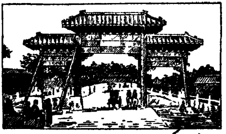
१४२—ग़रीब लोग जो अधिक बच्चों को नहीं पाल सकते, वह लड़कियों को पैदा होते ही एक मकान में रख आते हैं जहां वह मर जाती हैं। चीन की नीति में यह अपराध नहीं समझा जाता।

बहुधा लोग अपने पुरुषाओं की लाश को मसाला लगा कर कई दिनों या महीनों तक घरों में रक्खे रहते हैं। फिर क़बरिस्तान में ले जाकर गाड़ देते हैं। यह रिवाज स्याम और इन्दोचीन के और देशों में भी है।

इस देश में सब देशों से उलटी रीति यह है कि बूढ़े और जवान तो पतंग उड़ाते हैं पर बच्चे उससे रोके जाते हैं।

१४३–प्रसिद्ध नगर—नगरों की संख्या और आबादी के विचार से **एशिया** में चीन सब से बढ़कर है। यहां कई शहर ऐसे हैं जिनकी आबादी **मदरास** की आबादी से अधिक है। एक एक लाख आबादी के शहर बहुतसे हैं।

दिल्ली की तरह **पेकिन** (Pekin) भी यहां की पुरानी राजधानी है। सन् ईस्वी से एक हजार वर्ष पहिले से आज तक यह शहर किसी न किसी बादशाह की राजधानी रहा है। कभी यह दिल्ली की तरह राजधानी नहीं भी रहा है। इस नगर के चारों ओर भी दिल्ली की तरह दीवार बनी हुई है जिसमें नौ बड़े सुन्दर दरवाज़े हैं। इस नगर के दो भाग हैं। एक भाग में मान्चू लोगों के घर, राजभवन, कचहरियां और दूसरे भाग में चीनी बसे हुये हैं। दोनों के बीच में दीवार बनी हुई है। यह नगर साफ़ सुथरा नहीं है। सड़कों पर गर्द अधिक रहती है।



दरवाज़ा (पेकिन) (دروازہ (پیکن

जाड़े में ऐसे ज़ोर की सर्दी पड़ती है कि पीहू नदी बर्फ़ से ढकी रहती है ।

टिनटिसेन (Tientsin) पेकिन का बन्दरगाह है, जहां यूरप के राजदूत रहते हैं ।

नानकिन (नान=दक्षिण + किन=कचहरी–Nankin) का अर्थ दक्षिण की कचहरी है । यह नगर यांग्सी क्यांग नदी के किनारे पर बसा हुआ है । पहिले यह चीन की राजधानी थी । बनारस की तरह यह भी विद्या का केन्द्र है । यहां बारह हजार के लगभग विद्यार्थी हर वर्ष परीक्षा देने के लिये इकट्ठे होते हैं ।

हां कौ (Han kau) में कई नहरें आकर मिली हैं । पेकिन से यहां तक रेल भी आई है । यह नगर चाय की मुख्य मंडी है ।

शंघाई (Shanghai) यांग्सीक्यांग नदी के दहाने पर बहुत प्रसिद्ध व्यौपारिक मंडी और बन्दरगाह है । इस बन्दरगाह से और देशों में जानेवाली चीज़ें चाय और रेशम हैं । यहां से यांग्सीक्यांग के किनारों पर बसे हुये और शहरों को बराबर नावें जाती रहती हैं । **निंगपू** के बन्दरगाह में कुछ शिल्पकारी भी होती है ।

फूचू (Fuchu) का बन्दरगाह मध्य में है । यहां से चाय और देशों को जाती है ।

अमवाय (Amoy) का बन्दरगाह पृथ्वी के अच्छे बन्दरगाहों में से है। यहांसे खास चीजें जो और देशों को जाती हैं, चाय और शक्कर हैं।

कान्टन (Canton) सीक्यांग नदी के दहाने पर प्राचीन समय से प्रसिद्ध बन्दरगाह है। पहिले इसी स्थानपर चीनवाले दूसरी जातियों से व्यौपार करते थे। यह नगर शिल्प और कारीगरी के लिये प्रसिद्ध है, क्योंकि यहां पर रेशम, कागज, चीनी मिट्टी, रंगसाज़ी इत्यादि का बहुत अच्छा काम बनता है। यहां हजारों आदमी नावों पर नदी में रहते हैं। हिन्दुस्तान से अफ़ीम अधिकतर इसी बन्दरगाह में आती है।

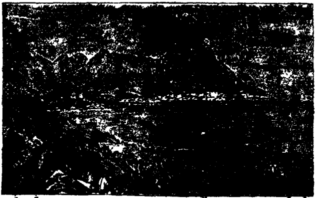
१४४–**इतिहास और राज्यप्रबन्ध**–ऊपर लिखा जा चुका है कि सन् ईस्वी से २२१ वर्ष पहिले **चीन ह्वांगती** ने चीन के राज्य की नींव डाली और उसीने चीन की दीवार बनाई। उसके मरने के बाद कभी मंगोलिया के तातार और कभी चीनी इस देश में राज्य करते रहे। सन् १६४३ ई० में चीनी आपस में लड़ने झगड़ने लगे। एक पक्ष ने मंचूरिया के एक तातारी रईस को बुलाया, जो वहां के लड़ाई झगड़े को दूर करके आप राजा बन बैठा। सन् १९११ ई० तक इसीका वंश राज्य करता रहा। मांचू

बादशाहों ने चीन के लोगों को आज्ञा देकर लम्बी चोटियां रखवाई, इसलिये कि दोनों जातियों में भेद रहे ।

सन् १९१२ ई० में चीनियों ने पिछले मांचू बादशाह को गद्दी से उतार दिया । अब वहांका राज्यप्रबन्ध एक पंचायत करती है । कुल देश के १८ भाग हैं और हर भाग का प्रबन्ध एक राज्यप्रतिनिधि (सूबेदार) करता है ।

चीनी लोग प्राय: अपने महाराज को ईश्वर का पुत्र कह कर पुकारते हैं ।

चीन में और देशों का अधिकार



हांग कांग

(१) **ब्रिटिश राज्य-हांगकांग** का द्वीप सन् १८४२ ई० में मिला । चीन के लोगों ने हिन्दुस्तान से

भेजे हुये अफ़ीम के सन्दूकों को समुद्र में फिकवा दिया था, इस पर लड़ाई छिड़ गई और चीनियों ने हारकर यह द्वीप हमारी सरकार को दे दिया।

यह द्वीप कान्टन नदी के पूर्व में है और इसमें पहाड़ अधिक हैं। सिंहापुर की तरह यह भी जहाज़ों की छावनी और बड़ी मंडी है। यहां का राज्यप्रबन्ध भी सिंहापुर की तरह है। यहां के व्यौपारी करोड़ों रुपये का माल मोल लेते और बेचते हैं।

पीले सागर के किनारे पर **वे हाई वे** (Wei-Hai-Wei) का बन्दरगाह भी अंगरेज़ी राज्य के अधिकार में है।

लगभग ३०० वर्ष से **मकाव** (Macao) का बन्दरगाह **पुर्तगाल** वालों के पास है।

कियाऊ चाऊ (Kiao-chau) का बन्दरगाह **जर्मनी** के अधिकार में है।

हाईनन द्वीप के सामने का बन्दरगाह **फ़्रान्सीसियों** के अधिकार में है।

पोर्ट आर्थर का बन्दरगाह पहिले **रूसियों** के पास था, परन्तु सन् १९०५ ई० में उसको **जापान** ने ले लिया।

प्रश्न

१—चीन का राज्य स्थापित (क़ायम) होने से

पहिले इस देश की क्या दशा थी ? इस देश का नाम चीन क्यों पड़ा ?

२—चीन के राज्य का पुराना इतिहास क्या है ? वहांकी सभ्यता के विषय में तुम क्या जानते हो ?

३—चीन के राज्य में कौन कौनसे देश शामिल हैं ! क्षेत्रफल और आबादी के विचार से पृथ्वी के राज्यों में यह किस दर्जे का है ?

४—चीन के राज्य में एशिया का कितना भाग शामिल है ?

५—मुख्य चीन का विस्तार और उसकी चारों सीमायें बताओ। चीनी दीवार कब और किस लिये बनाई गई ?

६—चीन देश के धरातल की बनावट का हाल बताओ।

७—चीन के किनारों का हिन्दुस्तान और इन्दोचीन के किनारों से मुक़ाबिला करो।

८—चीन के मुख्य पहाड़ और नदियों के नाम बताओ। चीन की बड़ी नदियों का ढाल किस तरफ़ है ? चीन की किस नदी में बहुत दूरतक माल आ जा सकता है ?

९—ह्वांग हो क्या है ? उसका यह नाम क्यों पड़ा ?

१०—नक़्शा देख कर चीन की कोई सी दो झीलों के नाम बताओ।

११–चीन के दक्षिण पश्चिम में कौन कौनसे खेटो, पहाड़ और नदियां हैं ? नक़्शा देखकर उनके नाम बताओ।

१२–चीन में कौन कौनसे प्रायद्वीप हैं ? उनमें या उन के पास कौन कौनसे बन्दरगाह हैं ?

(नक़्शा देखने की आज्ञा है)

१३–चीन की बड़ी नदियां हिन्दुस्तान की बड़ी नदियों से क्यों अधिक लम्बी हैं ?

१४–चीन का कौनसा भाग अधिक आबाद है और क्यों ?

१५–चीन के मैदान का विस्तार और उसके उपजाऊ होने का कारण बताओ।

१६–चीन की आबहवा कैसी है ? कान्टन और कलकत्ते की आबहवा का अन्तर दिखाओ।

१७–पेकिन और जिब्राल्टर एक ही अक्षांश रेखा के लगभग हैं, परन्तु पेकिन में इंगलैंड की तरह अधिक सर्दी पड़ती है-इसका क्या कारण है ?

१८–चीन के किस भाग में धान और किस भाग में गेहूं पैदा होता है और क्यों ? चीन के किस भाग में मक्का, ज्वार आदि पैदा होती हैं ?

१९–चीन की मुख्य खानिज और वनस्पति संबन्धी पैदावार क्या क्या हैं ?

२०—किन किन चीजों की खेती चीन से एशिया के और भागों में फैली है ?

२१—चीन किस पैदावार के लिये पुराने समय प्रसिद्ध है ?

२२—ह्वांगहो नदी का दहाना क्यों बदलता रहता है और इसके किनारे बन्द बाँधने की आवश्यकता क्यों है ?

२३—किस प्रकार की कारीगरी के लिये चीन प्राचीन समय से प्रसिद्ध है ?

२४—चीन में आने जाने के रास्ते क्या क्या हैं ? इस देश से और देशों को जानेवाली चीजें कौन कौनसी हैं ?

२५—चीन के प्रसिद्ध बन्दरगाह कौन कौनसे हैं ? वहां से कौन कौनसी चीजें आती जाती हैं ?

२६—चीन में किस जाति के लोग रहते हैं ?

२७—चीनी बहुधा और देशों में बसे हुये हैं—इसका क्या कारण है ?

२८—चीन में कौन कौनसे मुख्य मत हैं ?

२९—प्राचीन समय के किस चीनी यात्री के लेख से भारतवर्ष के पुराने हालात मालूम होते हैं ?

३०—चीनियों के यहां मछलियां पकड़ने की अनोखी रीति क्या है ?

३१—चीन के प्राचीन काल से सभ्य होने पर भी वहां

के लोगों ने वर्तमान शिल्प और कारीगरी में कोई उन्नति नहीं की—इसका क्या कारण है ?

३२—चीन में लेन-देन के लिये किस प्रकार के सिक्के हैं ?

३३—चीन का राज्यप्रबन्ध और शिक्षा का ढंग लिखो।

३४—कनफ्यूशस कौन था ? उसकी शिक्षा का क्या असर पड़ा है ?

३५—हांगकांग का द्वीप हमारी सरकार के अधिकार में कैसे आया ?

३६—चीन का सब से पुराना बन्दरगाह कौनसा है जो यूरपवालों के अधिकार में आया ?

३७—ग्रेटब्रिटन, फ्रांस और जर्मनी का चीन में किन किन स्थानों पर अधिकार है ?

३८—चीन का कौनसा द्वीप और बन्दरगाह जापान के अधिकार में है ?

३९—चीन की आबादी का दशवाँ भाग नावों पर रहता है। इसका क्या कारण है ?

४०—नीचे लिखे हुये स्थान क्या हैं और किस लिये प्रसिद्ध हैं ?

नानकिन, पीलिंग, सीक्यांग, वेहाई वे, हांगकौ, टिनटीसेन, क्याव क्यांग, पिचली, अमबाय, लिंगपू, पीहू, शंघाई।

मंचूरिया

१४५—यह देश चीन के अधिकार में है । इसके पश्चिम में खंगान पहाड़ की श्रेणी, पूर्व में साईबेरिया, उत्तर में अमूर नदी और दक्षिण में कोरिया का प्रायद्वीप है ।

१४६—**बनावट और आबहवा**—चीन की तरह यह देश भी पहाड़ी है । इसमें कुछ छोटी नदियां हैं जो इसे सींचती हैं । उनमें से **अमूर** की एक सहायक नदी **सुंगेरी** (Sungeri) प्रसिद्ध है, क्योंकि प्राचीन काल से मंगोल जाति के लोग इसी राह से चीन पर चढ़ाई करते थे । दक्षिणी भाग की घाटियां उपजाऊ हैं । जाड़े में कड़ाके की सर्दी पड़ती है । अमूर नदी कई महीनों तक बर्फ़ से ढकी रहती है । जाड़े में यहां के लोग भाड़ की तरह चूल्हा बनाकर उसके नीचे आग जलाते हैं और ऊपर सोया करते हैं ।

पैदावार—इस देश के उत्तरीय भाग के पहाड़ों पर घने जंगल हैं, जहां से शहतीर लिये जाते हैं । जई, बाजरा, मक्का, ज्वार आदि मुख्य पैदावार हैं, जिनसे लोगों का निर्वाह होता है । यह अनाज अप्रैल में बोये और सितम्बर में काटे जाते हैं ।

बाशिन्दे—जैसा कि ऊपर लिखा गया है यहांके लोग मांचू हैं । ये लोग बड़े बहादुर और मजबूत होते हैं । यहां

इसी वंश का राज्य सन् १९११ ई० तक रहा। इस देश में कुछ चीनी भी बसे हुये हैं और बसते जाते हैं। यहां भी बौद्ध धर्म फैला हुआ है। यहां के लोगों का मुख्य पेशा खेती है।



मांचू अमीर और उसके बाल बच्चे।

किरन * राजधानी है।

मोकडन मांचू लोगों का तीर्थस्थान है।

चूंकि रूस से साईबेरिया होती हुई रेल पोर्ट आर्थर तक आई है, इस लिये मंचूरिया से रूसियों का भी कुछ संबन्ध है। शहतीरों और खालों का कुछ व्योपार होता है।

---

* गिरन या क्रेव्यूला कहना अशुद्ध है।

प्रश्न

१–मंचूरिया की सीमा और उसकी बनावट लिखो।

२–इस देश की पैदावार क्या है ? यहासे कौन कौनसी चीजें और देशों को जाती हैं ?

३–सुन्‌गेरी, मोकडन, हार्बन क्या हैं और किस लिये प्रसिद्ध हैं ?

४–मंचूरिया से किन किन राज्यों का सम्बन्ध है ?

५–मंचूरिया की आबहवा कैसी है ? यहां धान क्यों पैदा नहीं होता ?

६–मंचूरिया के लोग किस जाति के हैं और उनका मत क्या है ?

मंगोलिया

१४७–मंगोलिया का क्षेत्र मंचूरिया से तुर्किस्तान तक फैला हुआ है। यह देश चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है और क्षेत्रफल में मुख्य चीन के बराबर है। यह देश हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध बादशाह अकबर के पुरुषाओं का घर है। एशियाई रूम के तुर्क भी इन्हीं लोगों के भाई बन्धु हैं। मंगोलिया के रहनेवाले **मंगोल** कहलाते हैं। फ़ार्सी में मंगोल को **मंग़ोल** या **मुग़ल** कहते हैं। इस देश का नाम **तातार** भी है। इस कारण यहां के रहनेवाले

तातारी भी कहलाते हैं। पांचवीं सदी में इस देश की कुछ जातियां "**तुर्कोई**" के नाम से प्रसिद्ध हुईं। इसीसे तुर्क शब्द बना है। अब से आठ सौ वर्ष पहिले यहां के मंगोल या मुग़ल एशिया के सब बलवान राज्यों को (चीन, हिन्दुस्तान आदि) जीतकर यूरप के पूर्वी भाग तक पहुँच गये थे। इनका सरदार **चंगेज़ खां** जो चीन को जीत कर वहांका बादशाह कहलाया, मुसलमान नहीं था। खां मंगोल के सरदारों की पदवी थी। इन लोगों का राज्य चीन में १०० वर्ष और हिन्दुस्तान में ३०० वर्ष तक रहा। **तैमूर लंग** जिसने १४ वीं सदी के अन्त में दिल्ली पर चढ़ाई की थी मुग़ल था।

१४८—**बनावट और आबहवा**।—मंगोलिया का अधिकतर भाग रेगिस्तान है। कुछ भागों में इतना मेह बरस जाता है कि घोड़ों, भेड़ों और ऊंटों के लिये घास हो जाती है। यहां गर्मियों में बहुत गर्मी और जाड़ों में अधिक सर्दी पड़ती है।

१४९—**बाशिन्दे**—चंगेज़ खां के समय में यहां के मंगोल घोड़े की सवारी और लड़ाई के कामों में जैसे होशियार और दिलचले थे, अब वैसे नहीं रहे। इन्होंने घर बना कर बसना अब भी नहीं सीखा और अलग अलग दल बना कर घूमते रहते हैं। अब इन लोगों में इतना मेल

जोल नहीं है जितना कि पहिले था। इनके यहां अतिथि-सत्कार * की पुरानी रीति अब तक जारी है।



منگول عورت

मंगोल औरत।

१५०—कुछ लोग साईबेरिया की सीमा पर नाम के लिये बसे हुये हैं और थोड़ी बहुत खेती भी करते हैं, नहीं तो सब ऊनी डेरों में रहते हैं। भेड़, बकरियां और घोड़े पाल कर अपना निर्वाह करते हैं। घोड़ियों का दूध भी पीते हैं और इसी दूध की शराब भी बनाते हैं। जहां चारा मिल

* पाहुनों का आदर करना।

जाता है वहां कुछ दिन तक रहते हैं, फिर और जगह चले जाते हैं। यह लोग बहुत मैले कुचैले रहते हैं।

१५१–यह लोग भी बौद्ध धर्म के माननेवाले हैं, परन्तु इनके यहां मुर्दे बहुत कम जलाये जाते हैं। अधिकतर लोग लाशों को जंगल में छोड़ आते हैं, जहां उनको जीव जन्तु खा जाते हैं।



मुगलों का क़ाफ़ला مغلوں کا قافلہ

१५२–**शिल्प** और **कारीगरी**–इस देश में कोई मुख्य कारीगरी नहीं है। बहुतसे लोग चीन से साईबेरिया को ऊंटों पर माल (विशेषकर चाय) ले जाते हैं। ऊंटों का पुराना रास्ता **पेकिन** (Pekin) से **कलगान** (Kalgan) होता हुआ **उर्गा** (Urga) तक है। यहांसे एक रास्ता **क्याख्ता** (Kiakhta) को जो साईबेरिया में है चलाजाता है। यहां साईबेरिया के लोग समूर और काकुम के बदले चीन की चाय और रेशम मोल

लेते हैं। दूसरा रास्ता **जुंगेरिया** (Zungaria) के सूबे में **कोब्दो** होता हुआ यूरप को चला जाता है। इसी रास्ते से चीन की चाय यूरप में जाती है।

(एशिया के पूरे नक़्शे में इन रास्तों को देखो)

वास्तव में थियानशान पहाड़ से मंगोलिया के दो भाग होजाते हैं। जुंगेरिया का सूबा पूर्वी तुर्किस्तान से अधिक उपजाऊ है। **तुर्फ़ान** (Turfan) और **कुल्जा** (Kulja) मुख्य नगर हैं। पहिले शहर में पैंठ लगती है और अच्छा व्यौपार होता है। **उर्गा** मंगोलिया की राजधानी है। यहां हर साल एक मेला होता है जहां अच्छा व्यौपार होजाता है।

प्रश्न

१—मंगोलिया किस प्रकार का देश है? उसकी चारों सीमायें बताओ। नक़्शा देखकर इस देश का अक्षांश और देशान्तर बताओ।

२—किस पहाड़ से मंगोलिया के दो भाग होते हैं? उन भागों के नाम क्या हैं? हर भाग की बनावट लिखो।

३—मंगोल और मुग़ल में क्या भेद है? इस देश का हिन्दुस्तान से मुख्य सम्बन्ध क्या है?

४—मंगोलिया के लोग घर बनाकर क्यों नहीं रहते? इनका पुराना धर्म क्या है?

५—जुंगेरिया पूर्वी तुर्किस्तान से क्यों अधिक उपजाऊ है ?

६—चीन से रूस को कौन कौनसी चीजें अधिकतर जाती हैं और किस रास्ते से ?

७—उन जगहों के नाम बताओ जहां साईबेरिया के लोग और मंगोल आपस में अपने अपने माल का लेन, देन करते हैं।

८—प्राचीन समय में यहांके लोगों का एशिया और यूरप के और देशों पर क्या असर पड़ा ?

९—कलगान, उर्गा, तुर्फान, कुल्जा, क्याख्ता क्या हैं और क्यों प्रसिद्ध हैं ?

चीनी तुर्किस्तान

१५३—**बनावट और आबहवा**—यह देश तीन ओर घोड़े की नाल की तरह **पामीर, क्यूनलुन** और **थियानशान** पहाड़ों से घिरा हुआ है, और एक ओर **गोबी** के **रेगिस्तान** से मिला हुआ है। इसके धरातल से मालूम होता है कि यह किसी समुद्र या झील का भरा हुआ मरुस्थल है। चूंकि यहा तुर्क जियादा रहते हैं, इस लिये इसका नाम तुर्किस्तान पड़ा। मेह यहां भी नहीं बरसता। गर्मियों में अधिक गर्मी और जाड़ों में अधिक सर्दी पड़ती है। बर्फ से ढकी हुई चोटियों से जो थोड़ीसी नदियां निकलती हैं, उनसे इस मरुभूमि का कुछ भाग हरा

भरा है। केवल उन्हीं नदियों के किनारे कहीं कहीं कुछ पेड़ पाये जाते हैं और खेती भी होती है।

रेतीले मैदानों में पृथ्वी का जो हरा भरा भाग पाया जाता है उसे ओसिस (नख़्लिस्तान) कहते हैं।

(अरब के वर्णन में ओसिस का चित्र देखो)

सब से बड़ी नदी **तारीम** † है जिसकी **सहायक नदियां काशग़र** (Kashghar) **यारक़न्द** (Yarkand) **और खुतन** (Khotan) हैं। यह नदियां कुछ दूर तक बहकर **लोबनौर** * (Lob-nor) झील के दल-दलों में समाप्त होजाती हैं। इन सहायक नदियों पर जो छोटे छोटे शहर बसे हुये हैं वह भी इन्हीं के नामों से प्रसिद्ध हैं। इस देश में तुर्क, बौद्ध, मंगोल और कुछ चीनी बसे हुये हैं। काशग़र के नख़्लिस्तान में नहरों से सिंचाई होती है। यह नगर तीन ओर ऐसे पहाड़ों से घिरा हुआ है जिनकी चोटियां सदा बर्फ़ से ढकी रहती हैं। इसके पूर्व में सैकड़ों मील तक रेगिस्तान चला गया है। यहांकी नहरों और उनके किनारों के सुन्दर बाग़ों और खेतों से यह प्रकट होता है कि यहांके लोग बड़े परिश्रमी और उद्योगी हैं, नहीं तो बालू की धरती में ऐसी हरियाली कभी नहीं हो

† तोरेम भी कहते हैं। * नौर=झील।

सकती थी। यह शहर तुर्किस्तान की राजधानी है। यहां चीन के राज्य की ओर से एक अफ़सर रहता है। यहां भिन्न भिन्न देशों के लोग व्यौपार करते हैं। रूसी, अफ़ग़ान और हिन्दू सब इसके बाज़ारों में पाये जाते हैं।

अंगूर, नाशपाती, ख़ूबानी बहुतायत से पैदा होती हैं, जिनको वहा के लोग सुखाकर जाड़ों के लिये रख छोड़ते हैं। यहां फलों की ऋतु में एक पैसे के टोकरी भर फल मिलते हैं, परन्तु अन्न का भाव हिन्दुस्तान से चढ़ा हुआ रहता है। इस देश के शहरों में **यारक़न्द** सब से पुराना और बड़ा शहर है। घर बहुधा कच्चे हैं और उनकी छतें भी मिट्टी से पटी हुई हैं। इसके चारों ओर परकोटा* है। यहां तालाब बहुत हैं जिनमें नहरों के द्वारा कई मील से पानी आता है। यहां की चमड़े की चीजें जैसे जूते, ज़ीन, भेड़ की खाल के कोट आदि प्रसिद्ध हैं।

इस मरुभूमि में तीसरा हरा भरा शहर **खुतन** है। यहां से **तिब्बत** और **चीन** को रास्ता जाता है। चमड़े की चीज़ों के सिवाय यहां पर क़ालीन और रेशमी चीज़ें बहुत अच्छी बनती हैं।

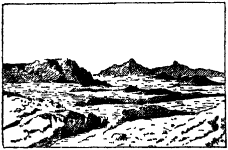
१५४—इतिहास—प्राचीन समय से यह देश लड़ाई

---

* शहर के चारों ओर जो ऊंची दीवार बनी होती है, उसे परकोटा या शहरपनाह की दीवार कहते हैं।

झगड़ों का घर रहा है। पहिले यह एक स्वतंत्र राज्य था, जिसको चीनियों ने जीत कर अपने राज्य में मिला लिया। पचास साल के लगभग हुये कि काशगर का अमीर चीनियों को निकाल कर वहां का स्वतंत्र राजा बन गया, परन्तु सन् १८७८ ई० में चीनियों ने कई कठिन लड़ाइयों के बाद इस देश को फिर ले लिया।

गोबी का रेगिस्तान



१५५–बनावट–ऊपर लिख चुके हैं कि चीनी तुर्किस्तान मरुभूमि और इसकी कुछ बस्तियां नख़्लिस्तान हैं, जहां नदियों से सिंचाई होती है। वास्तव में यह गोबी के रेगिस्तान का पश्चिमी किनारा है, जिसकी पूर्वी सीमा पर मंगोलिया का सूबा है। चीनवाले गोबी की मरुभूमि को **शामू** कहते हैं, जिसका अर्थ बालू का समुद्र है। यह रेगिस्तान पूर्व से कई हजार मील पश्चिम तक समुद्र की लहरों की तरह फैला

हुआ है। लहरें एक दूसरे के पीछे हैं। कहीं कहीं उनकी ऊँचाई १०० फ़ीट तक है। इन बालू की लहरों के बीच में कहीं कड़ी पथरीली ज़मीन दिखाई देती है, कहीं छोटी छोटी पहाड़ियां, कहीं छोटे छोटे नाले, कहीं बालू के टीले और कहीं पुरानी झीलों के सूखे गड्ढे हैं। बालू मिट्टी का रंग लाल और झुलसा हुआ है। पहाड़ियों के ऊपर के पत्थर हाथ से छूने पर ही महीन महीन टुकड़ों में बिखर जाते हैं।

१५६—**आबहवा**—यहां गर्मियों में दिन को बड़े ज़ोर की गर्मी पड़ती है और रात को पाला। हवा बहुत तेज़ चलती है। आकाश बालू से भरा रहता है। कभी कभी ऐसी हवा चलती है कि **भेड़ बकरियां तक उड़ जाती हैं।** जो टीला आज एक स्थान पर है, एक सप्ताह के बाद दूसरी जगह दिखाई देता है। यदि कभी इस मरु-भूमि का भाग्य जागा और मेह बरसा, तो नाले थोड़ी देर के लिये उमड़ चले नहीं तो फिर ज्यों के त्यों। इन सूखे नालों के किनारे यात्रियों के लिये कुएं खोदे जाते हैं, जिन पर छप्पर पड़े रहते हैं। जिन झीलों में नदियां गिरती हैं वह दलदल हैं। झीलों के स्थान भी बदलते रहते हैं, क्योंकि जो झील अट जाती है उसके बदले और कहीं झील बन जाती है। उनके भीतर बहुत दूर तक जाने में साफ़ पानी मिलता है। वह भी प्रायः खारी होता है, जैसे लौबनौर का।

१५७—हरियाली और फूल पत्ते का तो यहां नाम तक नहीं, केवल झीलों के पास छोटी छोटी झाड़ियां ऊंटों के लिये चारे का काम देती हैं। लौबनौर के पास निगाळी पैदा होती है। मछली पकड़नेवाले इसके झोंपड़े बनाकर रहते हैं। गर्मियों में इनमें अपने आप आग लग जाती है। जहां जहां ऐसी झीलें हैं, वहीं कुछ आदमी रहते हैं।

१५८—**बालू में दबे हुये पुराने नगर**—इस मरुभूमि में बहुतसे नगर बालू में दबे हुये हैं, जिससे सिद्ध होता है कि यह पहिले हरी भरी और बसी हुई भूमि थी। **स्वीडिन** के प्रसिद्ध यात्री **डाक्टर हेडिन साहब काशग़र** और **खुतन** की राह से इस मरुभूमि का हाल जानने के लिये कई बार आये। उनकी यात्रायें सन् १८६४ ई० से सन् १६०२ ई० तक जारी रहीं। वह बहुत कष्ट उठा कर मरुभूमि को पार करके **पेकिन** पहुँचे। पीछे के चित्र * में उनके क़ाफ़िले के लोग दिखाये गये हैं।

१५९—उन्होंने खुतन और लौबनौर के पास बहुतसे दबे हुये घर और मन्दिर खुदवा कर देखे। उनमें लकड़ी पर चीनी भाषा में तीसरी सदी का एक लेख मिला। चीनियों का कथन है कि छठी सदी में **परना** का बसा हुआ नगर अकस्मात् बालू में दबगया। एक साधु ने आँधी की सूचना

* नेल्सन साहबकी अंगरेज़ी पुस्तक " पृथ्वी और उसके लोग " से।

हफ्तों पहिले लोगों को दे दी थी, परन्तु वह अपने घरों से नहीं निकले। इस नगर का ठीक ठीक स्थान अभी तक मालूम नहीं हुआ है।

१६०—**मरुभूमि पर नदियों का प्रभाव**—जिस देश की नदियां समुद्र तक नहीं पहुँचतीं, वहां बालू इकट्ठा होकर हजारों वर्ष में रेगिस्तान बन जाता है। जहां नदियां होती हैं, वहां बालू इकट्ठा नहीं होता और न दूर तक फैल सकता है। प्राचीन काल से एशिया का यह भाग सूखता जाता है।

प्रश्न

१—गोबी के रेगिस्तान की बनावट और आबहवा बताओ।

२—क्या प्रमाण है कि गोबी की मरुभूमि कभी हरी भरी और बसी हुई थी?

३—यूरप के किस यात्री ने सब से पहिले इस मरुभूमि को पार किया? इस यात्रा से कौनसी मुख्य बात मालूम हुई?

४—रेगिस्तान किस प्रकार की आबहवा में पाये जाते हैं और क्यों? रेगिस्तान पर नदियों का क्या असर पड़ता है?

५—तुर्किस्तान की सीमा बताओ। इस देश का यह नाम क्यों पड़ा?

६—ओसिस (नख़्लिस्तान) किसे कहते हैं? तुर्किस्तान के प्रसिद्ध नख़्लिस्तान कौन कौनसे हैं?

७—तुर्किस्तान की आबहवा कैसी है और यहां की मुख्य पैदावार क्या है ?

८—तुर्किस्तान की नदियों के नाम बताओ। यह नदियां कहां गिरती हैं ?

९—चीनी तुर्किस्तान की राजधानी क्या है ? यहां कौन कौनसी चीजें पैदा होती हैं ? क्या कारण है कि यहां भिन्न भिन्न देशों के लोग पाये जाते हैं ?

१०—पूर्वी तुर्किस्तान में किस किस जाति और मत के लोग पाये जाते हैं ?

११—यारकन्द और खुतन में दस्तकारी की खास खास चीजें क्या हैं ?

१२—चीनी तुर्किस्तान के राज्यप्रबन्ध में क्या क्या हेर फेर हुये और कब कब ?

१३—तुर्किस्तान में मेह क्यों नहीं बरसता ? यहां की आबहवा महाद्वीपी क्यों है ?

तिब्बत

१६१—इस देश का नाम स्टेटों के साथ लिखा जा चुका है। हिन्दुओं का पवित्र पहाड़ **कैलाश** और उनकी पवित्र झील **मानसरोवर** इसी देश में हैं (चित्र देखो)।

प्राचीन काल से यह देश उत्तरीय एशिया के बौद्ध मत वालों का तीर्थस्थान है ।

विस्तार—इसकी पश्चिमी और दक्षिणी सीमा पर हिमालय पहाड़ कश्मीर से आसाम तक फैला हुआ है । उत्तर में **क्यूनलुन** और **अल्तीन ताग़** के पहाड़ और पूर्व में चीन के पहाड़ हैं । कराकुरम पर्वत की श्रेणी जो कश्मीर के उत्तरीय सिरे पर है हिमालय ही का एक भाग है । प्रायः हर ओर से तिब्बत में पहुँचने के लिये बर्फ़ से ढकीहुई चोटियां पार करनी होती हैं (स्लेटो का तीसरा नक़्शा देखो)।

१६२—**बनावट**-इस स्लेटो की ज़मीन बहुत पथरीली है । बर्फ़ से ढके हुये कुछ पहाड़ जो समुद्र के धरातल से ५ मील ऊंचे हैं, इस स्लेटो पर से टीले की तरह दिखाई देते हैं । झीलें यहां बहुतायत से हैं, कुछ खारी हैं कुछ मीठी । जाड़े के दिनों में यह देश बर्फ़ का तख़्ता बन जाता है ।

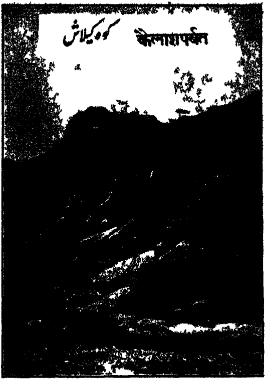
१६३—**मानसरोवर झील** ज़िला अलमोड़ा की एक सरहद्दी जगह से केवल २४ मील की दूरी पर है । इसके सामने कैलास पर्वत है । यात्रीलोग इसके दृश्य की बहुत बड़ाई करते हैं । मीलों तक हरियाली फैली हुई है, जिसमें भिन्न भिन्न रंग के फूल खिले हुये हैं । पहाड़ के ढाल की धरती ऐसी मालूम होती है कि मानों उस पर हरे रंग की

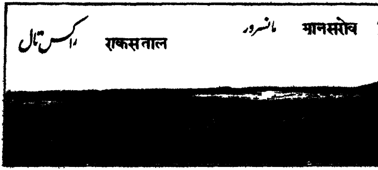
मखमल बिछी हुई है, जिस पर रंग रंग के बेल बूटे बने हुये हैं। यहां के प्राकृतिक फूलों की सुगंधि बहुत दूर तक जाती है। इसके किनारे बौद्ध मतवालों के मठ और हिन्दुओं के मन्दिर बने हुये हैं।

मिस्टर सी० ए० शेरिंग साहब डिप्टी कमिश्नर अलमोड़ा जो तिब्बत गये थे, अपनी पुस्तक "पश्चिमी तिब्बत" में यह लिखते हैं—" कैलास पर्वत जिसको लोग पूजते हैं और जो हिमालय की सब चोटियों में शिरोमणि है, उसका तेज आस पास के पूरे देश पर छाया हुआ है। हिन्दू और बौद्ध लोगों के धर्म्म का जो इस मनोहर देश से संबन्ध है उस पर ध्यान किया जाये, तो इस देववाणी का अर्थ स्पष्ट हो जाता है, ' जहां तू खड़ा है वही स्थान पवित्र है' ।

इस पवित्र भूमि की प्रतिष्ठा हिन्दू और बौद्ध दोनोंही करते हैं। इसकी शोभा सब से निराली है। दाईं ओर ४५ मील के चक्कर में **मानसरोवर** झील और बाईं ओर उतनी ही बड़ी **राकेश** * झील है, जिसकी बनावट मानसरोवर से कुछ भिन्न है। सामने की ओर इन झीलों का अत्यन्त सुन्दर नीला जल और पीछे की ओर कैलास पर्वत की श्रेणी देख कर स्वर्ग का चित्र सामने दिखाई देता है। इस रमणीक †

* तिब्बत के लोग इसको राकश या राकस भी कहते हैं जैसा कि इस का नाम चीन के नक्शे में लिखा गया है। † सुन्दर, मनोहर।


کوہ کیلاش
कैलाशपर्वत


راکس تال
राकसताल
مانسرور
मानसरोव

स्थान के ठीक बीच में कैलास पहाड़ की चोटी है, जिसे हिन्दू और बौद्ध दोनों स्वर्ग मानते हैं और जो सब श्रेणियों की सिरताज और सब से २००० फ़ीट अधिक ऊंची है। फिर इस मनोहर भूमि में रंग रंग की चट्टानें, झीलों का नीला जल और घास के बड़े बड़े मैदान देख कर चित्त को जो आनन्द प्राप्त होता है, वह लिखने से बाहर है।"

घास के इन मैदानों में हज़ारों भेड़ बकरियाँ चरा करती हैं, जिनके दूध से ग्वाले अपना पेट भरते हैं और ऊन का व्यौपार करते हैं।



بکریوں کا دوہنا बकरियोंका दुहना

१६४—आबहवा—चूंकि इस प्लेटो की औसत ऊँचाई

समुद्र के धरातल से तीन मील के लगभग है और यह समुद्र से कई हजार मील की दूरी पर है, इस लिये यहां सर्दी बहुत पड़ती है। गर्मियों में यहां के लोग ऊनी और जाड़े में बकरी और सुरागाय की खाल के कपड़े पहनते हैं। इस पर भी चाय के कई प्याले पीने पड़ते हैं, नहीं तो सर्दी के मारे कुछ काम ही नहीं कर सकते। गर्मी केवल कुछ दिनों के लिये जौलाई में पड़ती है।

१६५–हवा यहां बहुत तेज चलती है। मेह का यह हाल है कि अगस्त के महीने में जब देर तक पानी बरसता है तब भी चादर नहीं भीगती। इस महीने में भी बहुधा मेह के बदले बर्फ़ ही पड़ती है।

१६६–**पैदावार**–केवल ब्रह्मपुत्र और सिन्ध की घाटियों में जहां बहुत तेज हवा नहीं चलती, कुछ अनाज, विशेष कर जौ और सेम की फलियां पैदा होती हैं। उत्तरीय और पूर्वीभाग में ज़िला अलमोड़ा, गढ़वाल और कश्मीर से मिली हुई सीमा पर पेड़ों का नाम तक नहीं। केवल एक प्रकार की झाड़ी होती है जिसको लोग खोद कर जलाते हैं। हवा ऐसी खुश्क है कि यह झाड़ियां गीली भी जल जाती हैं। मैदानों और पहाड़ों के ढाल पर पशुओं के लिये घास काफ़ी

मिल जाती है । लासा के पास जहां ब्रह्मपुत्र * की एक धार उत्तर की ओर चली गई है, वहां कुछ पेड़ भी होते हैं और वहां पश्चिमी भागों से अधिक पैदावार होती है ।

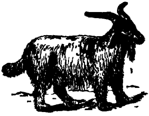
१६७—खानिज पदार्थ—सुहागा, नमक, शोरा और गंधक हैं ।

१६८—पशु—जैसा कि पहिले लिख चुके हैं, सुरागाय इस देश का मुख्य पशु है । इसी पर सवार होकर लोग कठिन और तंग चोटियों पर चढ़ा करते हैं । इसी पर माल लादते हैं । इसके दूध से मक्खन निकालते हैं । जब वह मर जाती है, तो उसकी पूंछ के चँवर बनाते हैं, जिनको हिन्दुस्तान के लोग बड़े चाव से काम में लाते हैं ।

१७६—यहां जंगली घोड़े, गधे और भेड़ें भी पाई जाती हैं । मैंने अलमोड़े के ज़िले में एक जंगली घोड़ा देखा जिस को लोग इलाहाबाद की नुमायश के लिये लाये थे । उसका रंग भूरा था, कान लम्बे थे, पाँव बहुत हलके और सुडौल थे । यहांकी पालतू बकरियों के बाल बहुत लम्बे, बारीक

* तिब्बत में इसका नाम सांपू है ।

और मुलायम होते हैं। ऊपर के मोटे बालों से धुस्से और कालीन बुने जाते हैं।



तिब्बत की बकरी।

पश्मीने से दुशाले, अलवान आदि बनाये जाते हैं। यहां पर कस्तूरी के हिरन भी पाये जाते हैं।

१७०–**शिल्प, कारीगरी** और **व्यौपार**–केवल दक्षिणी भाग और नदियों की घाटियों में कुछ खेती होती है, नहीं तो भेड़ बकरियां पाल कर लोग अपने दिन काटते हैं। ऊन ही की रस्सियां, ऊन ही की दरियां, ऊन ही के बोरे आदि बनाते हैं। यहां का ऊन अधिकतर **कानपुर** के कारखानों में जाता है। तिब्बत के बने हुये कालीन बहुत सुन्दर होते हैं। उनमें विशेष बात यह होती है कि तागे वनस्पतियों के रंग से रँगे जाते हैं। हिन्दुस्तान में तिब्बत से सुहागा बहुत आता है। नमक का व्यौपार केवल हिमालय के पहाड़ी भाग में होता है। तिब्बत के लोग स्वाभाविक ही

व्यौपारी होते हैं। दूर दूर तक अपना माल लेजाते हैं। चलते समय भी ऊन का तागा बटते जाते हैं। स्त्रियां पड़ाव पर पहुँचने के थोड़ी ही देर बाद बुनाई का काम करने लगती हैं। अलमोड़ा और गढ़वाल की सीमाओं पर व्यौपार की कई मंडियां हैं।

१७१—बाशिन्दे मंगोल जाति के हैं। उनका डील डौल छोटा होता है, परन्तु यह बड़े मेहनती और मजबूत होते हैं। स्त्रियां भारी बोझ उठाकर पहाड़ों पर चढ़ जाती हैं। जौ का सत्तू और चाय इनका मुख्य भोजन है। चीनियों की तरह यह लोग भी दूध नहीं पीते, परन्तु दूध का मक्खन, पनीर आदि बनाकर चाय में डालते हैं। गर्मियों में यह लोग खाने की चीजें बनाकर जाड़ों के लिये रख छोड़ते हैं, जो बहुत सर्दी पड़ने के कारण नहीं सड़तीं। यह लोग कई वर्ष के पुराने मक्खन को बहुत पसन्द करते हैं। जाड़े के लिये मांस भी सुखाकर रख लेते हैं। तिब्बत के लोग मैले कुचैले रहते हैं और ढीले ढाले वस्त्र पहनते हैं। स्त्रियां एक प्रकार की अनोखी टोपी पहनती हैं जिसमें चाँदी, मूंगे आदि लगे

होते हैं । नीचे का चित्र देखो जो यहांके एक अफ़सर * और उसकी स्त्री का है ।



تبتی افسر- اس کی عورت

तिब्बती अफ़सर और उसकी स्त्री ।

१७२-धर्म-यहां सातवीं सदी में बौद्ध धर्म फैला । इस के साथ ही हिन्दी वर्णमाला के अक्षर भी कुछ अदल बदल के साथ जारी हुये । महात्मा बुद्ध की मूर्ति की पूजा देशभर

* तिब्बत के लोग इसको जोंग पोन कहते हैं । इसका काम नायब तहसीलदार की तरह है ।

में की जाती है। मठ बहुतायत से हैं, जिनमें हर घर से लड़का लामा बनने के लिये दिया जाता है। वह लोग मंत्र, तंत्र और प्रयोग आदि को मानते हैं। भविष्यवाणी कहने वाले लोग हर मठ में नौकर रखे जाते हैं। चीन की तरह यहां भी पूजा करने के छोटे छोटे पहिये होते हैं, जिनको लोग हाथों से घुमाते रहते हैं।



तिब्बती पूजाका पहिय्या घुमाना हुआ

धनी लोगों और प्रसिद्ध लामाओं की लाशें जलाई जाती हैं, और लोगों की जंगलों में डाल दी जाती हैं। कुछ लोग

मुर्दों को तीन दिन तक लटकाये रखते हैं, इसलिये कि उन की आत्माएं घरवालों को न सतायें।

१७३—सब लामाओं का गुरू लासा में रहता है और उसको डलाई लामा कहते हैं। यहाके लोगों का यह विश्वासहै कि वह कभी नहीं मरता। मरने के बाद वह फिर तुरन्त ही जन्म ले लेता है, इस लिये डलाई लामा के मरने के दिन जितने लड़के पैदा होते हैं उनमें से एक छांट लिया जाता है। नीचे का चित्र आज कल के डलाई लामा का है।



१७४—मध्य एशिया के हजारों यात्री लासा में

आते हैं। जिस मकान में महाराज डलाई लामा रहते हैं उसकी छत सुनहरी है। मूर्तियां सुनहरी और रत्नों से जड़ी हुई हैं। यहांके मकान ऊंचे और कई मंजिल के हैं। शहर के बाहर मुर्दा ढोनेवाले आदमियों के घर बैल और भेड़ों के सींगों के बने हुये हैं।

१७५–रीतियां–इन लोगों के यहां सलाम करने की रीति दुनियां भर से निराली है। सलाम करनेवाला अपनी जीभ मुँह में से नीचे लटकाकर दायें हाथ से टोपी उतार लेता है और बायें हाथ से कान खुजलाने लगता है।



تبت کا طرز سلام

तिब्बतियों का प्रणाम करना।

१७६–राज्यप्रबन्ध–यह देश नाम के लिये चीनियों

के राज्य में है । वास्तव में लोग **लामा** को अपना गुरु और राजा मानते हैं। **लामा** में चीन की ओर से एक बड़ा अफ़सर रहता है । सन् १६०४ ई० में हमारी सरकार ने एक सेना तिब्बत में भेजी थी । जिसने **लामा** के साथ यह बातें तै कीं कि हिन्दुस्तान की सरकार के बिना पूँछे और राज्यों से कोई लिखा पढ़ी न की जाये, और हिन्दुस्तानियों को व्यौपार करने की कुछ रोक टोक न रहे ।

प्रश्न

१—तिब्बत कैसा देश है और उसकी बनावट कैसी है ?

२—तिब्बत से कौन कौनसी नदियां निकलती हैं ?

३—क्या कारण है कि तिब्बत में तीन तीन मील ऊंचे पहाड़ टीले की तरह दिखाई देते हैं ?

४—तिब्बत की पैदावार क्या है ? यहां की आबहवा कैसी है ?

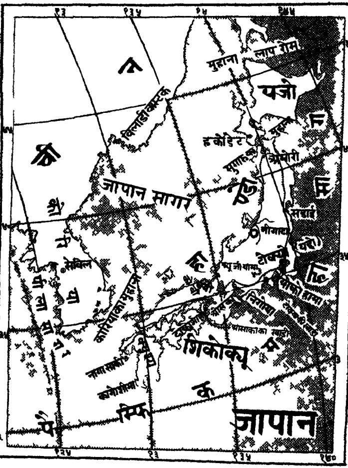
५—तिब्बत का कौनसा भाग अधिक उपजाऊ है और क्यों ?

६—तिब्बत के लोग किस जाति के हैं और उनका पेशा क्या है ?

७—तिब्बत से हिन्दुस्तान में कौन कौनसी चीजें आती हैं ?

८—क्या कारण है कि हिन्दुस्तान और उत्तरीय एशिया के लोग बहुधा तिब्बत आते हैं ?

९—क्या कारण है कि तिब्बत में अधिक मेंह के समय भी चादर नहीं भीगती ?


मुहाना
हकोडेट
जापान सागर
नीगाटा
टोक्यो
कोरियाका मुहाना
शिकोकू
जापान

१०–मानसरोवर और कैलास क्या हैं ? जाड़े में उनकी क्या दशा रहती है ?

११–तिब्बत के लोगों का धर्म क्या है ? यह मत यहां कब फैला ? यहां की मुख्य मुख्य धर्मसंबन्धी रीतियां क्या हैं ?

१२–तिब्बत में कौनसी चीज सब से अच्छी बनती है ? हिन्दुस्तान की सरकार और तिब्बत में कौन कौनसी बातें परस्पर नियत हुई हैं ?

जापान

१७७–एशिया के स्वतंत्र राज्यों में केवल एक **जापान** ही ऐसा है, जो **यूरप** के ढंग पर अपने राज्यप्रबन्ध का सुधार करके वहां के राज्यों के समान होगया है।

१७८–**विस्तार**–इस राज्य में कई हजार द्वीप हैं, जिन में बहुतसे **मालद्वीप** और **लकाद्वीप** की तरह छोटे छोटे और बे बसे हुये हैं। इनका सिलसिला **क्यूराइल** के द्वीपों से लेकर **ल्यूच्यू** के द्वीपों तक चला गया है। इस राज्य में जितने द्वीपसमूह हैं, प्रायः वह कमान की तरह हैं। **साखालीन*** का दक्षिणी आधा भाग और **फ़ारमूसा** का द्वीप भी इसी राज्य में हैं।

यज़ो (Yezo) **हन्डो** (Hundo) **शिकोक्यू**

* इसको शंघालियन भी कहते हैं।

(Shiko-ku) और क्यूश्यू (Kiu-Shiu) के द्वीप जापान के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१७९—**किनारा**—जापान का किनारा एशिया के और देशों के किनारों से जियादा कटवां है। इसमें गहरी खाड़ियां हैं जो कई चक्कर काटती हुई स्थल के भीतर चली गई हैं। उनमें से **टोकयो** और **ओस्का** की खाड़ियां बहुत प्रसिद्ध हैं। इसी लिये जापान में अच्छे अच्छे बन्दरगाह बहुत से हैं।

१८०—**बनावट**—जापान एक पहाड़ी देश है, इसके कुल क्षेत्रफल का आठवां भाग नीचा मैदान है। पहाड़ों का खास सिलसिला उत्तर पूर्व से दक्षिण पश्चिम तक चला गया है। इसकी कुछ चोटियां पूर्व और पश्चिम की ओर कगारे की तरह समुद्र तक चली गई हैं। सच बात तो यह है कि **पासिफ़िक महासागर** के द्वीपसमूह **अल्यूशियन, क्यूराइल, जापान, फ़िलिपाइन** आदि ऐसे पहाड़ों के सेटो हैं जो समुद्र की तह से उभरे हुये हैं। **फ्यूजी-यामा** पहाड़ जापान का कैलास है। इसके दर्शन के लिये बहुतसे यात्री जाते हैं। इसकी चोटी भी सदा बर्फ़ से ढकी रहती है और इसका दृश्य बड़ा मनोहर है।

१८१—**नदियां**—**लंका** की तरह यहां की नदियां भी

बहुत छोटी हैं, परन्तु बहाव इतना तेज है कि उनमें नावें दूरतक नहीं जासकतीं ।



फ्यूजी यामा

ज्वालामुखी पहाड़

१८२—जापान के पहाड़ों में से कुछ ज्वालामुखी हैं, जिनका आकार गाजर की तरह है । इनके ऊपर झांवे की तरह के पत्थर पाये जाते हैं। इन पहाड़ों की चोटियों पर चढ़ने से एक गड्ढा प्याले की शक्ल का दिखाई देता है। गड्ढे के बीच में नल जैसा एक सूराख होता है, जो कुए की तरह जमीन की तह से मिलाहुआ दिखाई देता है।

इस सूराख के मुँह को अंगरेजी में क्रेटर (Crater) कहते हैं।



कुछ पहाड़ों के क्रेटर बहुत दिनो से भर गये है, जैसे फ्यूजीयामा का मुँह (चित्र देखो)। अब उसके मुँह पर बर्फ़ जमी रहती है।



जमा हुआ लावा

थोड़े से पहाड़ों के क्रेटर कुछ सालों तक भरे रहते हैं, परन्तु उनमें से कभी कभी अचानक खौलता हुआ पानी, भाप, राख, पिघले हुये पत्थर निकल पड़ते हैं। राख तो

बहुत उँचाई तक उड़ती हुई सैकड़ों मील तक चली जाती है, परन्तु पिघले हुये पत्थर और दूसरी चीजों के साथ पहाड़ों के ढाल पर लाल नदी की तरह धीरे धीरे बहते हैं, जो ठंडे और कड़े होकर झांवे की तरह दिखाई देते हैं (चित्र देखो)

राख का अधिक भाग ढाल पर इकट्ठा हो जाता है, इस लिये क्रेटर के चारों ओर गाजर की शक्ल का ढेर बन जाता है। वास्तव में ज्वालामुखी पहाड़ इन्हीं चीजों से बने हैं जो उनके भीतर से निकलती हैं।



آتش فشاں پہاڑ سے نکلے ہوے پتھر اور
ان میں بھاپ نکلنے کے سوراخ

ज्वालामुखी पहाड़ से निकले हुये पत्थर और उनमें भाप निकलने के सूराख़

१८३—पहाड़ों और खानों से बहुतसे ऐसे पत्थर निक-

जाते हैं, जिनकी बनावट से प्रकट होता है कि उनको अधिक गर्मी पहुँची है, जैसे बिल्लौर, अबरक, चकमाक आदि, बिल्लौर और शीशे की ऐनक में बहुत कम अन्तर मालूम होता है। शीशा सज्जी मिट्टी के खार और बालू के पिघलाने से बनता है।



چقماق - ابرک وغیرہ ملے ہوئے آتشی پتھر

चकमाक, अबरक आदि मिले हुये आग्नेय पत्थर

जो पत्थर पृथ्वी के भीतर की गर्मी से पिघलकर बने हैं, उन्हें **आग्नेय पत्थर** कहते हैं।

ज्वाला वृष्टि का मतलब गर्म राख, खौलता हुआ

पानी, पानी की भाप, छोटे छोटे और कुछ पिघले हुये पत्थरों का निकलना है * ।



آتش فشاں پہاڑ سے نکلا ہوا
پتّھر کا گولا اور راکھ

ज्वालामुखी पहाड़ से निकला हुआ पत्थर का गोला और राख

यहां राख का मतलब कुछ पिघले हुये छोटे छोटे पत्थरों से है । बड़े बड़े पत्थर जो कुछ पिघले हुये निकलते हैं, उन को गोला कहते हैं ।

---

* बहुधा लोग यह कहते हैं कि ज्वालामुखी पहाड़ों से आग निकलती है, परतु यह बात ठीक नही है, क्योंकि पृथ्वी के भीतर आग नहीं जलती । ज्वाला वृष्टि मे पिघले और दहकते हुये पत्थर और दूसरे खानिज पदार्थ निकलते हैं, जिनसे रोशनी और गर्मी इस तरह निकलती है, जैसे जलते हुये कोयले या लकड़ी से ।

ज्वालामुखी पहाड़ों और भूडोल से जापान की दुर्दशा

१८४—अधिक ज्वाला वृष्टि के समय आकाश गर्द से भर जाता है। विषैली हवा चारों ओर फैल जाती है। कोसों तक अंधेरा छा जाता है। पिघले हुये पत्थरों के नीचे गांव दब जाते हैं। हजारों जीव मर जाते हैं। जापान के लोगों को ऐसे दुख बहुधा झेलने पड़ते हैं।

भूडोल भी उनको ऐसा ही दुखदाई है। भूडोल (भूकंप) का अर्थ पृथ्वी का काँपना, थर्राना, हिलना है। जिस तरह लदी हुई बैलगाड़ी या रेल गाड़ी के चलने से पुल ऊपर नीचे हिलने लगता है, उसी तरह भूडोल से पृथ्वी का धरातल ऊपर चढ़ता और फिर नीचे बैठता है।

ज्वाला वृष्टि के पहिले बहुधा भूडोल आते है, जिनसे पृथ्वी ऊपर नीचे हिलने लगती है। कभी कभी घर और पेड़ भी हिल हिल कर गिर पड़ते हैं। कभी पृथ्वी का धरातल दूर तक फट जाता है। घर पेड़ आदि नीचे दब जाते हैं (चित्र देखो)।

सन् १९१४ ई० की ज्वाला वृष्टि।

१८५—मैं जिन दिनों यह पुस्तक लिख रहा था, जापान से ज्वालामुखी पहाड़ों के भड़कने के समाचार कई दिन तक आते रहे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

टूटी फूटी क़ब्रें (जापान सन् १९७६ ई०)



[illegible]

[illegible]



[illegible]

कोगोशीमा (Kog -Shima)

(१) १३ जनवरी सन् १६१४ ई० ।

१० जनवरी शनिवार के दिन से १३ जनवरी तक ६० भूडोल आये । उनके बाद ज्वाला वृष्टि शुरू हुई । शकर-शीमा या शीमा के द्वीप का एक गाँव नष्ट होगया (चित्र देखो) । संदेह है कि और गाँव भी बरबाद हो जायँगे । पिघली हुई चीजें उड़कर कोगोशीमा के शहर तक आई ।

(२) टोक्यो (Tokio) १३ जनवरी सन् १६१४ ई० ।

शकरशीमा के ज्वाला मुखी से बड़े बड़े पत्थर २० मील तक उड़कर गिरे । ऐसा मालूम होता था कि सब द्वीप में आग लग रही है ।

(३) टोक्यो १६ जनवरी सन् १६१४ ई० ।

ज्वालामुखी के जलने और भूडोलों से ऐसा कष्ट हो रहा है जैसा पश्चिमी किनारों पर समुद्र की बाढ़ से । शकर-शीमा (द्वीप) का ज्वालामुखी पहाड़ चारों ओर आग बरसा रहा है । बहुतसी मामूली सड़कें, रेल की सड़कें, और घर जल कर राख हो गये हैं । सत्तर हजार से अधिक मनुष्यों का पता नहीं ।

यह द्वीप कोगोशीमा की खाड़ी में है ।

ज्वालामुखी पहाड़ों के स्थान

१८६–(१) प्रचलित ज्वालामुखी पहाड़– पृथ्वी के सब ज्वालामुखी पहाड़ बहुधा समुद्र के किनारे पाये जाते हैं। इस नक़्शे से यह प्रकट होता है कि ज्वाला-



दुनियाके पहाड़ोंका सिल्सिला
پہاڑوں کے خاص سلسلے

मुखी पहाड़ अलग अलग नहीं हैं। उनका एक सिलसिला होता है। हिन्दुस्तान * में कोई ज्वालामुखी पहाड़ नहीं है। **बंगाल की खाड़ी** में **अंडमान द्वीप** के पास **बेरिन द्वीप** में एक ज्वालामुखी पहाड़ है, जिससे जलते हुये गंधक की तरह कभी कभी धुँआ निकला करता है। सन् १७९५ ई०

* ब्रह्मा में कई सौ वर्ष के बाद मई १९१४ में ज्वाला वृष्टि होने का हाल अख़बारों में छपा था, परन्तु अभी पूरा पूरा हाल नहीं मालूम हुआ है।

से अब तक ठोस या पिघले हुये पत्थर नहीं निकले । यह द्वीप उन चीज़ों से बना है, जो किसी समय में ज्वालामुखी पहाड़ से निकली थीं ।

(२) **सुप्त ज्वालामुखी पहाड़**—किसी समय में ज्वालामुखी पहाड़ों की संख्या बहुत ही अधिक थी। अब उनमें से बहुतसे बन्द पड़े हैं, परन्तु उनके क्रेटर अब भी मौजूद हैं । इरावदी की घाटी में **आवा** और **मौलमीन** के पास सुप्त ज्वालामुखी पहाड़ों के चिह्न पाये जाते हैं । उन के चिह्न इस नक़्शे में नहीं दिखाये गये । कहीं कहीं ऐसे सुप्त ज्वालामुखी पहाड़ों की घाटियों और चौरस मैदानों में अच्छी खेती होती है, क्योंकि ज्वालामुखी पहाड़ों से निकली हुई राख बहुत उपजाऊ होती है । जापान के उपजाऊ होने का यही कारण है ।

पासिफ़िक महासागर ज्वालामुखी पहाड़ों का घर है, जिसकी मुख्य श्रेणी **कमचटका प्रायद्वीप, क्यूराइल, जापान** और **पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह** में होती हुई अमेरिका तक चली गई है । **अटलान्टिक महासागर** के ज्वालामुखी पहाड़ प्रायःद्वीपों में हैं, जैसे आइसलेंड, सिसली आदि में । (नक़्शा देखो)

ज्वालामुखी पहाड़ों और भूकम्प के कारण एशिया

के पूर्व अर्थात् पासिफ़िक महासागर में द्वीपों की संख्या और महासागरों से अधिक है।

मूंगे से बने हुये द्वीप इस संख्या को और भी बढ़ाते रहते हैं।

पृथ्वी के भीतर की तहों के बहुत ही गर्म होने के प्रमाण सबूत)।

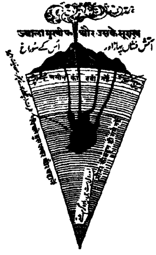
(१) **खौलते हुये चश्मे**–इस पुस्तक के प्रथम भाग में **ज़िला गढ़वाल** के **गौरीकुंड** और **बद्रीनाथ** के खौलते हुये सोतों का वर्णन हो चुका है। इन सोतों का पानी इतना गर्म रहता है कि यदि उनमें चावल डाल दिये जायें, तो थोड़ी देर में पक जाये। **जापान** में भी गर्म * पानी के सोते हैं, जिनमें से कभी कभी पानी बड़ी आवाज़ के साथ बाहर निकलता है।

(२) **खानों के भीतर अधिक गर्मी होना**–कोयला, सोने और चाँदी की खानों में इतनी गर्मी रहती है कि मज़दूरों को पंखों के द्वारा बाहर से हवा पहुँचाई जाती है, नहीं तो वह वहां काम नहीं कर सकते। इन उदाहरणों से प्रकट है कि पृथ्वी के भीतर का भाग बाहरी भाग से बहुत ही अधिक गर्म है।

भिन्न भिन्न खानों में परीक्षा करके देखा गया है कि हर ६० फ़ीट की गहराई पर थर्मामीटर का पारा एक अंश ऊपर

* अंगरेज़ी में ऐसे सोतों को गेसर कहते हैं।

चढ़ जाता है। इस हिसाब से १ मील की गहराई पर ८८° फ़ारनेहीट की गर्मी होगी। २० मील की गहराई पर इतनी गर्मी होगी कि कड़े से कड़े पत्थर, लोहा आदि सुनारों के गलाये हुये सोने चाँदी की तरह पिघली हुई दशा में पाये जायेंगे। कुछ विद्वानों की यह भी राय है कि पृथ्वी का धरातल कुछ गहराई तक ठोस है और भीतर का भाग पिघला हुआ अर्थात् द्रव है। कुछ लोग इस राय को नहीं मानते, परन्तु इतना अवश्य मानते है कि पृथ्वी के बहुत ही भीतर का भाग इतना गर्म है कि वहां पत्थर और धातुयें दहकते हुये लोहे की तरह गर्म रहती हैं। यह बात सब ही कहते हैं कि ज्वालामुखी पहाड़ के नीचे आग निकलने के समय पृथ्वी के भीतर का भाग कुछ दूर पर पिघला रहता है। (नीचे का चित्र देखो)



पृथ्वी के ऊपर की सतह के ठंडे और ठोस होने और भीतरी भाग के दहकने और कहीं कहीं द्रव दशा में होने का ध्यान तरबूज़ के छिलके, गूदे और पानी से होसकता है।

ज्वाला वृष्टि के कारण

१८७–जब समुद्र, नदी, झील या मेह का पानी उन छेदों में होकर, जो पृथ्वी के भीतर बहुत गहराई तक चले गये हैं, पिघली हुई चट्टानों से मिलता है, तो वह वहां भाप बनता रहता है। जब भाप का ज़ोर बहुत बढ़ जाता है, तो वह पिघले हुये पत्थर और धातुओं के कुछ भाग को पृथ्वी के धरातल तक ऊपर हटाती हुई बाहर निकल पड़ती है, जैसे पकती हुई दाल भाप के ज़ोर से पतीली के बाहर निकल आती है।

नोट (१) जितनी तेज़ी से बारूद भक से उड़ती है, उससे कहीं अधिक इस भाप का ज़ोर होता है। इस भाप में इतनी गर्मी होती है कि जिन पत्थरों में होकर वह जाती है, उनको मोम की तरह नर्म कर देती है।

नोट (२) चूंकि ज्वालामुखी पहाड़ अधिकतर समुद्र के किनारे होते हैं, इससे यह अनुमान किया जाता है कि प्रायः समुद्र का ही पानी पिघली हुई चट्टानों या कुतलों तक पहुँचता है।

ज्वालामुखी पहाड़ों और भूकम्प का सम्बन्ध

१८८—जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं ज्वालामुखी पहाड़ों और भूकम्प का बहुत संबन्ध है। भूकम्प ज्वाला वृष्टि के पहिले, साथ साथ और बाद में भी आते हैं। कभी कभी ऐसे स्थानों पर भी भूडोल आते हैं, जहां ज्वालामुखी पहाड़ नहीं हैं, जैसे शिमला, कांगड़ा आदि में। सन् १६०५ ई० के भूकंप से कांगड़े में बहुत हानि हुई थी। बहुतसे घर और मन्दिर टूट गये थे और कुछ आदमी भी दब गये थे (कोगोशीमा के साथ धर्मशाला के चित्र को देखो) शिमला में बहुधा भूकम्प आया करता है, परन्तु बहुत जोर का नहीं होता। आसाम और ब्रह्मा में भी प्रायः भूकम्प आया करते हैं और उनका असर बंगाल तक मालूम होता है।

१८६—**भूकम्प के कारण**—भूकम्प के बहुतसे कारण बताये जाते हैं, उनमें से कुछ यहां लिखे जाते हैं।

(१) जब समुद्र या मेह का पानी पृथ्वी के भीतर के पिघले हुये पत्थर और धातुओं से मिलता है, तो भाप बन जाता है और निकलने के लिये इतना जोर करता है कि पृथ्वी के ऊपर का भाग हिलने लगता है। चूंकि ज्वालामुखी पहाड़ों के मुँह कुछ समय तक बन्द रहते हैं, इसलिये उनके फिर जारी होने से पहिले बहुधा भूकंप आया करते हैं, क्योंकि भाप सहज में बाहर नहीं निकल सकती।

(२) पिघले हुये पत्थरों के एक दम ज़ोर से बाहर निकलने के कारण भी पृथ्वी हिलने लगती है, जैसे नल की टोंटियां पानी के ज़ोर से। इसी कारण ज्वाला वृष्टि के साथ साथ प्रायः भूकंप भी आते हैं। जब पिघली हुई धातुओं को निकलने के लिये ठीक रास्ता नहीं मिलता, तो नये नये मुँह बन जाते हैं।

(३) पृथ्वी के भीतर बहुधा बड़े बड़े गड्ढे होते हैं। जब उन गड्ढों के ऊपर की छत टूटती है, तो उसकी टक्कर का धक्का इस ज़ोर से लगता है कि पृथ्वी सैकड़ों मील तक हिल जाती है।

(४) कभी कभी पृथ्वी के नीचे की चट्टानें इस ज़ोर से टूटती हैं कि उनकी तहें ऊपर नीचे होजाती हैं और उनके धक्के से सैकड़ों मील तक पृथ्वी के ऊपर का धरातल हिलने लगता है (क्रेटर का चित्र देखो—तहें ऊपर नीचे होगई हैं। चट्टानों का कमज़ोर हिस्सा जहां तहें ऊपर नीचे होगई हैं काली लकीर से दिखाया गया है।)

१६०—**भूकम्प का फैलना**—उदाहरण (१) खड़ी हुई रेलगाड़ी में जब ऐंजिन लगता है, तो उसके धक्के से गाड़ियां आगे पीछे हिल जाती हैं। इसी तरह जब पृथ्वी के किसी भाग को बहुत ज़ोर का धक्का लगता है, तो कोसों तक पृथ्वी हिल जाती है।

उदाहरण (२) तालाब में किसी स्थान पर ढेला फेंकने से उस जगह का पानी अपने आस पास के पानी को धक्का देकर फिर अपनी जगह पर आजाता है। जिस पानी को धक्का लगता है, वह अपने आगे के पानी को कुछ धक्का देता है, यहां तक कि किनारे के पानी को भी इसी तरह कुछ धक्का पहुँचता है। इसी तरह भूडोल की लहरें भी शुरू होने की जगह से आगे को बढ़ती जाती हैं, इसलिये दूर के स्थानों पर उनका असर कम होता है (धर्मशाला के ऊपर का चित्र देखो)। जो भूडोल ज्वाला वृष्टि से आते हैं, उनका असर अधिक दूर तक नहीं जाता। शिमले और कांगड़े में भूकम्प आने के कारण नम्बर दो और तीन हैं।

१६१—**आबहवा**—जापान ३०° और ४५° की अक्षांश रेखाओं के बीच में है, इस लिये उसकी आबहवा में अक्षांश के अनुसार अन्तर पड़ता है। दक्षिण से उत्तर की ओर जाने में सर्दी अधिक होती जाती है। पेकिन की तरह यहां न तो गर्मियों में अधिक गर्मी पड़ती है और न जाड़ों में कड़ाके का जाड़ा, क्योंकि यह देश चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ है। सर्दी कम पड़ने का एक कारण यह भी है कि समुद्र की एक गर्म धार भूमध्य रेखा की ओर से जापान के पूर्वी किनारों पर बहती है। इस धार का नाम **जापानी** *

---

* इसका नाम काली धार और क्यूरोसिओ भी है।

धार है (सामने का चित्र देखो) । इसकी गर्म हवा सर्दी को कम कर देती है । चूंकि पश्चिमी भाग पर इसका असर नहीं पड़ता, इस लिये जाड़ों में वहां बर्फ़ इकट्ठी होजाती है । यज़ो के पूर्व में कुहरा बहुत पड़ता है। इसका यह कारण है कि समुद्र की एक **ठंडी धार कमचटका** की ओर से बहती है, जिस की ठंडी हवा जापानी धार की गर्म हवा को ठंडा करके कुहरा बना देती है (नक़्शे में कमचटका की दक्षिणी नोक पर तीर बनाकर इस धार का आना दिखाया गया है ।)

१८२—समुद्र की नदियां—जिस प्रकार स्थल पर नदियां बहती हैं और उनके किनारों और तहों में ज़मीन होती है, उसी तरह समुद्र का पानी भी कहीं कहीं नदियों की तरह बहता रहता है । समुद्र की बहती हुई धारों के किनारों पर ज़मीन की जगह बन्द पानी होता है और उन की तहों में भी पानी रहता है । ऐसी धारों * की चौड़ाई और गहराई नदियों की धारों की तरह एकसी नहीं होती । कुछ धारें कई मील तक चौड़ी होती हैं, परन्तु उनकी गह-राई अधिक नहीं होती, प्राय: ५०० फ़ीट तक होती है । समुद्र की धारों की चाल अधिक से अधिक प्रति घंटा पंद्रह से बीस मील तक है । जैसा कि ऊपर लिख चुके हैं कहीं

* अंगरेज़ी में धार को करेंट कहते हैं ।



क्रैंट यानी धारायें   OCEAN CURRENTS   کرنٹ (طیار)

कहीं एक ही समुद्र में एक ओर गर्म पानी की धार बहती है और दूसरी ओर ठंडे पानी की।

१६३–समुद्र में नदियों के बहने का प्रमाण– इन धारों के बहने का सबूत यह है कि अमेरिका के पेड़ों के बीज एशिया और यूरप में बहते हुये आजाते हैं, जो इन महाद्वीपों में नहीं होते। बहुधा यात्रियों ने बोतलों में जो चीजें अफ्रीका के पश्चिमी किनारों पर छोड़ दी थीं, वह इंगलैंड में जाकर निकली हैं। इसी तरह उत्तरीय महासागर में जो चीजें छोड़ी गई हैं, वह एशिया, यूरप और अमेरिका के महाद्वीपों से बहुत दूर दक्षिण की ओर निकली हैं।

१६४–समुद्र में नदियों के बहने के कारण– जब हवा कुछ देर तक बालू और गर्द से भरी हुई सड़क पर ज़ोर से चलती है, तो बालू या गर्द हवा के ज़ोर से आगे की ओर बढ़ती जाती है। यदि एक बर्तन में पानी भर कर उसमें लकड़ी का बुरादा डालें और ज़ोर से फूंक मारें, तो बुरादा भी पानी के साथ साथ आगे की ओर बहने लगेगा। इसी तरह उष्ण कटिबन्ध के चौड़े समुद्रों में जहां तेज़ हवा प्राय: साल भर तक एक ही दिशा में चलती है, वहां हवा के ज़ोर से समुद्र के कुछ भाग का गर्म पानी नदियों की तरह पश्चिम को बहने लगता है। यदि थल के

गाम समुद्र में अधिक दूर तक फैलकर इस धार की राह में न आजाते, तो समुद्र का पानी एकही धार में पृथ्वी के चारों ओर इसी कटिबन्ध में घूमा करता। समुद्र की इस बहती हुई धार का पानी जमीन के भागों से टकराकर भिन्न भिन्न धारों में फैल जाता है। इन धारों के नाम उन देशों के नाम पर पड़गये हैं जिन में होकर वह बहती हैं, जैसे जापानी धार, गल्फ स्ट्रीम। और और धारों के नाम पिछले नक़्शे में देखो। इन धारों का चक्कर बँध जाता है। **उष्ण कटिबन्ध** की इस धार के पैदा होने से **उत्तरीय** और **दक्षिणीय महासागरों** का पानी भी खिंच आता है। नक़्शें में समुद्र की यह ठंढी धारें अधिक काली और कटी हुई रेखाओं से दिखाई गई हैं।

१६५-**जापानी धार**-**अमेरिका** के पश्चिम में **पासिफ़िक महासागर** के गर्म भागों से शुरू होती है। जब **एशिया** में पहुँचती है, तो वह **पूर्वी हिन्द** के **द्वीपसमूह** से टकराकर कई धारों में फैल जाती हैं। एक धार **जापान** के पूर्व होती हुई **बैरिंग** के मुहाने तक चली गई है। फिर वहां से **पासिफ़िक महासागर** में लौट आती है।

१६६-**गल्फ़ स्ट्रीम** * (Gulf-Stream) गल्फ़

* गल्फ=खाड़ी, स्ट्रीम=धार।

स्ट्रीम भी जापानी धार की तरह हवा के कारण अफ्रीका के पश्चिमी किनारों से बहनी शुरू होती है। यहां इस धार की उष्णता ८०° से कम नहीं होती। जब यह **मैक्सिको की खाड़ी** में पहुँचती है, तो और भी गर्म होजाती है। मैक्सिको की खाड़ी से निकलकर **उत्तरीय अमेरिका** के उत्तर पूर्व को चली जाती है। इसके रास्ते में एक ठंडी धार सामने की ओर से आती है। इस स्थान से कुछ दूर और जाकर एक धार **अफ़्रीक़ा** की ओर आजाती है और दूसरी यूरप की ओर।

आबहवा पर समुद्रों की नदियों का असर

१९७—**उष्ण कटिबन्ध** में तीन हज़ार फ़ीट की गहराई पर समुद्र के पानी की उष्णता ३२° से ३५° फ़ारनहीट तक होती है, परन्तु सतह पर का पानी ८०° फ़ार्नहीट से कम नहीं होता। देशों की आब हवा पर इन धारों का बहुत असर पड़ता है। ऐसी गर्म धारें जब ठंडे देशों में पहुँचती हैं, तो उनके ऊपर की गर्म हवा वहां की सर्दी को कम कर देती है, जैसे **जापानी धार** से **जापान** के पूर्वी भाग की आबहवा जाड़ों में बहुत सर्द नहीं होने पाती। **दक्षिणी महासागर** की धारें **आस्ट्रेलिया और अफ़्रीक़ा** की आबहवा को थोड़ा बहुत सर्द कर देती हैं।

यदि यह धारें न होतीं, तो गर्म देशों की आबहवा और भी गर्म और सर्द देशों की और भी सर्द होती। जिस तरह इंगलैंड में नलों के द्वारा गर्म पानी पहुँचा कर मकानों को गर्म रखते हैं, उसी तरह ईश्वर ने यह प्रबन्ध किया है कि इन गर्म धारों के नलों से उष्ण कटिबन्ध के गर्म समुद्रों का पानी सर्द मुल्कों तक और सर्द समुद्रों का पानी गर्म देशों तक पहुँचता है। इस तरह वहां की आबहवा सामान्य (अर्थात् न बहुत ठंडी और न बहुत गर्म) रहती है।

नोट—भूगोल जाननेवालों की पहिले यह राय थी कि जाड़ों में इसी **गल्फ़स्ट्रीम** के कारण इंगलैंड की सर्द हवा कुछ गर्म होजाती है, परन्तु यह ठीक नहीं। गल्फ़ स्ट्रीम की गर्मी उत्तरीय अमेरिका के उत्तर पूर्व तक पहुँच कर जाती रहती है।

१९८—**समुद्र के नदी नाले**—जिस प्रकार ज़मीन पर छोटे छोटे नदी नाले होते हैं, उसी तरह समुद्रों में कुछ दिनों तक हवा के चलने से पानी थोड़ी गहराई तक छोटी छोटी नदियों की तरह बहने लगता है। उनकी चौड़ाई समुद्र की नदियों से बहुत कम होती है। चाल भी साधारण होती है। हवा बन्द होजाने पर यह नाले भी बन्द होजाते हैं। हवा की दिशा बदल जाने पर इनकी दिशा बदल जाती है (धारों का नक़्शा देखो)। **बंगाले की ग्वाड़ी** में एक छोटा नाला **मानसून हवा** के चलने के समय पैदा हो जाता है जिसका चित्र नक़्शे में दिखाया गया है। उसकी चाल २ या ३ मील प्रति घंटा है। अंगरेज़ी में इस प्रकार

की छोटी नदी को ड्रिफ्ट कहते हैं। ड्रिफ्ट का अर्थ है बहती हुई चीज़।

१९९—**पैदावार**—यहां वही बनस्पतियां पैदा होती हैं जो चीन में। (पैदावार का नक़्शा देखो)

खनिज पदार्थ—खानों से चांदी, लोहा, कोयला, तांबा, सीसा, गंधक और सुर्मा निकाला जाता है। लोहा बहुत अच्छा होता है। इसी कारण यहां की तलवारें बहुत पसन्द की जाती हैं। तांबा भी प्रायः साफ़ और अधिक पाया जाता है। कोयले की खानें बहुत हैं और उन में से कुछ समुद्र के पास हैं।

२००—**पशु** (मछलियों की बहुतायत) अधिक खेती होने के कारण चीन की तरह यहां भी फाड़ खाने वाले जानवर बहुत कम हैं। घोड़े और बैल मुख्य पालतू जानवर हैं। जापान के पास समुद्रों में विशेष कर उत्तर की ओर मछलियां अधिक पाई जाती हैं। इसका कारण यह है कि उन द्वीपों के पास समुद्र उथले हैं, जिनमें सरवाल की तरह एक घास अधिक होती है जो मछलियों का मुख्य भोजन है। इस घास से थोड़ीही गहराई में उनको अंधेरा भी काफ़ी मिल जाता है। **कमचटका की ठंडी धार** में मछलियां अधिक पाई जाती हैं और उनका शिकार भी बहुत होता है। यहां के लोग मछली बहुत खाते हैं।

२०१—**शिल्प और कारीगरी**—खेती यहां के लोगों का खास पेशा है। इसके बाद मछलियों के शिकार का नम्बर है। जापानी किसान चीनियों की तरह खेत खूब

जोतते और कमाते हैं। चूंकि यह देश पहाड़ी है, इसलिये खेत बड़े बड़े नहीं हैं और हल के बदले फावड़ों और कुदालों से पृथ्वी खोदी जाती है। वास्तव में यहां के किसान माली हैं और उन्होंने पूरे देश को फुलवाड़ी बना रक्खा है।

२०२–प्राचीन कारीगरी–चीनी मिट्टी के बर्तनों पर तेल से बेल बूटे बनाये जाते हैं।



چینی برتنوں پر بیل بوٹے بنانا (جاپان)

चीनी बर्तनों पर बेल बूटे बनाना (जापान)

यहां कागज भी बहुत अच्छा बनता है और अनेक कामों में आता है। इसके रूमाल, पंखे, मोमी कोट, छतरियां, खिलौने, पर्दे आदि बनते हैं। हाथीदाँत के काम और पची-कारी में यह लोग बड़े चतुर हैं।

२०३—नवीन शिल्प और कारीगरी में जापान एशिया के सब देशों से बढ़ा हुआ है। यहां बड़े बड़े स्टीमर, कलें, दियासलाई, सूती और रेशमी कपड़े अच्छे बनते हैं। कपड़ों में सफ़ाई और सुन्दरता अधिक होती है। यहां की बनी हुई बहुतसी चीजें हिन्दुस्तान में आती हैं।

२०४—आने जाने के रास्ते—किनारों पर के शहरों में जहाजों के द्वारा आना जाना होता है। कोयला और लोहे की बहुतायत से रेल की बहुतसी सड़कें जारी हैं, विशेषकर दोनों किनारों की ओर। साधारण सड़कों पर एक प्रकार की ठेलागाड़ी † चलती है जिसको आदमी खींचते हैं।



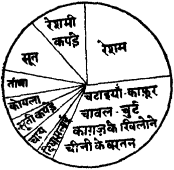
جاپانی گاڑی

जापानी गाड़ी।

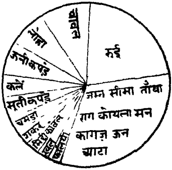
† जापानी इस गाड़ी को "रिक्शा" कहते हैं।

२०५—व्यौपार—इन वृत्तों से जापान के व्यौपार का हाल प्रकट होता है ।

जापान से जाने वाली चीज़ें



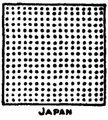
जापान में आने वाली चीज़ें



जब से अन्य देशों के सौदागरों को **जापान** के कुछ बन्दरगाहों में व्यौपार करने की आज्ञा मिली है, तब से यहां का व्यौपार बहुत बढ़गया है ।

२०६—आबादी और **प्रसिद्ध नगर**—क्षेत्रफल के विचार से जापान की आबादी घनी है । इसका उत्तरीय भाग दक्षिणीय भाग से कम बसा हुआ है, क्योंकि वहां सर्दी अधिक पड़ती है । कुल आबादी हिन्दुस्तान की आबादी के सातवें भाग के लगभग है ।

جاپان

आबादी का औसत  प्रति वर्गमील

जापान में इतने बड़े शहर नहीं हैं जितने **चीन** में। **टोक्यो** जिसका पहिला नाम **यड्डो** (Yeddo) था जापान की राजधानी है। जब से बादशाह यहां रहने लगा, यह नाम पड़ गया। इसमें बहुतसी नहरें हैं (चित्र देखो)।



घर प्रायः बाँस और कागज के बने हुये हैं । भूकम्प में ऐसे घरों से जान और माल की हानि तो कम होती है, परन्तु आग अधिक लगा करती है । यहां पीतल और रोगनी चीजों का काम अच्छा बनता है ।

योकोहामा (Yokohama) का बन्दरगाह **टोक्यो** के दक्षिण में है । इस बन्दरगाह में **यूरप** और **अमेरिका** के व्यौपारियों के जहाज बहुधा आया करते हैं ।

ओसाका (Osaka) व्यौपार, शिल्प और कारीगरी में दूसरे नम्बर का शहर है, परन्तु इसमें **टोक्यो** से नहरें अधिक हैं । इस बन्दरगाह में भी और देशों के लोग व्यौपार कर सकते हैं ।

कोबी के बन्दरगाह में भी और देशों के लोगों को व्यौपार करने की आज्ञा है ।

नागासाकी (Nagasaki) **निगाटा** (Nigata) **हैकोडेट** (Hakodate) पश्चिमी किनारे के प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं, जहां और देशों के लोगों को व्यौपार करने की आज्ञा है ।

क्योटो (Kioto) बहुत दिनों तक जापान की राजधानी रहा । यह नगर अब भी बहुत सुन्दर और विद्या और शिल्प का केन्द्र है । यहां के कारीगर चित्रकारी, रेशमी कपड़े और जरदोजी के काम में बड़े चतुर हैं ।



चित्र ६०. ऐनू

२०७—**बाशिन्दे**—इस देश के असली बाशिन्दे ऐनू हैं जो आजकल **यज़ो** और **क्यूराइल** के द्वीपों में बसे हुये हैं। उनके शरीर पर बाल बहुत होते हैं। लड़कों की पीठ पर बिल्ली के से बाल होते हैं। यह भालू का मांस बड़े चाव से खाते हैं (चित्र देखो)। जापानी **मंगोल** जाति के हैं, जो **कोरिया** की राह से यहां आकर बसे। यहां के किसानों में **मल्य** जाति का कुछ अंश पाया जाता है।

२०८—**स्वभाव**—जापानियों की शक्ल सूरत और रहन सहन **चीनियों** से मिलती जुलती है, परन्तु, चीनियों की तरह यह लोग आप अपने ऊपर लट्टू नहीं हैं। और देशों की अच्छी बातों को अपने यहां जारी करते हैं। जापानी लोग सोच समझकर खर्च करते हैं। किसी को दुखी देखकर दया करने से नहीं रुकते और सब से मलमनसाहत का बर्ताव करते हैं। चीनियों से यह अधिक समझदार और बहा-

दूर होते हैं । साफ़ सुथरे भी अधिक रहते हैं । नहाने में हिन्दुओं को भी मात करते हैं, क्योंकि दिन में कई बार स्नान करते हैं, परन्तु अधिकतर गर्म पानी से । इन लोगों को फूलों का जितना शौक़ है उतना एशिया की और किसी जाति को नहीं । जहाज़ चलाने में भी एशिया की और कोई जाति इनकी बराबरी नहीं करसकती । इसका मुख्य कारण यह है कि यह देश चारों ओर पानी से घिरा हुआ है । समुद्र में चट्टानों के होने के कारण जहाज़ चलाने में बहुत साव-धानी करनी पड़ती है ।



بودھ کی مورت (جاپان)

गौतम बुद्ध की मूर्ति (जापान)

२०१—धर्म—चीनियों की तरह जापानी भी अपने मा

बाप की आज्ञा बहुत मानते हैं और अपने पुरुषाओं की पूजा भी करते हैं। कुछ **बौद्धधर्म** के माननेवाले हैं और कुछ **हकीम कनफ्यूशस** की सदाचार की शिक्षाओं पर चलते हैं। बौद्धधर्म का अब उतना असर नहीं है जितना पहिले था। महात्मा बुद्धजी की मूर्ति का यह चित्र लगभग ६०० वर्ष पहिले का बना हुआ है। यहां बौद्ध मत छठी सदी में **कोरिया** से फैला था।

२१०—**शिक्षा**—जापान के लोगों की पढ़ने लिखने में बड़ी प्रीति है। वह उसके लिये खर्च भी बहुत करते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा * के लिये बहुतसी पाठशालायें हैं। बड़ी बड़ी पाठशालाओं में यूरप के विद्वान नौकर हैं। यहां के हजारों विद्यार्थी और देशों में शिक्षा पाने के लिये जाते हैं।

२११—**राज्यप्रबन्ध**—जापान के महाराज की पदवी **मिकाडो** है। लोग देवता की तरह उनका मान और आदर करते हैं। इसी वंश में हजारों वर्ष से बराबर राज्य चला आरहा है। अमीरों और साधारण प्रजा के लोगों की दो सभायें भी राज्यप्रबन्ध में राय देने के लिये बनी हुई हैं।

जापान का और देशों में अधिकार।

(१) **कोरिया**—यह प्रायद्वीप पहिले चीन के आधीन

* दर्जा ४ तक की पढ़ाई।

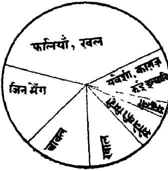
था। सन् १८९४ ई० में स्वतन्त्र होगया। अब सन् १९०५ ई० से जापान के आधीन है।

बनावट—यह देश बहुत पहाड़ी है। यहां सोना, चाँदी, लोहा, कोयला आदि पाये जाते हैं। जापान की तरह यहां भी ज्वालामुखी पर्वत हैं। पूर्वीभाग जो समुद्र और पहाड़ों के बीच में है अधिक उपजाऊ है। पश्चिमीभाग में नदियों की ऊंची नीची घाटियां हैं। नदियां छोटी छोटी और तेज़ हैं जिनमें बन्दरगाहोंसे बहुत दूरतक माल नहीं आ जा सकता। यहां की आबहवा महाद्वीपी है। मेह इतना बरस जाता है कि मामूली अनाज पैदा होजाते हैं। धान के लिये सिंचाई की आवश्यकता होती है।

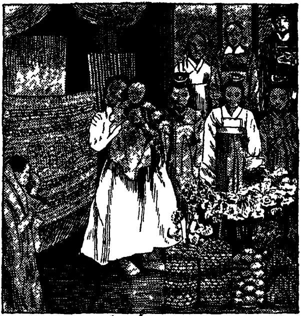
कोरिया में आने वाली चीज़ें



कोरिया से जानेवाली चीज़ें



बाशिन्दे—यहां के लोग भी **मंगोल** जाति के हैं। इनकी रहन सहन अच्छी है और यह बुद्धिमान मालूम होते हैं। वस्त्र ढीले ढाले पहनते हैं, जैसा कि इस चित्र से प्रकट है। यह चित्र एक विवाह के समय का है। सिवेल (Seoul) इसकी राजधानी है।



کوریا کے باشندے कोरियाके बाशिन्दे

(२) **फ़ारमूसा**–सन् १८९५ ई० में यह द्वीप जापानियों के हाथ में आया । यहां पहिले चीनियों का राज्य था । इसका मध्य और पूर्वीभाग पहाड़ी है । इन भागों में पेड़ों के जंगल बहुत हैं जिनमें कपूर के पेड़ अधिकतर हैं । (कपूर के पेड़ का चित्र पूर्वी द्वीपसमूह के वर्णन में देखो) पश्चिमी भाग मैदान है । यहां चीनी बसे हुये हैं और वह चाय, शक्कर और धान आदि की खेती करते हैं । यहां के असली बाशिन्दे **मलय** जाति के हैं । उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो आदमियों को मारकर उनका सिर अपने गांव में लटका देना बड़ी बात समझते हैं । इसमें चार बन्दरगाह हैं जिनमें से **तमसुई** और **टकाव** बहुत प्रसिद्ध हैं ।

यहां का बना हुआ माल अंगरेजी व्यौपारी अधिकतर मोल लेते हैं ।

(३) **लूचू के द्वीप** सन् १८७९ ई० में जापान के अधिकार में आये ।

(४) **क्यूराइल के द्वीप** सन् १८७५ ई० में **जापान** को **रूस** से **शंघालियन द्वीप** के बदले में मिले थे । जैसा कि पहिले लिख चुके हैं इन द्वीपों में भी ज्वालामुखी पर्वत हैं । यहां की धरती उपजाऊ नहीं है । सर्दी भी अधिक पड़ती है । इस कारण यहां की आबादी कम है ।

प्रश्न

१–जापान के राज्य में कौन कौनसे द्वीप हैं ?

२–कौन कौनसे मुहाने जापान के द्वीपों को एशिया से अलग करते हैं ? जापानकी प्रसिद्ध खाड़ियां कौन कौनसी हैं ?

३–मुख्य जापान के द्वीपों की बनावट बताओ।

४–जापान की नदियां छोटी और तेज क्यों हैं ? वह व्यौपार के लिये कितनी उपयोगी हैं ?

५–फ्यूजीयामा क्या है और किस तरह बना है ?

६–ज्वालामुखी पर्वत किसे कहते हैं ? यह किस तरह बनते हैं और प्रायः कहां पाये जाते हैं ?

७–कौनसा ज्वालामुखी पर्वत हिन्दुस्तान के पास है ?

८–क्रेटर (ज्वालामुखी पर्वत का मुँह), पिघले हुये द्रव पदार्थ और भूकम्प से क्या समझते हो ?

९–आग्नेय पत्थर से क्या समझते हो ? वह किस तरह बनते हैं ?

१०–ज्वालावृष्टि का क्या मतलब है और इसके क्या कारण हैं ?

११–भूकम्प आने के क्या कारण हैं ?

१२–हिन्दुस्तान में भूडोल प्रायः कहां कहां आया करते हैं ? उनके क्या कारण हैं ?

१३—ज्वालावृष्टि के समय क्या दशा होती है ? उससे और भूकम्प से मनुष्यों को किस प्रकार का लाभ पहुँचता है ?

१४—पासिफ़िक महासागर में एशिया के पूर्व की ओर द्वीपों की संख्या क्यों अधिक है ?

१५—जापान की आबहवा कैसी है ? चीन की आबहवा से मुक़ाबिला करो।

१६—जापान के उत्तर पूर्व में कुहरा क्यों अधिक पड़ता है ?

१७—समुद्र की नदियों (करेंट) से क्या समझते हो ? इनके बनने के क्या कारण हैं ?

१८—समुद्र के नालों से क्या समझते हो ? हिन्दुस्तान के पास किस समुद्र में ऐसे नाले बहते हैं और क्यों ?

१९—जापान की पैदावार बताओ। यहां के समुद्रों में मछलियां क्यों अधिक पाई जाती है ?

२०—जापानियों ने शिल्प और कारीगरी में एशिया की और जातियों से क्यों अधिक उन्नति की है ?

२१—जापान की प्राचीन और नवीन कारीगरी की कौन कौन सी चीजें हैं ? यहां के खानिज पदार्थों पर उनका कहां तक असर पड़ता है ?

२२—जापान के प्रसिद्ध बन्दरगाह लिखो। यहां एशिया के और देशों से बन्दरगाह क्यों अधिक हैं ?

२३—जापान के असली बाशिन्दे कौन हैं और कहां बसे हुये हैं ?

२४—जापान के लोग किस जाति के हैं ? उनके और चीनियों के स्वभाव और चाल चलन में क्या अन्तर है ?

२५—जापानियों के धर्म और शिक्षा का ढग लिखो। यहा बौद्ध धर्म किस तरह और कब फैला ?

२६—जापानियो के राज्यप्रबन्ध का हाल बताओ।

२७—नीचे लिखे हुये क्या हैं ? यदि उनमे से किसी में कोई मुख्य बात हो तो बताओ·—

शकर शीमा, हैकोडेट, क्यूशू, टोक्यो, योकोहामा, क्योटो, ओसाका, नागासाकी, कोगोशीमा, निगाटा, क्यूगेस्शिओ।

२८—जापान का और देशो में बड़ा बड़ा अधिकार कहां कहा है ? उनकी पैदावार और बाशिन्दों का हाल लिखो।

२९—जापानी लोग जहाज चलाने मे क्यों चतुर होते हैं ?

३०—जापान एशिया का इगलैड कहा जाता है। इसका क्या मतलब है ?

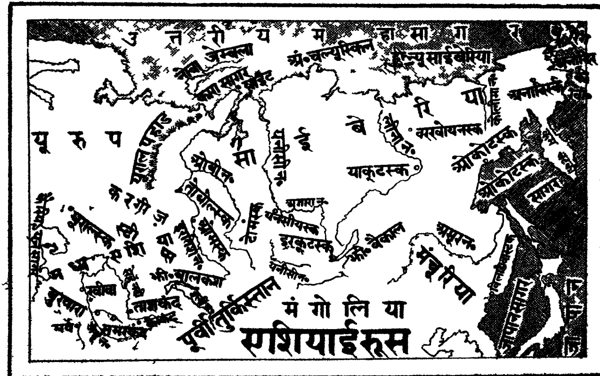
एशियाई रूस (Asiatic Russia)



२१२–दूसरे हिस्से मे यह तो लिखा जा चुका है कि **रूस का राज्य** यूरप के आधे भाग में फैला हुआ है, इसको **यूरपी रूस** कहते है। इस भाग के पूर्व में भी एशिया का चौथाई से कुछ अधिक भाग इस राज्य के आधीन है, इसको **एशियाई रूस** कहते हैं। यूरप के राज्या मे से केवल रूस ही का राज्य ऐसा है जो दोनों महाद्वीपों में लगातार फैला हुआ है। इसकी एक सरहद हिन्दुस्तान की सीमा से पामीर (बामे दुनिया) पर मिलती है।

एशियाई रूस के प्राकृतिक भाग तीन हैं

(१) साईबेरिया (२) रूसी मध्य एशिया (३) काकेशिया (क़ौक़ास) के ज़िले।


उत्तरीय महासागर
नोवा जेम्बला
कारा सागर
न्यू साइबेरिया
यूरुप
यूराल पहाड़
ओबी न.
तोबोल्स्क
ओम्सक
येनीसी न.
याकुटस्क
लीना न.
वरखोयनस्क
ओखोटस्क
सागर
यनीसीयस्क
इरकुटस्क
झी. बैकाल
आमूर न.
मंचूरिया
येनीसी न.
पूर्वी तुर्किस्तान
मंगोलिया
एशियाई रूस
जापानसागर
झी. बालकश
ताशकंद
बुखारा
खीवा

साईबेरिया (Siberia)

२१३–सोलहवीं सदी में तातारियों के उस देश को जो **इर्तिश नदी** के किनारे था, रूसी लोग **साईबर** (Siber) कहते थे। जब रूसियों का राज्य इस ओर बढ़ा, तो वह इस पूरे देश को **साईबेरिया** कहने लगे।

२१४–**सीमा और विस्तार**–इस देश के उत्तर में उत्तरीय महासागर, पूर्व मे पासिफ़िक महासागर, दक्षिण में चीन का राज्य और रूसी मध्य एशिया और पश्चिम में यूरपी रूस है, अर्थात् ओबी, यनीसी, लीना और अमूर के बेसिन इस मुल्क मे शामिल है। यूरपी रूस की सीमा एशिया में यूराल पहाड़ के कुछ आगे तक है।

२१५–**बनावट** (अ) एशिया के प्लेटोओ और मैदानों के नक़्शे देखो। साईबेरिया का बड़ा भाग चौरस मैदान है जिसके उत्तरीय भाग की पृथ्वी बहुत नीची है। इसके दक्षिण में **अल्टाई** (Altai) **थियान शान** (Thian-Shan) इत्यादि पहाड़ चीन की सीमा पर हैं। इस कारण इसका ढाल उत्तर की ओर है। **याबलोनोई** (Yablonoi) और **स्टानोवाई** (Stanovai) के पहाड़ों के कारण दक्षिणी पूर्वी कोने का ढाल पासिफ़िक महासागर की ओर है (अमूर नदी को देखो)।

(ब) पश्चिम से पूर्व की ओर जाने में भी इस मैदान का धरातल ऊंचा होता जाता है। इस विचार से साईबेरिया के दो भाग हैं :–

(१) **पश्चिमी साईबेरिया**–इसमें यूराल पहाड़ और यनीसी नदी के बीच की जमीन शामिल है, जिसमें सैकड़ों मील तक दलदल ही दलदल है।

(२) **पूर्वी साईबेरिया**–यह ऊंचा और पहाड़ी मैदान यनीसी नदी के पूर्व मे है, परन्तु इसके पहाड़ इतने ऊंचे नहीं हैं जितने दक्षिणी सीमा के। कमचटका के बर्फि-स्तानी पहाड़ ज्वालामुखी हैं।

२१६–**झीलें**–बैकाल झील (Baikal lake) जिसके मीठे पानी का वर्णन हो चुका है इसी साईबेरिया में है। इसके पानी का फैलाव अवध के दो तिहाई क्षेत्रफल के



झीलबैकाल جھیل بیکال

बराबर है और यह दुनिया की सब झीलों से अधिक गहरी है। कहीं कहीं तो यह इतनी गहरी है जितनी समुद्र से * अलमोड़े की ऊँचाई। चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई है। इस का दृश्य बड़ा मनोहर है। अंगारा नदी इसी झील से निकली है।

२१७–**नदियां**–यहां की चारों बड़ी नदियों और उन की सहायक नदियों का जाल इस प्रकार फैला हुआ है कि अगर कोई मनुष्य **टोबल** (Tobal) नदी से छोटी नाव पर सवार होकर सफ़र करे, तो वह पासिफ़िक महासागर तक पहुँच सकता है, परन्तु कहीं कहीं नाव को एक नदी से दूसरी नदी तक उठाकर स्थल में लेजाना पड़ता है। रूस के यात्रियों ने इसी तरह इस देश के भिन्न भिन्न भागों का पता लगाया था।

गर्मी के दिनों मे इन जल के रास्तों से ३० हजार मील तक माल आ जा सकता है। टोबल (Tobal) इर्तिश (Irtish) और अंगारा (Angara) प्रसिद्ध सहायक नदियां हैं।

यनीसी और लीना का पाट बहुत ही बड़ा है। यनीसी

---

* अलमोड़े के उस भाग से मतलब है जो ४५०० फ़ीट ऊंचा है।

की चौड़ाई का औसत १० मील है। समुद्र से २०० मील इधर इसकी चौड़ाई ६० मील के लगभग है। कहीं कहीं लीना की चौड़ाई भी १५ मील है। इतनी अधिक चौड़ाईका सबब यह है कि बर्फ़ के कारण इन नदियों के दहाने गर्मियों में भी पूरे पूरे नहीं खुले रहते, इसलिये दक्षिण में अधिक बर्फ़ के पिघलने से इनका पानी दूर तक फैल जाता है। वर्षा का औसत साल भर में ८ इंच भी नहींहै। इससे आश्चर्य्य होता है कि इतना पानी इन नदियो में कहां से आता है। चूंकि साईबेरिया के उत्तर की धरती पर प्रायः साल भर बर्फ़ जमी रहती है, इस लिये मेह के पानी की एक बूंद भी धरती के नीचे नहीं जाती। बड़े शोक की बात है कि इतना पानी उत्तरीय महासागर में बर्फ़ बनने के लिये चला जाता है और गंगा और ब्रह्मपुत्र की तरह सिंचाई में बहुत ही कम खर्च होता है।

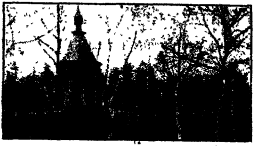
२१८—**आब हवा** (ऋतुओं का नक़्शा देखो) साईबेरिया का देश सर्दी के कारण इतना बदनाम होगया है कि बहुधा विद्यार्थी उसका नाम लेते ही कांप उठते हैं। इतना डरने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यहां न तो साल भर बर्फ़ से अधिक जाड़ा पड़ता है और न हर भाग में बहुत गर्मी ही रहती है। दक्षिणी भाग इतना ठंडा नहीं रहता। अक्तूबर ही में झीलें, नदियां, दलदल आदि सब बर्फ़ से

ढक जाते हैं और उनमें तह तक बर्फ़ जमी रहती है। इन पर गाड़ों के बदले बिना पहियों की गाड़ियां चलती हैं।



बेपहिये की गाड़ी।

पेड़ों के भीतर भी बर्फ़ जमजाती है जो कि कुल्हाड़ी से भी काटे नहीं कटती (नीचे के चित्र में बर्फ़ से ढकेहुये पेड़ों को देखो)।



साइ बेरियाके किसान

سائی بریاکے کسان

थर्मामीटर का पारा भी जम जाता है। चिड़ियां हवा में उड़ती उड़ती बर्फ़ से लिपट कर मर जाती और जमीन पर गिर पड़ती हैं। जाड़ों में बिलकुल सन्नाटा रहता है।

वर्खोयनस्क (Verkhoynsk) से बढ़ कर दुनियां में कोई ठंडा स्थान नहीं है। एक यात्री ने लिखा है कि इस स्थान पर थर्मामीटर का पारा शून्य से ६० अंश नीचे उतर आता है। ५०° से ७०° तक नीचे उतर आना एक मामूली बात है। कहीं कहीं बर्फ़ ६०० फ़ीट तक जम जाती है। गर्मियों में यहां गर्मी भी खूब पड़ती है। इस ऋतु में यहा की उष्णता कुछ दिनों तक १०२° फ़ार्नहीट रहती है। इतनी गर्मी ऐसे स्थान के लिये जो भूमध्यरेखा से बहुत दूर है अधिक है। कुछ हफ़्तों तक अधिक गर्मी रहती है और ६ महीने के लगभग जाड़े की ऋतु बनी रहती है।

ऐसी आबहवा के यह कारण हैं :-

(१) साईबेरिया भूमध्य रेखा से बहुत दूर है।

(२) मैदान होने के कारण उत्तरीय ध्रुव से यहां सीधी हवा आती है।

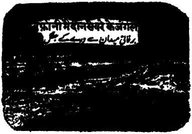
(३) दक्षिण में ऊंचे ऊंचे पहाड़ होने से उष्णकटिबन्ध की गर्म हवा इस मैदान तक नहीं पहुँच सकती।

(४) समुद्र भी इस मैदान से दूर हैं और जो पास हैं, वह इतने छोटे हैं कि इतने बड़े मैदान की सर्दी और गर्मी को कम नहीं कर सकते ।

(५) गर्मियों में मध्य एशिया के रेगिस्तानों की गर्म हवा बिना रुकावट के यहां आती है ।

२१६—वनस्पति सम्बन्धी पैदावार के विचार से साईबेरिया के तीन भाग हैं (एशिया की प्राकृतिक पैदावार का नक़्शा देखो)





(१) बर्फ़ का मैदान—साईबेरिया का उत्तरीय भाग जो उत्तरीय महासागर के पास है, बर्फ़ से ढका हुआ मैदान

है। यहां गर्मियों में भी सूर्य्य की किरणें सब बर्फ़ को नहीं पिघला सकतीं। गर्मियों में बर्फ का ऊपर का भाग तो कुछ पिघल जाता है, परन्तु नीचे की तह कई फ़ीट तक जमी रहती है। इस दलदल मे काई और कहीं कहीं अगास बेल और झरबेरी से मिलती हुई छोटी छोटी झाड़ियां पाई जाती है। अंगरेजी मे ऐसे मैदान को **टुन्डरा** कहते है। यहा केवल कुछ ऐसे जगली लोग रहते है जो घर बनाकर नहीं बसते।



अगासबेल

(२) **वृक्षों का मैदान**—जहा बर्फ़ के मैदानो का अन्त होता है, वहा बेंत और भोजपत्र के छोटे छोटे पेड़ कहीं कहीं पाये जाते हैं, फिर बड़े बड़े पेड़, विशेष कर चीड़ के पेड़, मिलते है। इन वृक्षो के घने बन हजारों मील तक



भोजपत्र और चीड़ के पेड।

फैले हुये हैं। इन बनों के भीतर का हाल ठीक ठीक नहीं मालूम हो सकता, क्योंकि यहा घनी झाड़िया होती हैं और दलदल भी अधिक रहती है। इन बनो में केवल नदियों के किनारे किनारे ही आना जाना सम्भव है। इस बन के दक्षिण में भी उत्तर की तरह कहीं कहीं छोटे छोटे पेड़ पाये जाते हैं। देवदार और दूसरे प्रकार क भी पेड़ होते हैं, परन्तु चीड़ के पेड़ बहुतायत से है। यहा शहतीरो का व्यौपार होता है।

(३) **बिना वृक्षों की ज़मीन अर्थात् घास का मैदान**—यह भाग इन बनों के दक्षिण में मध्य एशिया और सरहद्दी पहाड़ों की ओर फैला हुआ है। इसमे **घास ही घास** पैदा होती है। जहा करियल * मिट्टी होती है, वहा घास की तरह क छोटे छोटे अनाज के पौधे गेहू, जौ इत्यादि पैदा होत हैं। इस भाग में वृक्ष नही हाते। नदियों



* बनारस की कमिश्नरी म ऐसी ज़मीन को जहा काली मिट्टा होती है करियल कहते हैं।

की गहरी घाटियों में कुछ ऊंचे ऊंचे वृक्ष भी होते हैं, जैसे काशगर और खुतन आदि नदियों की घाटियों में। यह भाग भी जंगलों की तरह कहीं चौरस, कहीं ऊंचा नीचा और कहीं पहाड़ी होता है। **अर्द्ध मरुभूमि** वह है जिसमें कहीं कहीं छोटी छोटी झाड़ियां और कुछ कुछ घास होती है। यह घास का मैदान जंगल और अर्द्ध मरुभूमि के बीच में है। इस भाग को अंगरेजी में **स्टैपी** कहते हैं। ओमस नगर का चित्र देखो जिसमें एक भी वृक्ष नहीं है।

यहां वृक्ष क्यों नहीं होते? मंगोलिया, पूर्वी तुर्किस्तान, दक्षिणी-पश्चिमी साईबेरिया आदि भागों में वृक्ष न होने का पहिला कारण गर्मी और सर्दी की अधिकता है। दूसरा कारण हवा की खुश्की और तीसरा वृक्षों के लिये काफ़ी मेह का न मिलना है। यहां जून में थोड़ा मेह बरस जाता है जिसका बहुत कम भाग पृथ्वी के भीतर जाता है। बसन्त ऋतु और जाड़ों में तो जून से भी कम मेह बरसता है। जाड़ों में बर्फ़ इतनी कम पड़ती है कि वृक्षों के लिये उसके पिघलने से पूरा पूरा पानी नहीं मिलता। जाड़ों की ठंडी हवा पृथ्वी के धरातल को और भी सुखा देती है। पाला अगस्त ही में पड़ने लगता है जिसके कारण पेड़ बढ़ने ही नहीं पाते। बर्फ़ के पिघलने और गर्मियों की वर्षा से घास और गेहूं के लिये कुछ पानी मिलजाता है। यहां अप्रैल

के दूसरे हफ़्ते में बर्फ़ पिघलते ही घास उगने लगती है। अन्न भी उसी समय बोया जाता है। जूलाई में जब गर्मी अधिक पड़ती है, तब घास और अनाज दोनों पकजाते हैं।

यह चटियल मैदान इन्हीं तीन महीनों में हरा भरा हो जाता है। जाड़ों में जो चिड़ियां यहां से चली जाती हैं, वह भी इस ऋतु में फिर लौट आती हैं और करग़ीज़ लोग अपने पशुओं को लाकर यहां बस जाते हैं।

२२०—**गेहूं, जौ और राई की खेती**—साईबेरिया के दक्षिण-पश्चिम की ओर **ओबी नदी** की घाटी



में और दक्षिण पूर्व की ओर **अमूर नदी** की घाटी में गेहूं की खेती होती है। कुछ आगे बढ़कर उत्तर की ओर जौ की खेती होती है, क्योंकि जौ अधिक सर्दी सह सकता है और गेहूं की अपेक्षा कम गर्मी में पक जाता है। बोने के दो महीने बाद ही इसकी फ़स्ल तैयार हो जाती है। रूसी राज्य के नक़्शे में जौ और गेहूं की खेती की सीमायें दिखाई गई हैं। दोनों लकीरों में से ऊपर की लकीर जौ की सीमा को बताती है। (एशिया की पैदावार का नक़्शा भी देखो) यहां अल्ताई पर्वत के उत्तर में एक एकड़ पृथ्वी का लगान तीन चार आने देना होता है। किसानों की कमी के कारण खेती पूरे तौर पर नहीं होती।

२२१—**खानिज पदार्थ**-यह देश खानिज पदार्थों का घर है। यूराल और यनीसी की घाटियों, अल्ताई और स्यान के पहाड़ों और बैकाल के सूबो मे साना निकाला जाता है। यहा स सान की खानें शुरू हा कर अमेरिका तक चली गई हैं। सोने क सिवाय लोहा ताँबा सासा और चादी भ निकाली जाती है। अल्ताइ पर्वत और शघालियन द्वीप मे कोयला भी निकलता है। इस दश क यहा मख्य व्यौपारिक पदाथ है।

बहुत ही पुराने समय के ऊनी बाल वाले हाथी और गेंडा



بہت ہی پرانے زمانے کے اونی بال والے ہاتھی گینڈا

२२२—**बर्फ स दबे हुये हाथी**—इस देश के व्यौपार की एक अनाखी सम्पत्ति एक प्रकार के हाथी है, जो **न्यू-साईबेरिया** और **ल्याखू** के द्वीपों मे बर्फ के नीचे

दबे हुये पाये जाते हैं । (पैदावार का नक़्शा देखो)।

सन् १८०३ ई० में किसी मछुआरे ने एक हाथी की लाश बर्फ़ में दबी हुई पाई, जिसका ऊन, बाल और मांस सब वैसे के वैसे ही बने हुये थे । उसने केवल दाँत काटकर बेच दिये । जब इस बात की खबर और लोगों को मिली, तो वह उस स्थान पर आये और वह लाश दो साल के बाद सन् १८०५ ई० में वैसी ही पाई गई, क्योंकि बर्फ़ के भीतर दबी हुई चीज़ें हजारों वर्ष तक नहीं बिगड़तीं । इस हाथी की लम्बाई १६ फ़ीट और उँचाई ९ फ़ीट थी । उस के लम्बे और कड़े बालों और भूरी ऊन से प्रकट होता है कि किसी समय में इस प्रकार के हाथी इस ठंडे देश में रहते थे । अब ऐसे हाथी कहीं जीते हुये नहीं पाये जाते । कहीं कहीं गेंडे भी दबे हुये मिलते हैं ।

२२३—पशु—(अ) बर्फ़ से ढके हुये समुद्रों, झीलों और नदियों में मछलियां बहुतायत से पाई जाती हैं । जिस प्रकार रेगिस्तान के लोगों के लिये ऊंट उपयोगी है, उसी तरह बर्फ़ से ढके हुये मैदान की समाइड (Samoid) जाति के लोगों के लिये जो घर बनाकर नहीं रहते बारहसिंहा है ।



सामाइडलोग ।

वह इसीका दूध पीते है, इसीका मांस खाते हैं, इसीकी खाल के कपड़े और डेरे बनाते हैं और इसीको गाड़ी में जोतते हैं। जाड़ों में यहा की लोमड़ियों का रंग बर्फ़ जैसा सफ़ेद हो जाता है और गर्मियों में मटियाला, इस लिये वह शिकारियों से बहुधा बच जाती हैं।

बर्फ़िस्तानी बिल्ली ।



बर्फ़िस्तानी नेवला ।



(ब) **वृक्षों वाली ज़मीन** में समूर, क़ाकुम के सिवाय गिलहरी, बिल्ली आदि पशु भी पाये जाते हैं। खाल के व्यौपार के लिये प्रतिसाल ऐसे हज़ारों जानवर शिकार किये जाते हैं।

(स) **बिना वृक्षों की ज़मीन के पशु**–इस भाग में भेंसे और भेड़ बकरियां अधिकता से पाई जाती हैं, क्योंकि यहां घास अधिक होती है। साईबेरिया घोड़ों का घर है। जितने घोड़े यहां होते हैं, उतने एशिया के और किसी देश में नहीं होते। बग़दादी ऊंट जिसके दो कोहान होते हैं, इसी देश में होता है (प्रथम भाग में ऊंट का चित्र देखो)।

२२४–शिल्प और कारीगरी–उत्तरीय भाग के लोगों का ख़ास पेशा शिकार करना, मछली पकड़ना और खानिज पदार्थों का निकालना है।



बारहसिंहे की गाड़ी।

بارہ سنگے کی گاڑی

२२५–आने जाने के रास्ते–इस देश में अच्छी

सड़कें नहीं हैं और हो भी नहीं सकतीं। जाड़ों के दिनों में आने जाने में आसानी रहती है, क्योंकि नदियों, भीलों और बर्फ़ से ढके हुये दलदलों और जंगलों की मुलायम ज़मीन पर बर्फ़ की तहें जमजाती हैं, जिन पर बिना पहिये की गाड़ियां घोड़े, कुत्ते और बारहसिंहे जोतकर चलाई जाती हैं।

२२६–**रेल की सड़कें**–थोड़े दिनों से एक रेल **सेंट-पीटर्सबर्ग** से **मॉस्को** होती हुई पासिफ़िक महासागर तक जारी है, **जिसने पूर्व को पश्चिम से मिला दिया है**। एशिया के राज्यसम्बन्धी नक़्शे में इसके रास्ते और इसके ऊपर के प्रसिद्ध नगर दिखाये गये हैं। इस रेल के कारण व्यौपार और आबादी दोनों में उन्नति हो रही है। जहाज़ की अपेक्षा इस रेल से यूरप और चीन की यात्राओं में कम समय लगता है।

२२७–**साईबेरिया के नगर**–यह कुछ शहरों के सिवाय सब गाँव हैं। सरकारी घर तो पक्के हैं, परन्तु साधारण लोगों के घर बल्लियों के बने हुये है। इनके सूराखों में काई भर दी जाती है जिससे कि बर्फ़ भीतर न जा सके। गली, कूंचे और सड़कें कच्ची हैं। यहां के नगरों के नाम प्रायः नदियों के नाम पर हैं, जैसे टोबलस्क (Tobolsk) टोबल नदी + सक, सक का अर्थ नगर है।



ओमस्क

ओमस्क (Omsk) ओम + सक, इर्तिश और ओम नदी के संगम पर पश्चिमी साईबेरिया का व्यौपारिक स्थान है। यहां मक्खन अधिक बनता है।

टोमस्क (Tomsk) टोम नदी पर है। यह साईबेरिया की यूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय) है।

क्राज़्नोयर्स्क (Krasnoyarsk) यनीसी के सूबे में खानिज पदार्थों का मुख्य व्यौपारिक स्थान है (एशिया का पूरा नक़्शा देखो)।

टोबलस्क (Tobolsk) टोबल और इर्तिश नदी के संगम पर एशियाई रूस की पुरानी राजधानी थी। यहां मछलियें की बहुत बड़ी मंडी है।

इर्कटस्क (Irkutsk) अब इर्कट नदी पर नहीं बसा

हुआ है, बल्कि अंगारा पर है। और नगरों से इसकी आबादी अधिक है। घर भी अच्छे बने हुये हैं। यह पूर्वी साईबेरिया की राजधानी है। यहां चमड़े का व्योपार अच्छा होता है। यहां भूगोल के विद्वानों की एक सभा है जो एशियाई रूस के आस पास के देशों का भूगोल प्रकाशित करती रहती है।

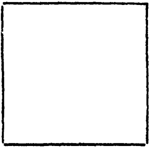
नरचीनस्क (Nerchinsk) में चाँदी, सीसा, ताँबा और लोहा निकाला जाता है, इस लिये यहां रेल की एक शाख चीता होती हुई आई है।



ولاڈی واسٹک विलाडीवास्टक

ब्लाडीवास्टक (Vladivostok) ऐसा बन्दरगाह है जो साल में थोड़े ही दिनों बर्फ़ से बन्द रहता है। प्रायः यहीं से यूरप के यात्री रेल में सवार होते हैं और माल भी आता जाता है।

२२८—**बाशिन्दे**—यह देश क्षेत्रफल में संयुक्त प्रदेश से पांच गुना है, परन्तु इसकी आबादी कलकत्ते की आबादी के पांच गुने से भी कुछ कम है। आबादी का औसत * प्रति वर्ग मील एक मनुष्य है।



यहा ८० प्रति सैकड़ा रूसी और शेष यहां के असली (घर बनाकर न रहनेवाले) बाशिन्दे मंगोल जाति के हैं। (जातियों का नक़्शा देखो)

जाड़ों में समाइड (Samoid) जंगलों में आजाते हैं, क्योंकि यहां शिकार अधिक मिलता है। ओस्टयाक, तुनगुज़,

* क्षेत्रफल पचास लाख वर्गमील के लगभग, आबादी पचास लाख।



याकूत और काल्मक इन जातियों के लोग भी घर बनाकर नहीं रहते। जहां शिकार और चारा मिला, वहां कुछ दिनों तक डेरे डाल दिये फिर और जगह चल दिये। शिक्षा और सभ्यता का तो यहां नाम ही नहीं। कुछ जातियो का धर्म बौद्ध है। कुछ भूत, प्रेत और भालू को पूजते हैं। कमचटका में कमिष्ट लोग रहते हैं, इसी कारण इस प्रायद्वीप का शुद्ध नाम कमिष्टका है। इनकी रहन सहन अमेरिका के स्कीमो लोगों की तरह है और उनके ही साथ इनका सम्बन्ध भी है।

जिस तरह **अंडमान द्वीप** मे हिन्दुस्तान के क़ैदी भेजे जाते हैं, इसी तरह यूरप के अपराधियों से यह देश बसाया गया है। अब भी अधिकतर क़ैदीलोग खानों में काम करते हैं। जब से रेल जारी हुई है कुछ रूसी किसान आकर बसते

जाते हैं। (रूसी किसानों का चित्र देखो) आशा की जाती है कि यहां के रूसी किसान कुछ दिनों में खेती, शिल्प और कारीगरी में बहुत उन्नति कर लेंगे और साईबेरिया एक रमणीक देश हो जायेगा। रूसी किसानों में भी विद्या का बहुत प्रचार नहीं है। हिन्दुस्तानी किसानों की तरह वह भी सीधे सादे होते हैं।

प्रश्न

१—साईबेरिया की सीमा और उसके हिस्सों को बताओ।

२—एशियाई रूस से क्या समझते हो ? इसके प्राकृतिक भाग कौन कौनसे हैं ?

३—साईबेरिया की बनावट विस्तारपूर्वक लिखो।

४—साईबेरिया का देश किन किन अक्षाश रेखाओं के बीच में फैला हुआ है ? इस देश का नाम साईबेरिया क्यों पड़ा ?

५—साईबेरिया में कौन कौनसे पहाड़ हैं ? यहां की नदियों पर उन पहाड़ों का क्या असर पड़ता है ?

६—साईबेरिया की प्रसिद्ध नदियां कौन कौनसी हैं ? क्यों प्रसिद्ध हैं ? यह इतनी लम्बी चौड़ी क्यों हैं ? इनकी प्रसिद्ध सहायक नदियां कौनसी हैं ?

७—साईबेरिया की नदियां खेती और व्यौपार के लिये कहां तक उपयोगी हैं ? गंगा और ब्रह्मपुत्र से उनका मुकाबिला करो।

८—साईबेरिया की आबहवा विस्तारपूर्वक लिखो।

९—आर्को में वर्खोयनस्क में ध्रुव से अधिक सर्दी और गर्मियों में देहरादून की तरह गर्मी पड़ती है। इस प्रकार की महाद्वीपी आबहवा का वर्णन विस्तारपूर्वक लिखो।

१०—वनस्पतियों के विचार से साईबेरिया के कौन कौन से भाग हैं? हर एक भाग के पशु और खास खास पैदावार क्या हैं? नक़्शा खींचकर उसमें जंगल, गेहूं और जौ की खेती की सीमायें प्रकट करो।

११—साईबेरिया में गेहूं और जौ की खेती के लिये धरती और पानी काफ़ी है, फिर वहां अधिकता से खेती क्यों नहीं होती?

१२—साईबेरिया के खानिज पदार्थ कौन कौनसे हैं?

१३—विना वृक्षोंवाली ज़मीन में घास ही घास क्यों होती है? पेड़ क्यों नहीं होते? बिना वृक्षों की ज़मीन प्राय: कहां होती है?

१४—बिना वृक्षों की ज़मीन में लोग किस प्रकार के पेशे कर सकते हैं?

१५—आने जाने के रास्तों पर बर्फ़ का क्या असर पड़ता है? इस देश में किस तरह की सवारियां होती हैं और क्यों?

१६—साईबेरिया पर रेल की सड़कों का क्या असर पड़ा है और आगे क्या पड़ेगा? इस रेल के प्रसिद्ध स्टेशन कौन कौनसे

हैं और वहां से दूसरे देशों को कौन कौनसी चीजें जाती हैं ?

१७–साईबेरियामें किन किन खानिज पदार्थों और पशुओं का व्यौपार होता है:–

१८–नीचे के स्थान क्या हैं और कहां हैं ? यदि उनमें कोई प्रसिद्ध बात हो, तो उसे बताओ:–

स्यान (Sayan) इर्तिश (Irtish) तुन्द्रा (Tundra) टोबलस्क (Tobolsk) ओमस्क (Omsk) व्लाडीवास्टक (Vladivostok) याकूटस्क (Yakutsk) याना क्याख़्ता (Kyakhta) क्राजनोयर्स्क (Krasnoyarsk) चीता (Chita) इर्कटस्क (Irkutsk) टोमस्क (Tomsk) यनीसीस्क (Yeniseisk) ।

१९–चीन से रूस को साईबेरिया होता हुआ खुश्की का रास्ता कौनसा है ?

२०–रेल के होने पर भी चीन से माल बहुधा रेल पर नहीं आता जाता है । इसका कारण बताओ ।

२१–साईबेरिया का नक़्शा खींचकर उसमें नीचे के स्थान दिखाओ :–

नरचीनस्क (Nerchinsk) वर्खोयनस्क (Verkhoynsk) टोबल (Tobol) लीना (Lena) प्रायद्वीप तैमूर ।

२२–साईबेरिया के असली बाशिन्दों की संख्या कम होती जाती है, इसका कारण बताओ ।

रूसी मध्य एशिया (Russian central Asia)

२२९–**विस्तार**-यह देश उत्तर में **साईबेरिया**, दक्षिण में **ईरान** और **अफ़ग़ानिस्तान**, पूर्व में **तुर्किस्तान** और पश्चिम में **यूराल** * और **कास्पियन सागर** से घिरा हुआ है। पूर्वी तुर्किस्तान और जुनगेरिया का सूबा मिलकर यह देश **मध्य एशिया** (Central-Asia) कहलाता है। चूँकि पूर्वी तुर्किस्तान और जुनगेरिया चीनियों के अधिकार में हैं, इस लिये देश के शेष भाग को **रूसी मध्य एशिया** कहते हैं। इसमें बाल्कश झील, अरल झील और कास्पियन सागर के बेसिन × शामिल हैं। इसका क्षेत्रफल संयुक्त प्रान्त के बारह गुने के लग भग है।

२३०–**आर्य्यों का असली घर**–मध्य एशिया के लोग सदा से और और देशों में जाकर राज्य स्थापित † करते चले आये हैं। कुछ विद्वानों की यह राय है कि ऐतिहासिक समय से पहिले ‡ यहां के लोग जो संस्कृत से मिलती जुलती भाषा बोलते थे, हिन्दुस्तान, ईरान और यूरप आदि में जाकर बसे।

---

* थोड़ासा भाग यूराल के पार भी है।

× काकेशिया का बेसिन शामिल नहीं।

† राज्य की नींव डालना।

‡ वह समय जिसका ठीक ठीक हाल किसी किताब से नहीं मालूम हो सकता।

२३१—बनावट, आबहवा और पैदावार—
(१) पहाड़ और मैदान—इसकी दक्षिणी और पूर्वी सीमा के पहाड़ तीन या चार मील तक दीवार की तरह ऊंचे खड़े हैं। इस लिये दक्षिण और पूर्व की ओर इन पहाड़ों के नीचे की पृथ्वी ऊंची है और उत्तर और पश्चिम की ओर नीची। कास्पियन सागर के किनारे की पृथ्वी समुद्र के धरातल से भी नीची है। इस देश का अधिक भाग रेगिस्तान या ऐसी ज़मीन है जिसमें वृक्ष नहीं उगते। इसे देखने से प्रकट होता है कि यहां किसी समय में समुद्र था। बिना वृक्षों की ज़मीन का सिलसिला अरल, बाल्कश और जैसान झील से साइबेरिया की रेल तक चला गया है, जिस में करगीज़ लोग रहते हैं जो घर बना कर नहीं बसते। इसी



करगीज और उनके डेरे।

कारण इसका नाम **करग़ीज़ी मैदान** है। इस मैदान के

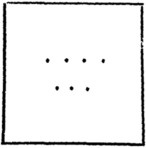
दक्षिणी देश को **पश्चिमी तुर्किस्तान** या **तूरान** (Turan) कहते हैं।

(२) **नदियां**—पूर्वी तुर्किस्तान की तरह इस देश के जिस भाग में नदियां बहती हैं, उनके किनारे ओसिस (नख़्लिस्तान) हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही उपजाऊ हैं। यहां का पानी भी समुद्र तक नहीं पहुँचता। बाल्कश में छोटी छोटी सात नदियां गिरती हैं, जिनकी घाटियों में खेती अच्छी तरह हो जाती है। सेंहूं नदी (Syr) थियानशान पहाड़ से निकलती है और सिंचाई के कारण इसका बहुत ही थोड़ा पानी अरल झील तक पहुँचता है। **मुर्गाब** (Murghab) और **ज़र्फ़िशान** (Zarfishan) नदियां भी **जेंहूं** नदी में गिरने से पहिले ही सिंचाई के कारण सूख जाती हैं। इन नदियों के नख़्लिस्तानों में खेती अच्छी होती है। मुर्गाब के किनारे किनारे हिन्दुकुश के दर्रे से होकर **हिरात** को रास्ता गया है।

(३) **आबहवा**-यहां गर्मियों में झुलसानेवाली गर्मी और जाड़ों में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। गर्मियों में १११ अंश फ़ार्नहीट तक गर्मी होती है और जाड़ों में पारा शून्य से २२ अंश नीचे उतर आता है। मेह बहुत ही कम बरसता है। इस कारण पूर्वी तुर्किस्तान की तरह यहां की नदियां और झीलें दिन पर दिन सूखती जाती हैं। यहां की बड़ी बड़ी झीलों का फैलाव कम होगया है।

(४) **पैदावार**–पश्चिमी तुर्किस्तान के नख़्लिस्तान की पैदावार प्राय: वही है जो पूर्वी तुर्किस्तान की । गेहूं, रुई, रेशम और फल विशेष कर पैदा होते हैं । यहां की रुई से **रूस के कारख़ाने** चल रहे हैं । यहां शिल्प और कारीगरी पूर्वी तुर्किस्तान की तरह है ।

२३२–**आबादी**–मध्य एशिया का क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का तीन चौथाई है, परन्तु इसकी आबादी राजपूताने के बराबर है । इस हिसाब से प्रति वर्गमील सात मनुष्य का औसत है । नदियों के ऊपरी किनारों पर और पहाड़ों के नीचे अधिकतर लोग बसते हैं, क्योंकि इन्हीं भागों में सिंचाई के लिये पानी मिलता है और उड़ते हुये बालू से खेत नहीं दबते ।



२३३–कास्पियन सागर से इस ओर की रेल– जेहूं नदी और कास्पियन सागर के बीच के भाग को **सिस कास्पियन** (Cis-Caspian) यानी कास्पियन सागर

को इस ओर के सूबे कहते हैं। जो रेल यहां से निकली है वह इसी सूबे के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में यह रेल **तुर्कमानों** के लड़ाई-झगड़े, लूट-मार और गुलामी के रोकने के लिये बनाई गई थी। इस रेल ने इनकी लूट-मार को रोक कर खेती और व्यौपार को बढ़ाया है। अब पहिले से प्रायः दुगुनी जमीन में खेती होती है। यह रेल बहुधा उन्हीं नगरों में होकर गई है जिनमें होकर प्राचीन समय में क़ाफ़िले जाते थे। यह लाइन दक्षिण-पूर्व में **ताशक़न्द** तक और दक्षिण में **हिरात** के पास **खुश्क पोस्त** (Khushk post) तक जारी है। (एशिया का पूरा नक़्शा देखो)

२३४—**प्रसिद्ध नगर**—प्रायः यहां के नगरों के चारों ओर परकोटा होता है, क्योंकि इस मरुभूमि के नगर प्राचीन काल से लड़ाई-झगड़े के घर रहे हैं। बहुधा यह नगर बिगड़ते और फिर बसते रहे हैं। यही कारण है कि कुछ नगरों के पास पुराने खंडहरों के चिह्न पाये जाते हैं। सब से पहिले मुग़ल लोग मध्य एशिया में आकर बसे।

आशिक़ाबाद ईरान की सीमा पर सिस् कास्पियन सूबे की राजधानी है। **मर्व** (Merv) यह मुर्गाब नदी के कारण उपजाऊ है। महाबली **सिकन्दर** ने इसको दूसरी बार बसाया था। यहां ख़रबूज़े और अंगूर अच्छे होते हैं। यहां ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के रास्ते मिलते हैं और यहीं

से एक राह खुश्क पोस्त को गई है, जहां से हिरात थोड़ी ही दूर रह जाता है। **बुख़ारा** * (Bokhara) का नख़्लिस्तान एक ख़ान के अधिकार में है जो रूस के आधीन है। यह नख़्लिस्तान ज़र्फ़िशान नदी के कारण उपजाऊ है। यहां **उज़बक तातारी** रहते हैं। यहूदी और कुछ हिन्दू भी आबाद हैं। प्राचीन काल से यह भी मुसलमानों की यूनीवर्सिटी है। यहां ज़रदोज़ी का काम अच्छा होता है। क़ालीन बहुत ही अच्छे बनते हैं। यह रूस, अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान की मंडी है।

समरक़न्द यह नख़्लिस्तान भी ज़रफ़िशान के कारण उपजाऊ है। प्राचीन काल में यह नगर बहुत रमणीक और अच्छा बसा हुआ था। तैमूर की राजधानी यहीं थी। बड़े बड़े सुन्दर घरों और मीनारों के खंडहर अब तक मौजूद हैं।

बुख़ारा की तरह यहा भी मुसलमानों के मदरसे हैं। **तैमूरलंग** की बनवाई हुई मसजिद अब तक मौजूद है और उसका मक़बरा भी यहीं है।

क़ोक़ंद (Kokand) **बाबर** का जन्मस्थान है। यहां भी रुई और रेशम के कपड़े बुने जाते हैं। यह पहिले बहुत ही बसा हुआ नगर था, अब कुछ उजाड़ होगया है।

फ़र्ग़ाना (Firghana) ज़र्फ़िशान नदी की घाटी में

* यह संस्कृत में तुषारा लिखा जाता है।

समरक़न्द के आगे है । यहां से चीनी तुर्किस्तान के लिये थियानशान के दर्रे में हो कर रास्ता है ।

ताशक़न्द (Tashkand) रूसी तुर्किस्तान की राजधानी है । यह अव्वल नम्बर का शहर है । यहां से रेल की एक शाख साईबेरिया की रेल तक गई है ।

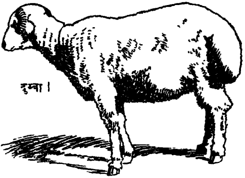


खीवा

खीवा (Khiva)—बुखारा की तरह यहां का **खान** भी रूस के आधीन है । यही स्थान यहां के खान की राजधानी है । इस चित्र मे यहा का गढ़ (क़िला) दिखाया गया है । यह ओसिस (नख़्लिस्तान) बहुत ही सुन्दर और हरा भरा है । वृक्ष इतनी बहुतायत से है कि घर उनमें छिपे हुये दिखाई देते है । यहां के सर्दे बहुत मीठे और बड़े बड़े होते है ।

२३५—**बाशिन्दे—करग़ीज़** और **तुर्कमान** यहां के

खास बाशिन्दे हैं। भेड़, बकरियां, दुम्बे, ऊंट और घोड़े करपीजों की बड़ी सम्पति हैं।



दुम्बा।



करपीजी औरत।

वह इनके दूध, मांस और ऊन आदि से अपना निर्वाह करते हैं। इन्हींकी खाल के कपड़े पहनते हैं। ऊन ही के डेरों में रहते हैं। यह लोग अपनी भेड़ बकरियां लिये फिरा करते हैं। सौ सौ दो दो सौ घोड़े रक्खा करते हैं। जिसके पास दस ग्यारह घोड़े नहीं होते वह निर्धन समझा जाता है। यह घोड़े पर खूब सवार होते हैं। यह लोग अधिकतर मुसलमान



तुर्कमान ترکمان

हैं। तुर्कमान अपने ऊंटों और घोड़ों पर बड़ा घमंड करते हैं। वास्तव में इनके घोड़े अच्छे होते हैं। यह लोग बड़े बहादुर और मजबूत होते हैं और अधिकतर ईरान की सीमा पर बसे हुये हैं। कुछ लोग घर नहीं बनाते और इधर उधर फिरते रहते हैं। इनको तुर्कमान इस लिये कहते हैं कि यह तुर्क और ईरानी स्त्रियों की सन्तान हैं। दक्षिण में उज़बक लोग बसे हुये हैं जो अधिकतर सभ्य हैं।

प्रश्न

१–मध्य एशिया और रूसी मध्य एशिया में क्या अन्तर है ?

२–रूसी मध्य एशिया में कौन कौनसे बेसिन शामिल हैं ?

३–रूसी मध्य एशिया की बनावट का हाल लिखो।

४–इस देश के मेह का पानी उत्तरीय महासागर तक क्यों नहीं पहुँचता ?

५–तूरान के ओसिस (नख़्लिस्तान) पहाड़ों के नीचे क्यों पाये जाते हैं ?

६–पश्चिमी तुर्किस्तान में कौन कौनसी नदियां हैं और उनके किनारे कौन कौनसे ओसिस हैं ?

७–तूरान की आबहवा कैसी है ? उसमें कौन कौनसी चीज़ें पैदा होती हैं ?

८–क्या कारण है कि रूसी मध्य एशिया में घोड़े आदि पशु अधिक पाये जाते हैं ?

९–सिस् कास्पियन की रेल से पश्चिमी तुर्किस्तान को क्या लाभ पहुँचता है ?

१०–पश्चिमी तुर्किस्तान में जो रेलें हैं उनका नक़्शा खींचो और वह नगर दिखाओ जिनमें हो कर वह जाती हैं।

११–करग़ीज़, तुर्कमान और उज़बक कहां बसे हुये हैं और उनका ख़ास पेशा क्या है ?

१२–रूसी मध्य एशिया से कौन कौनसी चीज़ें और देशों को जाती हैं ?

१३–फ़र्ग़ाना, ख़ीवा, ज़र्फ़िशान, ताशकन्द, मर्व, बुख़ारा, समरक़न्द, अशिक़ाबाद, मुर्ग़ाब, क़ोक़ंद क्या हैं और किस लिये प्रसिद्ध हैं ?

१४–तूरान के नगरों के चारों ओर परकोटे क्यों पाये जाते हैं ? यहां घरों की छतें चौरस क्यों रक्खी जाती हैं ?

पामीर (बामे * दुनिया) The Pamers.

२३६–पामीर (बामे दुनिया) पर चीन, हिन्दुस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और तुर्किस्तान की सीमाएं मिलती हैं । इस सेटो में चौड़ी चौड़ी घाटियां हैं जिनके किनारे बहुत ऊंचे ऊंचे पहाड़ हैं । घाटियों में बर्फ़ की नदियों से लाई हुई मिट्टी और पत्थर इकट्ठे होगये हैं । इन नदियों में कहीं कहीं गर्म सोते भी पाये जाते हैं । यहां जौलाई से सितम्बर तक घास ख़ूब पैदा होती है । इस कारण करग़ीज़ लोग अपने पशु लेकर आजाते हैं, नहीं तो यह भाग उजाड़ है । चूंकि इस सेटो में होकर चढ़ाई करनेवाली सेनाएं आस पास के देशों में जा सकती हैं, इसलिये यह चौहद्दा बहुत प्रसिद्ध है ।

काकेशिया या कौक़ास (Caucassia)

२३७–(एशियाई रूस का नक़्शा देखो) यह देश भिन्न

* बाम=छत ।

भिन्न जातियों और भाषाओं की विचित्र भूमि है। इसमें कम से कम १५० जातियों के लोग बसे हुये हैं और ७० के लगभग भाषाएं बोली जाती हैं। प्राचीन काल में यूनानियों को १२० भिन्न भिन्न भाषाओं के अनुवाद करनेवालों की आवश्यकता होती थी। इसी कारण अरब के लोग इस पहाड़ को * **जबलुल्लिसान** कहते हैं। यहां की कुछ जातियां शारीरिक सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। लोगों का यह विचार



قاف کی پری **क़ाफ़ की परी**

कि काकेशस पहाड़ पर परियां रहती हैं यहां की सुन्दर स्त्रियों के कारण उत्पन्न हुआ था। सरकेशी और गुर्ज स्त्रियों को तुर्की अफ़सर मोल ले लेते हैं।

२३८—**विस्तार**—यह देश कास्पियन सागर और काले

---

* जबल = पहाड़, लिसान = भाषा।

सागर के बीच में है। इसके दक्षिण में ईरान और एशियाई रूस और उत्तर में यूरपी रूस है। इस देश के मध्य में काकेशस पहाड़ की श्रेणी दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम तक



काकेशश पहाड़

चली गई है। इसका क्षेत्रफल पंजाब के क्षेत्रफल के दुगुने से कुछ ही कम है।

२३९—बनावट—इसमें कई चोटियां तीन मील तक ऊंची हैं जो सदा बर्फ़ से ढकी रहती हैं। अलबुर्ज़ * के ज्वालामुखी पहाड़ की चोटी जो बहुत समय से बंद है, तीन मील से भी अधिक ऊंची है। इस श्रेणी में कहीं कहीं चौड़ी और गहरी घाटियां हैं।

टैरक (Terek) उत्तर में और **कुर** (Kur) दक्षिण में प्रसिद्ध नदियां हैं जो कास्पियन सागर में गिरती

* यह ईरान का अलबुर्ज़ नहीं है।

हैं। कुछ नदियां काले सागर में भी गिरती हैं। अरस नदी (Aras) जो आर्मीनिया के प्लेटो से निकलती है कुर नदी में मिल जाती है। टैरक के उत्तर में पश्चिमी साईबेरिया की तरह बिना वृक्षों की जमीन का मैदान है। कुर नदी के इस ओर **जार्जिया** (Georgia) और आर्मीनिया (Armenia) के प्लेटो हैं। आर्मीनिया की सब से ऊंची चोटी **अरारात** है जो तीन मील से भी अधिक ऊंची है।

२४०—**आबहवा**—हर भाग की आबहवा वहां की जमीन की ऊँचाई निचाई के कारण अलग अलग है। उत्तरीय भागों में प्रायः गर्मियों में अधिक गर्मी और जाड़ों में अधिक सर्दी पड़ती है। काकेशस (क़ाफ़) पर्वत के दक्षिण में ध्रुव की ठंडी हवा से कुछ बचाव रहता है, इस लिये वहां की आबहवा सामान्य है।

२४१—**पैदावार**—यह देश हराभरा और उपजाऊ है। बनस्पति संबंधी पैदावार ही यहां की बड़ी भारी सम्पत्ति है। पहाड़ों के ढाल पर बन बहुतायत से हैं, विशेषकर काले सागर के किनारों पर। नैनीताल और अलमोड़ा की बराबर ऊँचाईवाले पहाड़ों पर भी गेहूं और जौ उपजता है। घाटियों में धान, ज्वार आदि अनाज पैदा होते हैं। दक्षिण की पहाड़ी घाटियों में अंगूर, शहतूत, आड़ू, नारंगी, नीबू

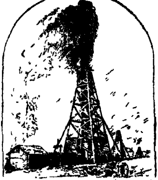
आदि बहुतायत से पैदा होते हैं। यहां के लोगों का मुख्य पेशा खेती है।

२४२—**नगर**—राज्यप्रबन्ध के विचार से काकेशिया के दो भाग हैं। जो ज़िले उत्तरीय भाग में हैं वह यूरपी रूस में शामिल हैं और दक्षिणी ज़िले एशियाई रूस में। इस दक्षिणी भाग को रूसी ट्रांस काकेशिया कहते हैं. जिसमें आठ ज़िले हैं। इनमें **तिफ़लिस** (Tiflis) और **इरीवान** (Erivan) प्रसिद्ध हैं। तिफ़लिस कुर नदी के किनारे पर एक प्रसिद्ध नगर है, जिसके दो भाग हैं। एक में एशियाई लोग रहते हैं दूसरे में रूसी। यहां बहुतसी विद्या-सम्बन्धी सभायें हैं। यहां की भौगोलिक सभा ने काकेशस पहाड़ के सम्बन्ध में बहुतसी नई नई बातें मालूम की हैं।

इरीवान बहुत ही पुराना नगर और आर्मीनिया की राजधानी है। यह नगर अरारात पर्वत के नीचे घाटी में बसा हुआ है।



बाकू (Baku) कास्पियन सागर के किनारे पर एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। यहां से एक रेल कास्पियन सागर के **बातूम** बन्दरगाह तक गई है। और दूसरी साईबेरिया की रेल से मिल गई है।



बाकू मिट्टी के तेल का सोता

२४३—**मिट्टी के तेल के सोते**—बाकू और उसके आस पास कई मील तक धरती मिट्टी के तेल से भीगी हुई रहती है। जहां सूराख किया जाता है वहां पानी की तरह सोतों से तेल निकल आता है। तेल निकालने के लिये कई सौ कुएँ खोदे गये हैं। तेल साफ़ करने के बहुत से कारखाने हैं। साफ़ किया हुआ तेल नलों द्वारा काले सागर तक पहुँचाया जाता है और वहां से जहाजों में लदकर दूसरे देशों में जाकर बिकता है। काकेशिया और रूसी मध्य एशिया में रेल के इंजनों में लकड़ी के बदले बिना साफ़ किया हुआ तेल जलाया जाता है। मिट्टी के तेल के कुओं से एक

मुख्य प्रकार की भाप निकलती है जिसको अंगरेजी में **गैस** कहते हैं। यह गैस जलाने से जल जाती है। लोग चिराग के बदले इसको नलों द्वारा घरों में ले जाकर जलाते हैं।

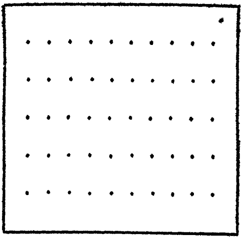
२४४—**बाकू का मन्दिर**—बाकू में एक मन्दिर है जहां इस गैस की लपटें निकलती हैं। मन्दिर उस समय का बना हुआ है जब फ़ारिस के लोग अग्नि की पूजा करते (आतिश परस्त) थे। अब भी आग की पूजा करनेवाले वहां रहते हैं। प्राचीन काल में हिन्दू बाकू को ज्वालामुखी कहते थे और बहुत से जोगी और जटाधारी दर्शन के लिये जाया करते थे।

२४५—**बाशिन्दे**—गुर्जे (Georgians) सर्केशी या चरगेसी (Circassians) और अर्मनी (Armenians) यह मुख्य जातियां हैं। गुर्जे और अर्मनी प्राचीन काल से ईसाई मत के माननेवाले हैं। सर्केशी अधिकतर मुसलमान हैं। उनका पहनावा इस चित्र से प्रकट है।



सर्केशी आदमी।

२४६—आबादी—काकेशिया की आबादी एशियाई रूस के और देशों से अधिक घनी है।



पचास प्रति वर्गमील।

२४७—एशियाई रूस का राज्यप्रबन्ध—पूरा देश अनेक सूबों में बटा हुआ है। हर सूबे के गवर्नर को रूस के महाराज नियत करते हैं जिनकी पदवी ज़ार (Czar) है। साईबेरिया में रूसियों का अधिकार सोलहवीं सदी में और पश्चिमी तुर्किस्तान में पिछली सदी में हुआ था। काकेशिया के ज़िले तूरान से पहिले रूसी राज्य में मिलाये जा चुके थे। *

प्रश्न

१—काकेशिया की सीमा और विस्तार बताओ।

२—काकेशस पर्वत से इस ओर और उस ओर के ज़िलों की आबहवा और पैदावार का मुकाबिला करो।

३—काकेशिया की उन नदियों के नाम बताओ जो कास्पियन सागर में गिरती हैं ?

४—रूसी ट्रांस काकेशिया के मुख्य व्यौपारिक काम क्या क्या हैं ?

५—इस देश के मुख्य लोग कौन है और क्यों प्रसिद्ध हैं ?

६—नीचे लिखे हुये स्थान क्या है ? यदि उनमें कोई प्रसिद्ध बात हो तो उसको भी लिखो.—

कुर, अलबुर्ज, टैरक, तिफ़लिस, अमन और बाकू।

७—कास्पियन सागर, काला सागर और काकेशिया की रेलों से रूसी राज्य के व्यौपार पर क्या असर पड़ा है ?

दक्षिणी पश्चिमी एशिया या एशियाई पंजाब

Western Asia or Asiatic Punjab.

२४८—बिलोचिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, एशियाई रूम, शाम और अरब प्रायः यह सब देश पांच समुद्रों अर्थात् कास्पियन सागर, काला सागर, रूम सागर, लाल सागर, और अरब सागर से घिरे हुये हैं, इस लिये हिन्दुस्तान के

पंजाब की तरह इन देशों को एशियाई पंजाब कहना अनुचित न होगा।

(१) इन में से पहिले चार देश जैसा कि लिखा जा चुका है, पहाड़ी हैं। (स्लेटा और पहाड़ों के नक्शे देखो) इन चारों देशों की बनावट और आबहवा एकसी है। गर्मियों में बहुत ही अधिक गर्मी और जाड़ों मे कड़ाके का जाड़ा पड़ता है। इनमें मेह बहुत ही कम बरसता है और जो कुछ बरसता भी है वह केवल जाड़ो ही मे बरसता है। इसके दो कारण हैं —

(अ) जून से सितम्बर तक यह देश इतने गर्म रहते हैं हैं कि जो हवाये यहा चलती है वह ठंडी होकर मेह नहीं बरसा सकतीं।

(ब) जो हवायें इन महीनों में यहां चलती हैं उनमें इतनी खुश्की होती है कि मेह बरसाने के बदले वह नदियों, झीलों आदि का पानी आप चूस लेती हैं।

(२) इन देशों के कुछ भागों में जहा चूने और खड़िया मिट्टी के पहाड़ हैं, वहां नदिया पहाड़ों की खोह में जाकर लोप होजाती हैं और बहती हुई नहीं दिखाई देतीं।

(३) पानी ही की कमी के कारण इन देशों में खारी धरती और मरुभूमि (रेगिस्तान) अधिक हैं। एशियाई

पञ्जाब के अधिक भागों का पानी झीलों और रेगिस्तानों में ही सूख जाता है, समुद्र तक नहीं पहुँचता।

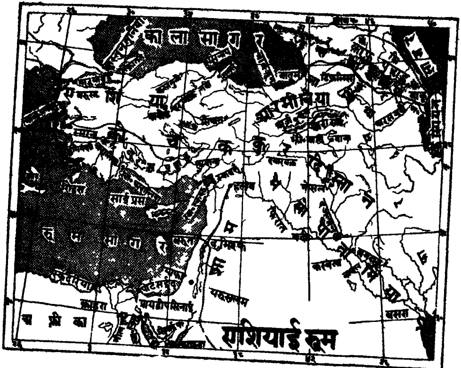
(४) नदियों की घाटियों और मैदानों में जहां सिंचाई हो सकती है वहीं बस्तिया हैं। चरागाहों में कुछ लोग बिना घर बनाये हुये थोड़े दिनो के लिये बसजाते हैं।

(५) पहाड़ो, तग घाटियों और रेगिस्तानों के कारण आने जाने मे बड़ी कठिनता पड़ती है। छकड़ों और गाड़ियों के लिये सड़कें बहुत ही कम है। एशियाई रूम के पश्चिमी भाग के सिवाय रेल कहीं नहीं है। बैल, ऊट, घोड़े और खिचर बोझा लादन और सवारी के काम में आते हैं (अफगानिस्तान क बयान में बिलोची का चित्र देखो) लुटेरों के कारण इन देशो में आन जान के रास्ते भी * सुरक्षित नहीं है। नदियों को पार करने के लिये बहुधा मश्कें काम में लाई जाती हैं। कुछ भागो में गाव पहाड़ों के गड्ढों में बसे हुये है। अधिक गर्मी, बर्फ और बालू से बचने के लिये कुछ नगरो मे बाजार पटे हुये हैं अर्थात् दोनों ओर की दुकानो के बीच की सड़क छत से पटी होती है।

एशियाई रूम (Turkey in Asia)

२४१—एशिया में तुर्कों का राज्य ईरान से रूम सागर तक

* यात्रियों के जान और माल की रक्षा का ठीक प्रबन्ध नहीं है।


एशियाई रूम
काला सागर
आरमीनिया
साइप्रस
बसरा

और अरब की मरुभूमि से काले सागर तक फैला हुआ है। प्राचीन काल में इस देश का अधिक भाग इटली के अधिकार में था जिसको वहा के लोग अपनी राजधानी रोम के विचार से एशियाई रोम कहते थे। तुर्कों के अधिकार में आजाने पर भी इसका वही नाम अभी तक चला आता है, परन्तु उर्दू मे रोम को लोग रूम कहते हैं। ३००० वर्ष के भीतर इस देश के राज्य-प्रबन्ध मे जितना हेर फेर हुआ है उतना और किसी देश में नहीं। इसको कभी यूनानियों ने जीता, कभी ईरानियो ने, कभी रूमियों * ने, कभी तातारी मुगलो ने, कभा अरबों ने और कभी तुर्कों ने। पुराने नगरों के खडहर इसकी प्राचीन शोभा और बड़ाई को प्रकट करते हैं। इसी देश मे यूनान के कई एक प्रसिद्ध कवि और इतिहास लिखनेवाले पैदा हुये थे।

२५०–प्राकृतिक बनावट के विचार से इस देश के चार भाग हैं:–

(१) एशियाई कोचक।

(२) फुरात और दजला की घाटिया।

(३) शाम।

(४) अरब का कुछ भाग अर्थात् हजाज और अल्-

---

* रोम के निवासी रोमन या रूमी कहलाते है।

हसा। कुल देश क्षेत्रफल में हिन्दुस्तान की तिहाई से कुछ कम है अर्थात् संयुक्त प्रदेश से पांच गुना है।

एशियाई कोचक (Asia minor or Anatolia)

२५१–ईरान के प्लेटो का वह भाग जो यूरप की ओर काले सागर और रूम सागर के बीच में चला गया है, **एशियाई कोचक** कहलाता है। कोचक का अर्थ छोटा है। यूरप के पास होने से इस देश का यह नाम वहां के लोगों ने रखलिया है। इसके उत्तर में काला सागर और मारमोरा सागर, दक्षिण में रूम सागर, शाम, इराक़ और अरब, पूर्व में ईरान और काकेशस से इस ओर के ज़िले और पश्चिम में एजियन सागर है। एजियन सागर रूम सागर का वह भाग है जो एशियाई कोचक प्रायद्वीप के पश्चिमी किनारे पर है। एशियाई कोचक का क्षेत्रफल बम्बई प्रान्त के दूने के लगभग है।

२५२–**किनारा**–उत्तरीय किनारा क़रीब क़रीब सपाट है। इस किनारे पर केवल **सिनोप** (Sinope) का एक अच्छा बन्दरगाह है। **त्रिबिज़ंड** (Trizond) और **समसून** (Sam Sun) ऐसे स्थान हैं जहां जहाज़ों से माल उतारा और चढ़ाया जाता है। पश्चिमी किनारे में बहुत से तोड़ मोड़ हैं और उसके पास बहुतसे द्वीप हैं। **स्मर्ना** एक बड़ा व्यौपारिक बन्दरगाह है। दक्षिणी किनारे

पर **अदालिया** और **स्कंदरून** दो खाड़िया हैं, जिन के किनारे मरसीना और अदाना दो ऐसे स्थान हैं जहा जहाज लगर डालते हैं (नक्शा देखो) ।

२५३—**बनावट**—एशियाई कोचक का प्लेटो परिचम और पूर्व की ओर ऊचा होता गया है । इसकी ऊचाई का औसत आध मील से पौन मील तक है । उत्तर मे **पान्टक** के पहाड़ काले सागर के किनारे पर दीवार की तरह खड़े हुये हैं । दक्षिण मे **तारस** * की श्रेणी है जो रूम सागर के पास तक चली गई है । इस सिलसिले के बीच में कहीं कहीं मैदान हैं । **एन्टी तारस** की श्रेणी भी उत्तर पूर्व से दक्षिण परिचम को **तारस** के पास तक चली गई है । इससे इन प्लेटो के दो भाग होजाते है जो **पश्चिमी और पूर्वी एशियाई कोचक** के नाम से प्रसिद्ध हैं । इस प्लेटो मे समुद्र के किनारे के पास चूने क पहाड़ अधिक है । कही कहीं सुप्त ज्वालामुखी पहाड़ भी है ।

२५४—**झीलें**—यहा झीले बहुतसी है, जिनमे देश के भीतर का पानी इकट्ठा होता रहता है । उनमे कुछ खारी हैं और कुछ मीठी । तुजगुल झील सब में बड़ी और प्रसिद्ध है । खेती और व्यौपार के लिये क़िज़िलइर्माक

* तोरस भी कहते हैं ।

(Kizil Irmak) और मियान्दर (Meander) * यह नदियां बहुत उपयोगी हैं। किजिलइर्माक काले सागर में और मियान्दर रूम सागर में गिरती है।

२५५–**आबहवा**–काले सागर के पास के ज़िलों में गर्मियों में हवा मरतूब रहती है। जाड़ों में सर्दी अधिक पड़ती है, क्योंकि इस भाग में रूम की ओर से ठंडी हवा आती है। यहा मेह भी अच्छा बरसता है। रूम सागर से मिले हुये ज़िलों की आबहवा सामान्य है। यहां जाड़ों में भी मेह बरसता है क्योंकि रूम सागर की गर्म और मरतूब हवा इन्हीं दिनों मे ठंडी होकर बरसती है। मध्य भाग की आबहवा महाद्वीपी है और वर्षा भी बहुत कम होती है।

२५६–**वनस्पति संबन्धी पैदावार**–काले सागर के किनारे के पहाड़ देवदार, बाफ़, चीड़ आदि के वृक्षों से खूब हरे भरे हैं। दक्षिणी और पश्चिमी भाग की पृथ्वी अधिक उपजाऊ है। यहां अनाज और मेवे बहुतायत से होते हैं, विशेष कर अंगूर, किशमिश, अजीर, आड़ू, जैतून, अखरोट,

* मियन्दर या मियन्दस भी इसको कहा जाता है।







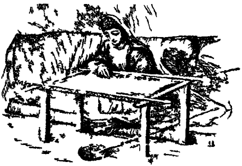
बादाम درخت بادام   अंजीर درخت انجیر

बादाम, नारगी, नीबू आदि । रेशम, रुई, अफ़ीम और विशेष कर तम्बाकू यहा बहुत ही अच्छा पैदा होता है । यही यहा के मुख्य व्यौपारिक पदार्थ है । यहा बबूल की तरह का एक पेड़ होता है जिसके गोंद को रूमीमस्तगी कहते हैं । छोटो के बीच में पश्चिमी तुर्किस्तान की तरह बिना वृक्षों की ज़मीन है, जहां केवल घास ही घास होती है । घास की

बहुतायत के कारण भेड़ बकरियाँ अधिक पाली जाती हैं, जिनकी ऊन से कालीन बुने जाते है।

२५७—खनिज पदार्थ—सोना, चाँदी, सीसा, लोहा, कोयला और सेंधानमक पाया जाता है। एशियाई कोचक के कुछ द्वीपों के पास रूम सागर से स्पंज (Sponge) निकाला जाता है जो एक समुद्री जानवर का खाल है।

२५८—शिल्प और कारीगरी-यहाँ के लोगों का खास पेशा खेती है, परन्तु चीन जापान आदि के किसानों की तरह यहाँ के किसान मेहनती और चतुर नहीं हैं। कुछ लोग खानों में काम करते हैं, कुछ स्पंज निकालते हैं और कुछ मछलियाँ पकड़ते हैं तुर्की स्त्रियाँ बहुत अच्छे कालीन बुनती हैं। जो यहाँ से और देशों में जाकर बिकता है। यहाँ के लोग चमड़े को अच्छी तरह कमाकर बहुत ही सुन्दर बना देते हैं।

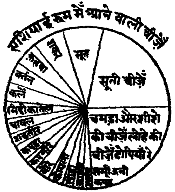


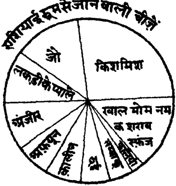
तुर्की औरत का कालीन बुनना

२५१—**आने जाने के रास्ते**—रूमियों के समय में यहा बहुत अच्छी अच्छी सड़कें थीं, परन्तु घर बनाकर न बसने वाले तुर्कों के आजाने से छकड़े और गाड़ियों के बदले ऊट, खच्चर आदि बोझा ले जाने के काम में आने लगे । इसी कारण सड़के खराब होगई और छोटे छोटे रास्ते रह गये । हाल मे कुछ सड़के बननी शुरू हुई है, परन्तु वह भी खराब हैं । देश के भीतर का व्यौपार काफिलो से होता है । थोड़े दिनो से यहा रेल की कई सड़के जारी होगई है । एक रेल मारमोरा सागर के किनारे से कोनिया (Konia) तक गई है । जहा से एक शाख अगोरा (Angora) को जाती ह । एशिया का पूरा नक़्शा देखो) इसको बढ़ाकर ईरान की खाड़ी तक लेजाने का उपाय हो रहा है । **स्मर्ना** (Smyrna) से एक शाख **दक्षिण** को गई है । एक शाख **हलब** (Aleppo) से **बैरूत** (Beirut) **दमश्क़** (Damascus) और **यरूसलम** (Jerusalem) होती हुई मदीना तक गई है । इस लाइन को भी मक्का तक बढ़ाने का विचार होरहा है, इसी लिये इसे नक़्शे मे पूरा दिखाया गया है । यहा की बहुतसी रेले जर्मनी के साहूकारों ने बनवाई हैं । एशिया और यूरप के बीच का थल का रास्ता प्राय इन्हीं स्थानो में होकर गया है जिनमें होकर अब रेल जारी है । काफ़िलो का भी यही

रास्ता था। सिकन्दर भी इसी राह से शाम, ईरान आदि गया था।

२६०-**व्यौपार**-यहां व्यौपार भी अच्छा होता है। जो नीचे के वृत्तों से प्रकट है।





२६१-**प्रसिद्ध नगर**-**सक़ोतरी** (Skutari) का शहर कुस्तुनतुनिया के सामने एशियाई कोचक में मारमोरा सागर के किनारे बसा हुआ है। यूरप से एशिया में आने का रास्ता यहीं से शुरू होता है। **कुस्तुनतुनिया** के जीतने से पहिले यह एशियाई रूम की राजधानी था।

ब्रूसा (Brussa) इसका दृश्य अब भी बहुत मनोहर है। यहां के गर्म सोतों के पानी में गंधक और लोहा

मिला हुआ है। इसी कारण इनका पानी दवा के तौर पर काम मे लाया जाता है। यहा रेशमी कपड़ों के कुछ कारखाने भी हैं।

ममसून म सबास के सुब का माल जहाजों पर चढ़ता उतरता है।

त्रिबिजुंड के रास्ते म ईरान और अर्जे रूम का माल काले सागर होकर यूरप जाता है।



अंगोरा का बकरा।

انگوری بکری

मध्य एशियाई कोचक का मुख्य नगर **अंगोरा है।** यहा का शहद और मेवे खाने में बहुत अच्छे होते हैं। लम्बे बालों वाली बकरियों के कारण, जिनकी ऊन रेशम की तरह नर्म होती है, दुनिया में इसका बड़ा नाम है। इस अच्छी ऊन के कारण ही जैसे कालीन इस देश में बुने जाते हैं वैसे दुनिया में और कहीं नहीं बनते।



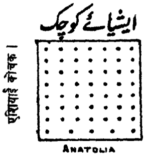
स्मरना

अजमेर जिसको अंगरेजी में **स्मर्ना** भी कहते हैं एशियाई कोचक का मुख्य बन्दरगाह है। इस सूबे में इससे बड़ा और जियादा आबाद और कोई शहर नहीं है। प्राचीनता और ऐतिहासिक घटनाओं के विचार में भी यह स्थान प्रसिद्ध है। यूनानियों का प्रसिद्ध कवि **होमर** (Homer) जिसको यूरप के लोग संसार भर में सब से बड़ा कवि मानते हैं, उसकी समाधि भी यहीं है। इसके चारो ओर की जमीन अधिक उपजाऊ है। यह नगर व्यौपार का मुख्य केन्द्र है। यहां रोजाना बहुतसे जहाज और अग्निबोट आते रहते हैं।

कोनिया (Konia) रूमी राज्य के एक सूबे की राजधानी था। यह व्यौपार की बड़ी मंडी है।

२६२–**आबादी**–काकेशिया की तरह इस देश में भी तुर्क, अरब, अर्मनी, कुर्द, यूनानी, यहूदी आदि बहुतसी

जातिया बसी हुई है । मुसलमान सब मे अधिक हैं । अर्मनी और यूनानी ईसाई है । कुर्द जगली है जो घर बनाकर नहीं रहते । यह प्राय मुसलमान है । अर्मनी बड़े व्यौपारी होते हैं । यह मदरास और कलकत्ते मे भी बसेहुये है । साहूकारी, दुकानदारी, शिल्प और कारीगरी के सब काम यहूदियो, अर्मनियो और यूनानियों के हाथ में है । इसी कारण यह अधिकतर धनवान है । तुर्क बहुधा खेती करते हैं । उनको सिपाही का काम बहुत पसद है । कुर्दलोग अर्मनी और यूनानी बस्तियों मे प्राय लूट मार करते रहते है । इसीलिये बहुधा गाँव पहाड़ी गड्ढो मे बसेहुये है कि लुटेरे आसानी से चढाई न करसकें । क्षेत्रफल के विचार से यहा की आबादी कम है ।



२६३—स्वभाव—लड़ाई में तुर्की सिपाही बड़े मेहनती और बहादुर साबित हुये है । कमायूं के किसानों की तरह

तुर्की किसान बहुत सच्चे और ईमानदार होते हैं, परन्तु आलसी अधिक हैं। खेती बाड़ी का काम अधिकतर स्त्रियां करती हैं। तुर्क क़हवा अधिक पीते हैं। यहां हम्मामों में नहाने का चलन बहुत है। स्त्रियां बहुधा ज़नाने हम्मामों में जाकर नहाती हैं।



हम्माम

फ़ुरात और दजला की घाटियां

Euphrates and Tigris Valleys

२६४—इन दोनों नदियों के बीच की घाटियों में उत्तरीय भाग पहाड़ी और दक्षिणी भाग मैदान है। उत्तरीय भाग में आर्मीनिया और कुर्दिस्तान के प्लेटो शामिल हैं।

(अ) आर्मीनिया का प्लेटो बहुत ऊंचा है और उसमें पहाड़ बहुतसे हैं, जिनमें से पूर्वी श्रेणी की चोटी अरारात

तीन मील के लगभग ऊंची है। इस चोटी से कुछ दूर एक और पहाड़ दक्षिण में है, जिससे **फ़ुरात** नदी निकलती है। इसी स्थान पर **ज़रगोश** (Zargos) पहाड़ों का सिलसिला शुरू होजाता है जो ईरान और एशियाई रूम की सीमा है। इस स्टेटो का अधिक भाग पहिले रूम के सुल्तान के अधिकार मे था, परन्तु अब कुछ भाग रूसियों ने दबा लिया है। **गुर्जिस्तान** * जो इस स्टेटो के उत्तर में है पहिले इसी राज्य में शामिल था। यह स्टेटो बहुत उपजाऊ है। पहाड़ों के बीच मे उपजाऊ घाटियां और मैदान हैं, चरागाहें भी बहुतायतसे हैं। यहां प्रायः वही चीजें पैदा होती है जो एशियाई कोचक में।

(ब) अर्मीनिया के नीचे कुर्दिस्तान का सूबा है जिस में अधिकतर कुर्द बसते हैं। पहिले यह देश ईरान का भाग था। पूर्वी भाग अब भी ईरान में शामिल है। (ईरान का नक्शा देखो) इसकी **वान** झील से कोई नदी नहीं निकलती। इसके पास के पहाड़ों से **दजला** नदी निकलती है। इन दोनों नदियों में बहुतसी सहायक नदियां मिलती हैं।

(स) कुर्दिस्तान के स्टेटो के बाद जो नीचा मैदान ईरान की खाड़ी तक चला गया है, वह **फ़ुरात और दजला का दुआबा** है। इसके ऊपरी भाग को **अल्-**

* अरब के लोग इसे जर्जिया भी कहते हैं।

जज़ीरा और नीचे के भाग को **इराके अरब** कहते हैं (इराक़=नदी का किनारा) । जिस तरह गंगा और यमुना इलाहाबाद में मिल जाती है, उसी तरह यह नदियां भी **बसरा** (basra) में कुछ मील ऊपर **करना** (Kirna) पर मिलती हैं । इनकी मिलीहुई धार को **शत्तुल अरब** कहते हैं (शत=किनारा) । इराक़ अरब का अधिक भाग डेल्टा है जो ईरान की खाड़ी के भरजाने से बना है । हज़रत ईसा से कई हज़ार वर्ष पहिले इस दुआबे में **आसूर** (Assyria) का बड़ा बलवान् राज्य था जिसकी



राजधानी बाबुल (Babylon) थी । बाबुल को यूरप के लोग पृथ्वीभर की सभ्यता की जड़ समझते हैं । इस राज्य ने

नहरों द्वारा सिंचाई का ऐसा प्रबंध किया था कि इराक़े अरब को स्वर्ग का नमूना बना दिया था, परन्तु अब नहरों के अट जाने से अधिक उपजाऊ नहीं रहा। जमीन के उपजाऊ होने में कोई कसर नहीं है। पानी के कम होने से रेगिस्तानी हालत होगई है। जहां सिंचाई के लिये पानी मिलता है वहां पैदावार अच्छी होजाती है। इराक़े अरब की खास पैदावार खजूर है। किसी समय में ईरान की खाड़ी इस दोआबे के भीतर पश्चिम की ओर अधिक दूर तक फैली हुई थी, परन्तु आजकल इन दोनों नदियों की लाई हुई मिट्टी और बालू से अटकर बसरा तक रहगई है।

२६५—**प्रसिद्ध नगर—अर्ज़रूम** (Ergerum) में रूसी सरहद ई आर के पास होने से तुर्की सेना की छावनी है।

वान झील के किनारे **वान** शहर बसाहुआ है। कुर्दिस्तान के शेटों में यह नगर दूसरे नम्बर का है। यहां के बाग बड़े सुन्दर हैं। **दयारे बकर** (Diar-bekr) कुर्दिस्तान में अव्वल नम्बर का शहर है। यहां दजला और फ़ुरात के किनारों के रास्ते मिलते हैं। यहां का बाजार बड़ा है। रेशमी और रुई के कपड़ों के कारखाने हैं।

मोसल (Mosul) इराक़े अरब के ऊपरी भाग में बसा हुआ है। यहां क़ाफ़िलों के रास्ते मिलते हैं। यहां का बाजार भी बड़ा है। किसी समय में यहां मलमल और

तनजेब अच्छी बनती थीं । इसके पास ही दजला नदी के दूसरी ओर **आसूर** राज्य के पुराने शहर नैनवाह (Nnevah) के निशानात अर्थात् नीवें, दीवारें, तसवीरें, बेलबूटे आदि खोदकर निकालेगये हैं । नक़्शे में इस स्थान पर एक तिकोना चिह्न बनादिया गया है । **बग़दाद**



बग़दाद

(Baghdad) दजला नदी के किनारे पर बसा हुआ है । यहां व्यौपार के लिये बहुत से क़ाफ़िले आया करते हैं । यहां से एक रास्ता **ईरान** को जाता है, दूसरा हल्ब को और तीसरा मक्का को । यहां यूरप के भिन्न भिन्न देशों के व्यौपार संबंधी राजदूत रहते हैं । अब्बासी ख़लीफ़ाओं के

समय में यह शिल्प और विद्या का केन्द्र था। निर्दयी चंगेज़ खां ने एक लाख आदमियों को मारकर इस नगर का नाश कर दिया था।

नोट–बग़दाद का असली नाम बागेदाद है। दाद के मानी न्याय के हैं। यहां एक बाग में नौशेरवां बादशाह बैठ कर न्याय किया करते थे।

करबला मुसलमानो का तीर्थ स्थान है। यहां हज़रत इमाम हुसैन का मज़ार (क़ब्र) है।

बसरा (Basra) फ़ुरात और दजला के संगम से नीचे बसा हुआ है। यहाँ स्टीमरों से माल उतारा और चढ़ाया जाता है। यह खजूर की बड़ी मंडी है।

अल्जज़ीरा और **इराक़े अरब** में बहुतसे शहर नदियों के किनारों पर बसे हुये हैं, क्योंकि पानी कम मिलने के कारण क़ाफ़िले नदियों के किनारे किनारे सफ़र करते हैं।

बाबुल का पुराना शहर

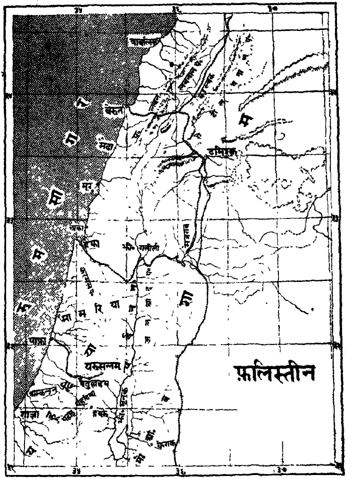
२६६–यह शहर बहुत पुराना है। कहा जाता है कि हज़रत ईसा से ढाई हज़ार वर्ष पहिले बसाया गया था।

परकोटे की दीवार दो सौ हाथ ऊंची थी। इसके भीतर

बड़े सुन्दर बाग और हरे भरे खेत थे। सिकन्दर आजम सन् ईस्वी से ३३१ वर्ष पहिले इसी नगर में मरा था। **बाबुली** जिनको **खाल्दिया** भी कहते हैं, बहुत सभ्य थे।

बाबुल नगर के पुराने दबे हुये खंडहर बग़दाद के पास ज़मीन में से खोदकर निकाले गये है (नक़्शे में यह स्थान भी एक तिकोने चिह्न से दिखाया गया है)। पृष्ठ २४२ के चित्र में जो लाट बनी हुई है, उसको **बाबुल की मीनार** कहते है। इन मकानों और इनकी दीवारों और छतों पर बने हुये चित्रों से उस समय के लोगों की रहन सहन की रीति मालूम होती है। ईंटों पर जो इस उजाड़ में मिलती हैं राजाओं के नाम खुदे होते हैं। अक्षरों की बनावट तीर की तरह है और वह चीनी वर्णमाला से मिलते जुलते हैं। उस समय पुस्तकें काग़ज़ पर नहीं लिखी जाती थीं, बल्कि ईंटों पर लिखकर उनको भट्टों में पका लेते थे जिससे अक्षर कभी मिट न सकें।

२६७—**भाषा**—रूम के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न भाषायें बोली जाती हैं, परन्तु अर्बी और तुर्की का अधिक प्रचार है। पश्चिमी किनारे पर यूनानी, अर्मीनिया में अर्मनी


फ़लिस्तीन
बेरूत
दमिश्क
सूर
अका
हैफ़ा
गलीली
याफ़ा
यरुसलम
बैतुलहम
गाज़ा

और शाम में कहीं कहीं सुरियानी भी बोली जाती है। **सुरियानी** शाम के असली बाशिन्दों की ज़बान है।

२६८—**राज्य प्रबन्ध**—यहां के बादशाह जिनकी पदवी सुल्तान है अब तक स्वतंत्र राज्य करते थे। थोड़े दिनों से यहां भी एक सभा (पार्लमिएट) बनगई है।

पूरे देश के कई एक भाग हैं। हर भाग को **विलायत** और वहां के बड़े हाकिम को **वाली** कहते हैं। इस राज्य को **उस्मानी राज्य** इसलिये कहते हैं कि चंगेज़ ख़ां के बाद उस्मानी तुर्कों ने इसे जीता था और अपनी मातृभूमि को छोड़कर इसी जगह बस गये थे।

शाम (Syria) या फ़िलिस्तीन (Palestine)

२६९—प्राचीन काल में इस देश का उत्तरीय भाग **सूर्य्या** और दक्षिणी भाग **फ़िलिस्तीन** कहलाता था। जब यहां रूमियों का राज्य हुआ तो दोनों भागों को सूर्य्या कहने लगे। सातवीं सदी में जब अरबों ने इस देश को जीता तो इसका नाम **शाम** रक्खा, क्योंकि यहां के असली लोग **नूह के बेटे शाम** के वंशमें हैं। फ़िलिस्तीन में कनान (Canaan) एक गाँव है, जिसके नाम पर यह भाग बहुत ही पुराने समय में **कनान** भी कहा जाता था।

हिन्दू काशी का और मुसलमान मक्का का जितना मान करते हैं, उतना ही ईसाई और यहूदी इस देश को मानते हैं।

हज़रत ईसा इसी देश में पैदा हुये और यहीं से ईसाई धर्म फैला। बहुत से नबी * इसी देश में पैदा हुये थे।

यह देश सदा से पुरानी दुनिया का तिराहा रहा है। बहुत ही पुराने समय में यहीं से हिन्दुस्तान और एशिया के और देशों का माल मिश्र जाता था, फिर वहां से यूरप को। यहां के लोग उस समय जहाज़ चलाने में प्रसिद्ध थे। पुराने शहरों के खंडहर अब भी इस देश की शोभा और तेज को प्रकट करते हैं। यहां बहुत दिनों तक ईसाई और मुसलमानों में लड़ाइयां होती रहीं।

२७०—**विस्तार**—यह देश स्कंदरून की खाड़ी से सीनाई प्रायद्वीप तक रूम सागर के पूर्वी किनारे पर फैला हुआ है। इसके पूर्वी किनारे को **लेवान्त** (Levant) कहते हैं।

२७१—**बनावट**—इस पहाड़ी देश के उत्तर में लबनान (Lebanon) और ऐन्टी लबनान (Anti-Lebanon) पहाड़ की दो समानान्तर श्रेणियां हैं। यह श्रेणियां तारस पहाड़ से मिली हुई हैं। भिन्न भिन्न भागों के भिन्न भिन्न नाम पड़ गये हैं। (नक़्शा देखो) इनके बीच उत्तर में एक घाटी $\frac{1}{2}$ मील ऊंची है। दक्षिण में यहूदिया और सामरिया पहाड़ों के बीच में एक बहुत नीची घाटी है जिसको **यर्दन** (Jordan) की घाटी कहते हैं। इसका सब से नीचा

* ईश्वर की आज्ञा सुनानेवाला।



जार्डन नदी

भाग यानी **मृतक सागर** (Dead Sea) रूम सागर के धरातल से १३१२ फ़ीट नीचा है। यह सागर क्या है एक स्वाभाविक गड्ढा है। दक्षिण में पश्चिमी किनारे पर पहाड़ों और रूम सागर के बीच की नीची जमीन बहुत उपजाऊ है, जिसको **अर्ज़े फ़िलिस्तीन** कहते हैं।

मृतक सागर और यर्दन



मृतक सागर

२७२–इतना नीचा धरातल पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि दोनों ओर के पहाड़ों के बीच की धरती बहुत गहराई तक दब गई है या समुद्र की तह में से ऊपर उभर आई है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि एशियाई कोचक, अर्मीनिया और इस देश में भूकम्प बहुधा आया करते हैं जिनसे कई शहर उजड़ चुके हैं। इस समुद्र का पानी इतना खारी और भारी है कि तैरने वालों का शरीर डूब नहीं सकता। मछलियां इसमें ज़िन्दा नहीं रह सकतीं। इसी कारण इसका नाम **मृतक सागर** है। इसके किनारे वृक्ष और घास का तो नाम ही नहीं। मक्खियां और चिड़ियां भी यहां पर नहीं मार सकतीं। जो चीज इसमें गिरती है उस पर नमक तुरन्त ही जम जाता है। इसमें स कोई नदी नहीं निकलती। एक * यात्री इस प्रकार लिखता है "यहां की हवा में कोई मक्खी नहीं भिनभिनाती थी मानों उसके लिये आज्ञा ही न थी। अनोखा सन्नाटा छाया हुआ था। पृथ्वी पर किसी प्रकार की घास उगी हुई न थी"।

नोट–चित्र में बहकर आई हुई लकड़ियां और यात्री दिखाई देते हैं।

२७४–जलील या गैलोली झील (Galilee)

* किंगलेक साहब।



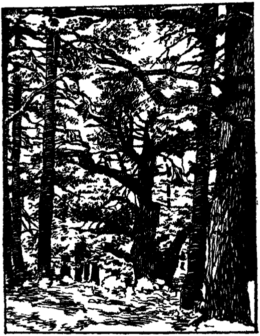
जलील सागर

भी पहाड़ों से घिरी हुई है । इसमें हज़रत ईसामसीह के समय में मछलियां थीं और अब भी है । उत्तरीय पहाड़ों से चार नदियां निकलती हैं, जिनमें से यर्दन नदी जलील झील में होकर मृतक सागर में गिरती है। ईसाइयों की यह गंगा है, क्योंकि इसमें हज़रत ईसा को बतिस्मा * दिया गया था। ईसाई इसका पानी गंगाजल की तरह लेजाते हैं।

२७५—**आबहवा**-घाटियों की आबहवा महाद्वीपी है। लू भी चलती है। ऊंचे पहाड़ी भागों में अधिक गर्मी नहीं पड़ती, परन्तु जाड़ों में सर्दी खूब पड़ती है। उत्तर में जो पहाड़ हैं उन पर बर्फ भी पड़ती है। यहां भी एशियाई कोचक की तरह जाड़ों में मेह बरसता है। यहां के मैदान और पहाड़ों पर जो समुद्र के पास हैं दक्षिणी हिन्दुस्तान के पश्चिमी घाट की तरह अधिक मेह बरसता है। इनके

* चेला बनाना।

दूसरी ओर कम, यहां तक कि पूर्व की ओर अधिक दूर जाने पर रेगिस्तान शुरू होजाता है।



लबनान में प्राचीन काल के देवदार

لبنان میں زمانہ قدیم کے دیودار

२७६—पैदावार पुराने समय में लबनान के पहाड़ों पर देवदार के वृक्ष बहुतायतसे थे जिनकी लकड़ी से छोटे छोटे जहाज बनते थे। अब भी कुछ पेड़ बचे हुये हैं

3

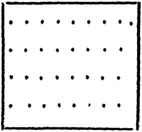
जिनकी रक्षा की जाती है । सामने के चित्र में जो बड़ा और पुराना पेड़ है उसको हजरत ईसा के समय का बताते हैं । हरी भरी घाटियों और मैदानों में वही मेवे और फल पैदा होते हैं जो एशियाई कोचक में । यहां पिस्ते भी होते हैं । जो अनाज हिन्दुस्तान में पैदा होते हैं वही इस देश में पैदा होते हैं, जैसे तिल, मसूर, उर्द, ज्वार, चने आदि । चरागाहों के कारण भेड़ बकरियां अधिक पाली जाती हैं, जिनसे ऊन बहुत मिलती है ।

२७७—**शिल्प और व्यौपार**—खेती खास पेशा है । रेशमी कपड़े बुने जाते हैं । जैतून के तेल से साबुन की टिकियां बनाई जाती हैं । गेहूं, फल, ऊन और चमड़ा और देशों को जाता है । यहां छकड़ों और गाड़ियों के लिये अच्छी सड़कें बनी हुई हैं ।

२७८—**बाशिन्दे**—यहां अधिकतर ईसाई, मुसलमान और कुछ यहूदी हैं । पहिले यह देश यहूदियों का असली घर था, परन्तु इटली के निवासी रूमियों ने उनको यहां से निकाल दिया । जो यहूदी यहां आज कल हैं वह पीछे से आकर बसे हैं । अब वह भिन्न भिन्न देशों में बसे हुये हैं और व्यौपार और महाजनी का काम करते हैं । हिन्दुस्तान में भी यहूदी पाये जाते हैं । ईसाई आबादी में यूनानी, रूमी,

गुर्ज और कुछ वहां के असली रहनेवाले हैं । मुसलमानी आबादी में अरब और तुर्क हैं । इनके सिवाय **अनसरी और दरोज़** भी बसे हुये हैं । यह भी यहां के असली बाशिन्दे मालूम होते हैं । यह दोनों जातिया न मुसलमान हैं और न ईसाई । अनसरी सूर्य्य और चन्द्रमा को पूजते हैं । हिन्दुओं की तरह दरोज भी आवागमन को मानते हैं ।

२७९–**आबादी**–आबादी का औसत प्रति वर्गमील ३३ मनुष्य है ।



२८०–**नगर–हल्ब** (Aleppo) व्यौपारिक रास्तों का चौराहा है । पुराने समय में इसकी गिन्ती व्यौपार की बड़ी मंडियों में थी ।

त्राबलिस (Tripoli) स्कंदरून के उत्तर में बन्दरगाह है । स्कंदरून और हल्ब के बीच में जो क़ाफ़िले आते जाते हैं उनमें हज़ारों ऊंट होते हैं ।

दमिश्क़ (Damascus) बहुत ही पुराना नगर है जो एक उपजाऊ नख़्लिस्तान में बसा हुआ है । यहां क़ाफ़िले ठहरते हैं । यह भी ख़ीवा की तरह बाग़ों से घिरा हुआ है ।

यहां से मेवे, ऊन और रेशम और देशों को जाते हैं।
शेख इब्नबतूता ने इस तरह लिखा है:—

"दमिश्क एक ऐसा नगर है कि मैंने अब तक दूर दूर के देशा में जाकर जितने नगर देखे वह सब उसके सामने मुझे तुच्छ मालूम देने लगे। नगर के चारों ओर नहरें बह रही हैं। मेवे के वृक्षों से चारों ओर घिरा हुआ है"।

बेरूत (Beirut) दमिश्क का बन्दरगाह है। व्योपार और विस्तार में स्मर्ना के बाद इसीका नम्बर है।

बेत-उल्-लहम (Bait-ul-lahm) में हजरत ईसा पैदा हुये थे।



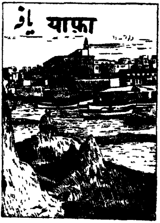
यरूसलम (Jerusalem) जिसे जरूसलम भी कहते हैं, ईसाइयों का सब से बड़ा पवित्र स्थान है। यह नगर एक पहाड़ पर बसा हुआ है। हजरत ईसा की समाधि (मज़ार) यहीं है। अमेरिका, यूरप आदि दूर दूर के देशों

के लाखों ईसाई यहां की यात्रा के लिये आते हैं। हफ़्ते में

रूसी यात्री

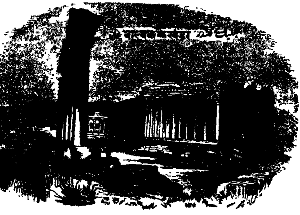


एक दिन इकट्ठे होकर यहूदी लोग अपनी गिरी हुई दशा पर रोते पीटते हैं। याफ़ा (Jaffa) यरूसलम का बन्दर-



गाह है। यहां से मनों नारंगियां और देशों को जाती हैं।

बालबक का पुराना नगर अब उजाड़ पड़ा हुआ है। इस



के खँडहरों में बाल अर्थात् सुर्य्य के मन्दिर को देखकर आश्चर्य्य मालूम होता है कि इसके बड़े बड़े खम्भे किस तरह चढ़ाये गये थे।

गज़ा (Gaza) बहुत ही पुराना शहर यरूसलम के दक्षिण में मिश्र के रास्ते पर बसा हुआ है। **आर्मीनिया** और **फ़िलिस्तीन** के उपजाऊ होने के कारण यहां खाने पीने की चीज़ें बहुतायत से मिलती हैं। चूंकि पानी काफ़ी है, इसलिये इस देश में होकर क़ाफ़िले मिश्र जाते थे और अब भी जाते हैं।

ईजियन द्वीपसमूह (Aegean Islands)

२८१–ईजियन सागर में कई द्वीप हैं। वह सब प्रायः पहाड़ी हैं, जिनमें से कुछ छोटे हैं और कुछ बड़े, कुछ उपजाऊ हैं और कुछ पथरीले जिनमें खेती नहीं होसकती। इनमें से मितलीन (Mitylene) सामोस (Samos) रोड्स (Rhodes) और साईप्रस (Cyprus) अधिक प्रसिद्ध हैं। मितलीन बाबा अन्तरीप के पास और सामोस स्मर्ना के पास है। सामोस वही द्वीप है जहां यूनान का हकीम* पिथागोरस पैदा हुआ था।

२८२–**पैदावार**–जैतून, रूमी मस्तगी, मेवे, फल अधिकता से होते हैं जो यूरप को चले जाते हैं। यहां अंगूरी शराब भी अधिक बनती है। इन द्वीपों के पास समुद्र से स्पंज अधिक निकाला जाताहै। कुछ द्वीपोंमें ताँबा निकलता था, अब फिर निकालने का प्रबन्ध हुआ है।

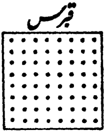
साईप्रस का द्वीप सन् १८७८ ई० से अंगरेजी अधिकार में है। इसके बदले कुछ कर रूम के सुल्तान को दिया जाता है।

२८३–**नगर**–निकोशिया (Nikosia) इसकी राजधानी है।

---

* उक्लैदस के पहिले अध्याय की ४७ वीं साध्य को इसीने निकाला था।

लारन्का (Larnaca) समुद्र के किनारे पर व्यौपार की मुख्य मंडी है। यहां अंगरेजी आबादी बहुत कम है। अधिकतर यूनानी और अरब बसे हुये हैं।



CYPRUS

प्रश्न

१—एशियाई रूम का विस्तार बताओ। उसका यह नाम क्यों पड़ा ?

२—प्राकृतिक बनावट के विचार से एशियाई रूम के कितने भाग हैं ?

३—एशियाई कोचककी बनावट का जापान से मुक़ाबिला करो।

४—एशियाई कोचक और अर्मीनिया के पहाड़ों और नदियों का मुक़ाबिला करो।

५—एशियाई कोचक और जापान की आबहवा का मुक़ाबिला करो।

६–फ़ुरात और दजला की घाटी के देश और हर एक की बनावट बताओ।

७–गंगा और यमुना के दोआबे से फ़ुरात और दजला के दोआबे का मुक़ाबिला करो।

८–इराक़े अरब की ज़मीन अब उपजाऊ क्यों नहीं रही?

९–शाम देश का नाम पड़ने का कारण और उसका विस्तार बताओ। इस देश के और क्या नाम हैं?

१०–एशियाई कोचक और शाम की आबहवा का मुक़ाबिला करो।

११– रूम के राज्यके भिन्न भिन्न भागों की पैदावार क्याहै?

१२–फ़ारिस की खाड़ी की हालत में क्या अदल-बदल हुआ और क्यों?

१३–शत्तुल अरब और इराक़े अरब में क्या फ़र्क़ है?

१४–एशियाई रूम के भिन्न भिन्न भागों की कारीगरी बताओ।

१५–एशियाई तुर्की राज्य में आने जाने के रास्ते क्या हैं और क़ाफ़िले के रास्ते कौन कौनसे हैं?

१६–बसरा और कोनिया के बीच में क़ाफ़िलों का रास्ता नदियों के किनारे होकर क्यों है?

१७–शाम और दक्षिणी हिन्दुस्तान की आबहवा और पैदावार का मुक़ाबिला करो।

१८—शाम के व्यौपारिक पदार्थ कौन कौनसे हैं ?

१९—शाम में कौन कौनसे पहाड़, नदियां और झीलें हैं ?

२०—मृतक सागर से नदियां क्यों नहीं निकलतीं ?

२१—मृतक सागर का कास्पियन सागर से मुक़ाबिला करो।

२२—क़िज़िलइरमाक़, वान, यर्दन, तारस, क़र्नो, अजमेर, त्रिबजंद, मोसल, याफ़ा, पाल्ट्रिक, फ़िलिस्तीन, समसूं, सानोस, कनान, स्कंदरून, मियान्दर और जलील क्या हैं और कहां हैं ?

२३-एशियाई रूम में किस किस जाति और धर्म के लोग बसे हुये हैं ?

२४—एशियाई रूम के राज्य में बहुतसे अदल बदल क्यों हुये हैं ? आज कल यहां का राज्यप्रबन्ध क्या है ?

२५—पुराने समय में एशिया, यूरप और अफ़्रीक़ा के क़ाफ़िले फ़िलिस्तीन होकर क्यों जाते थे ?

२६—नीचे के स्थान क्या हैं और किस लिये प्रसिद्ध हैं ? करबला, अर्ज़रूम, बसरा, बैतुल्लहम, निकसिया, बेरूत, हल्ब, बाबुल, बग़दाद, अंगोरा, क़ोनिया, दयारे बकर, यरूसलम, लारन्का, नैनवाह, दमिश्क़, स्कूतरी, मोसल।

२७—एशियाई रूम का नक़्शा खींचो और उसमें रेल की सड़कें दिखाओ।

२८—बाबुल और आसूर के खँडहरों से क्या क्या बातें मालूम हुई हैं ?

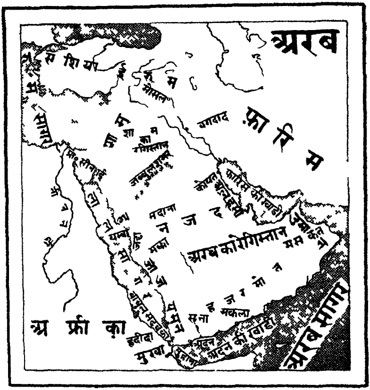
२९—एशियाई रूम की वह नदियां जो एजियन सागर और रूम सागर में गिरती हैं, बहुधा छोटी हैं । इसका क्या कारण है ?

३०—एजियन सागर के द्वीपों का मुख्य व्योपार क्या है ? उन द्वीपों में से कौनसा द्वीप बृटिश राज्य में है ?

सीनाई का प्रायद्वीप



२८४—सीनाई का प्रायद्वीप राज्यप्रबन्ध के विचार से मिश्र के राज्य में शामिल है, परन्तु बनावट के विचार से


अरब
फ़ारिस
बगदाद
फ़ारिस की खाड़ी
न ज द
मदीना
मक्का
अरब का रेगिस्तान
अ फ्री का
हदीदा
सना
मकल्ला
अदन की खाड़ी
अरब सागर

अरब का भाग है। इसके दोनों ओर अकूबा और स्वेज की खाड़ियां हैं। यह पहाड़ी देश गर्म और ख़ुश्क होने से बंजर और उजाड़ है। इसके पहाड़, नदी और नाले सब ख़ुश्क रहते हैं। केवल ऊंची ऊंची चोटियोंपर कुछ पानी रहने के कारण घास के मैदान हैं जहां बद्दू लोग अपने पशुओं के साथ फिरा करते हैं। इसके उत्तर में **गज़ा** (Gaza) से **मिश्र** को रास्ता जाता है। इसके पश्चिमी कोने पर **पोर्ट सईद** है (पोर्ट = बन्दरगाह)। यहां जहाज़ कोयला लेने के लिये बहुधा ठहरते हैं। कहा जाता है कि सीनाई पहाड़ की **तूर** नामी चोटी * पर यहूदियों के पैग़म्बर **हज़रत मूसा** ने ईश्वर का प्रकाश देखा था।

अरब (Arabia)

२८५—मुसलमान लड़कों में से बिरला ही कोई होगा जो अरब को न जानता हो, क्योंकि उनके पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब इसी देश के मक्का शहर में पैदा हुये थे। हर साल हज़ारों मुसलमान हिन्दुस्तान से मक्का जाते हैं। यह प्रायद्वीप पृथ्वी के ठीक बीच में है। इस देश का अरब नाम पड़ने का कारण यह है कि यहां **इरब** अर्थात् सूखी घास

* अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ है कि कौनसी चोटी तूर है। उस पहाड़को कोह मूसा कहते हैं जिस पर ईसाइयों का एक मठ बना हुआ है।

अधिक होती है, जिसका कारण सूखी और रेगिस्तानी ज़मीन है। दूसरा कारण यह है कि येरब जो यहां का दूसरा बादशाह था उसीके नाम पर इस देश का नाम **अरब** पड़ा।

२८६–**विस्तार** इसके उत्तर में शाम और इराक़े अरब, दक्षिण में अदन की खाड़ी और हिन्द महासागर, पश्चिम में लाल सागर और पूर्व में उमान और ईरान की खाड़ियां हैं। इसका क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के तीन चौथाई से कुछ कम है।

२८७–**किनारा**–पश्चिमी किनारा बिल्कुल सपाट है कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है। कुछ मामूली बन्दरगाह जहाजों के लिये हैं। दक्षिण पूर्व में कुछ अच्छे बन्दरगाह हैं। उनका वर्णन आगे किया जायगा। मूंगे की चट्टानों के कारण जहाज़ चलाना कठिन है। लाल सागर में **पेरिम** (Perim) हिन्द महासागर मे **स्कूतरा** * (Socotra) और ईरान की खाड़ी में **बहरेन** (Bahrein) द्वीप हैं। पहिले दो द्वीप ब्रटिश राज्य में हैं और बहरेन द्वीप जहा मोती निकाले जाते हैं वह भी हमारी सरकार की रक्षा में है।

रासउलहद (Ras-ul-had) ओमन की खाड़ी (Oman) के द्वार पर और मसन्दम अन्तरीप (Masandam) हुर्मुज़ डमरुमध्य पर है। इनसे दो छोटे प्रायद्वीप बनजाते हैं।

* वास्तव मे यह अफ्रीका का द्वीप है।

२८८–बनावट–(अ) दक्षिणी हिन्दुस्तान की तरह अरब भी एक प्लेटो है, क्योंकि दक्षिणी हिन्दुस्तान ही की तरह इसके किनारे पर पहाड़ों के सिलसिले हैं। दक्षिणी हिन्दुस्तान की तरह समुद्र और पहाड़ों के बीच में संजाफ की तरह नीची जमीन फैली हुई है। लाल सागर के पास जो नीची जमीन है, उसे तहामा कहते हैं। जिस तरह दक्षिणी हिन्दुस्तान और गंगा के दोआबे के बीच में विंध्याचल पर्वत है, उसी तरह अरब के दक्षिणी किनारे और इराक अरब के बीच में नज्द के पहाड़ हैं, जो मक्का में किनारे के पहाड़ों से मिल गये हैं।

(ब) दक्षिणी हिन्दुस्तान के घाटों के बीच में हरी भरी और उपजाऊ जमीन है, परन्तु अरब के घाटों के बीच में रेगिस्तान है जो दक्षिण की ओर अधिक चौड़ा है और उत्तर की ओर कम चौड़ा होता हुआ इराक़े अरब तक चला गया है। केवल नज्द का प्लेटो रेगिस्तानी नहीं है। पूरे क्षेत्रफल का तिहाई बीच का प्लेटो, एक तिहाई रेगिस्तान और शेष तिहाई किनारे के पहाड़ी सिल्सिले हैं।

(स) दक्षिणी हिन्दुस्तान के घाटों के बीच में बहुत सी नदियां हैं परन्तु अरब के बीच में गोबी के रेगिस्तान की तरह न कोई झील है और न कोई नदी, कहीं कहीं

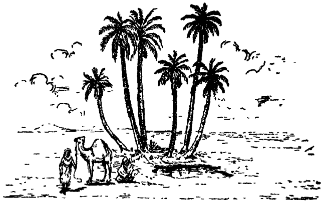
छोटे छोटे नाले हैं। बरसात के दिनों में जब कभी मेह बरसता है, तो वह उमड आते हैं और फिर सूख जाते हैं। **यमन** और **हज़्रमौत** के पहाड़ों से दो छोटी नदियां निकली हैं जो हिन्द महासागर तक पहुँचती हैं।

२८६–आबहवा–अरब की आबहवा बहुत ही अधिक गर्म और ख़ुश्क है। ऐसी गर्म और ख़ुश्क हवा दुनिया के किसी और देश की नहीं है। इसके कुछ भागों में तो मेह बरसता ही नहीं। कहीं कहीं तीसरे चौथे साल मेह बरस जाता है। कहीं कहीं इतनी वर्षा हो जाती है कि चरागाहों में घास उग आती है। कभी कभी तीन चार वर्ष तक मेह नहीं बरसता। **यमन** में तो पूर्वी हिन्दुस्तान की तरह मानसून हवा के चलने पर मेह बरस जाता है। **उमान** में भी खेती के लिये थोड़ा बहुत मेह बरस जाता है। सितम्बर के महीने में जब दक्षिणी मानसून हिन्दुस्तान से लौटने लगती है, तो नज्द के पहाड़ों से टकराती है, इसी कारण वहां दो तीन हफ़्ते तक कुछ मेह बरस जाता है। गर्मियों में कभी कभी बहुत ही गर्म हवा **समूम** आग की लपट की तरह चलती है। आकाश रेत से छा जाता है। जब समूम हवा चलने लगती है, मुसाफ़िर लेट जाते हैं और पशु अपने नथनों को नीचे करलेते हैं। इस ढंग से भी वह कभी कभी नहीं बचते। बहुधा क़ाफ़िले तबाह हो जाते हैं।



गोबी के रेगिस्तान की तरह यहां भी रेत के टीले बनते और बिगड़ते रहते हैं । यह अफ्रीका के रेगिस्तान के पास होने का फल है कि इस अभागे देश को मानसून हवा से लाभ नहीं पहुँचता, क्योंकि वह इसके किनारे होकर निकल जाती हैं । अरब अफ्रीका के रेगिस्तान सहरा का एक भाग है ।

२१०–**पैदावार**–यमन के पहाड़ों और उनकी घाटियों में जहां सिंचाई के लिये पानी काफ़ी मिल जाता है, गेहूं और फल बहुतायत से होते हैं । क़हवा जैसा अच्छा यहां पैदा होता है, दुनिया भर में कहीं नहीं होता । यमन के बाद उमान और हज़्रमौत का नम्बर है जहां अनाज और भागों की अपेक्षा अधिक पैदा होता है । नज्द की गहरी घाटियों में भी सिंचाई के लिये काफ़ी पानी मिल जाता है ।



इनके सिवाय रेगिस्तान में कहीं कहीं छोटे ओसिस (नख़्लिस्तान) ऐसी जगहों पर पाये जाते हैं जहां पहाड़ों पर के मेह का पानी भीतर ही भीतर रिस रिस कर पहुँचता है। बरसाती पानी के इस तरह रिस कर पहुँचने का प्रमाण यह है कि ईरान की खाड़ी की तह में कहीं कहीं पोता लगाने वालों को जमीन के सोतों से निकलता हुआ मीठा पानी मिलता है।

इस देश की खास पैदावार खजूर है और यही यहांके लोगों का आहार है। मक्का के पास सैकड़ों तरह की खजूरें होती हैं। नख़्लिस्तानों में भी यह मेवा पैदा होता है। कहीं कहीं कुछ घास के मैदान पाये जाते हैं। यहां की पैदावार में से

सनाय, एलवा, मजीठ, कालीमिर्च, लोबान और एक प्रकार का गोंद हिन्दुस्तान में आकर बिकता है।





२६१–यह देश ऊंटों का असली घरहै। उमानकी साँड़नी प्रसिद्ध हैं। यह देश टिड्डियों का भी घर है जिनको लोग खाते हैं। असील और तेज घोड़े भी अरब में पैदा होते हैं, विशेष कर नज्द में।

२६२–**शिल्प और कारीगरी**–इस देश में शिल्प और कारीगरी कोई ऐसी नहीं जिसका कुछ हाल लिखा जाये। यहां के बद्दू लोग, जो घर बनाकर नहीं बसते, गृहस्थ लोगों की अपेक्षा भेड़, बकरियां, घोड़े और ऊंट अधिक पालते हैं। कुछ लोग समुद्र में से मोती निकालने का काम करते हैं। किनारे पर के कुछ लोग मछली पकड़ते हैं। खजूर से कन्द और मिश्री बनाई जाती है। अलहसा में लकड़ी पर चांदी की पच्चीकारी का काम अच्छा होता है।

२६३–**आने जाने के रास्ते**–रेगिस्तान के कारण

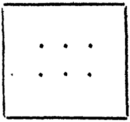
इस देश में सड़कें नहीं हैं। केवल ऊंट और घोड़ों के लिये रास्ते हैं, परन्तु वह भी बद्दू लुटेरों की लूट मार से बचे हुये नहीं हैं। दो रास्तों पर क़ाफ़िले अधिक चलते हैं। पहिला दमिश्क़ से मदीना होता हुआ मक्का तक और दूसरा बग़दाद से मक्का तक।

२६४—अरब का प्राचीन सामुद्रिक व्यौपार— चूंकि आसपास के देशों में रेगिस्तानों के कारण राह चलना कठिन था और इस देश के तीन ओर समुद्र भी है, इस लिये प्राचीन काल में अरब के लोग हिन्दुस्तान, ब्रह्मा आदि का माल समुद्र के रास्ते से यूरप में रूमसागर के बन्दरगाहों तक लेजाते थे। मुसलमानी धर्म में ब्याज पर रुपया लेना देना वर्जित है, इस लिये कम्पनियां बनाकर व्यौपार के लिये बहुत सी पूंजी इकट्ठी नहीं होती थीं, नहीं तो यहां का पुराना व्यौपार अब तक बना रहता।

२६५—वर्तमान व्यौपार—यहां का मुख्य व्यौपारिक पदार्थ क़हवा है। गोंद, खजूर, सनाय, छुहारे, लोबान आदि भी और देशों को जाते हैं। घोड़े और साँड़नियां भी यहां से और देशों को जाती हैं। हथियार, बारूद आदि चीजें और देशों से यहां आती हैं।

२६६—आबादी और बाशिन्दे—यहां की आबादी

ठीक ठीक मालूम नहीं है, परन्तु यह अनुमान किया जाता है कि आबादी का औसत प्रति वर्ग मील ६ से अधिक नहीं।



यहूदियों की तरह अरब भी शाम की औलाद में से हैं। एशियाई रूमकी तरह यहांकी आबादी दो भागों में बटीहुई है।

(१) जो लोग घर बनाकर रहते हैं वह अरब कहलाते हैं। वह खेती और व्यौपार करते हैं। यह लोग अधिकतर नज्द, हजाज, यमन आदि में बसे हुये हैं और सभ्य हैं। यह लोग सिर पर दुपट्टा बाँधते हैं और ढीला ढाला नीचा जुब्बा (एक तरह का अँगरखा) पहनते हैं। कविता में इन लोगों की बड़ी रुचि है।

(२) जो लोग घर बनाकर नहीं बसते और अपने पशुओं को साथ लिये हुये चरागाहों और नख़लिस्तानों में फिरा करते हैं, वह बद्दू कहलाते हैं। वह जंगली और लड़ाका होते हैं। अपने पशुओं को चराना या लूट मार करना



इनका मुख्य काम है। ऐसा होने पर भी यह शहर के लोगों से घिन करते हैं।

२१७–स्वभाव–अरब के लोगों का डील डौल छोटा होता है। वह बलवान्, साहसी और बहादुर होते हैं। स्वतन्त्रता उनके चेहरे से टपकती है। उनकी स्त्रियां भी बहादुर होती हैं। यह लोग अतिथि (पाहुनों) का बड़ा सत्कार करते हैं, यहां तक कि भूका बद्दू भी अपने भोजन में से कुछ भाग अतिथि को अवश्य देता है। जो आदमी बद्दुओं की शरण में आ जाता है, उसकी रक्षा वह अपने प्राण की तरह करते हैं। पशुओं की चोरी करना बड़ी अच्छी बात समझते हैं। खून का बदला बिना लिये नहीं

ओढ़ते । यह लोग प्रायः एड़ी तक नीचा कुर्ता पहनते हैं । इस देश के लोग क़हवा अधिक पीने हैं ।

२६८—धर्म—अरबके लोग मुसलमान हैं । मुहम्मद साहब से पहिले यहां के लोग मूर्ति पूजा करते थे । मुहम्मद साहब ने इस रीति को बन्द किया ।

२६९—राज्य प्रबन्ध के विचार से अरब के आठ भाग हैं । १. हजाज़ (Hejaz) २. यमन (Yemen) ३. अदन (Aden) ४. हज़्रमौत (Hadramaut) ५. उमान (Oman) ६. अलहसा (El Hasa) ७. जबलुश्शम्म (Jabal-ul-shammar) ८. नज्द (Nejd) अदन जो ब्रिटिश



अदन عدن

राज्य में है, बम्बई की सरकार के आधीन है । इसके तीन

ओर समुद्र है और एक ओर रेगिस्तान । शहर और छावनी एक घाटी में बसे हुये हैं जो पहाड़ों से घिरी हुई है । अरब और यहूदियों के सिवाय यहां हिन्दुस्तानी भी बसे हुये हैं । यहां का बन्दरगाह काफ़ी चौड़ा है और यूरप और एशिया के समुद्रीय रास्तों का नाका है । ब्रिटिश राज्य के संगीन क़िलों और बन्दरगाहों में से जो पृथ्वी के भिन्न भिन्न भागों में है अदन भी है ।

हज़्रमौत बद्दुओं के सरदारों के अधिकार में है जो हमारी सरकार के आधीन हैं । **मक़ल्ला** (Makalla) इसका बन्दरगाह है ।

उमान मस्क़त के सुल्तान के अधिकार में है जो अंगरेज़ी सरकार से मेल रखते हैं ।

मस्क़त (Muscat) राजधानी है और व्योपार की मंडी है ।





مسقطی मसक़ती

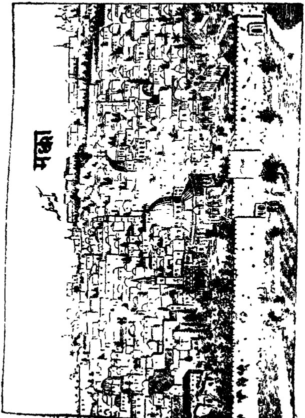
जबलुरशंम्र और नज्द अरब के मध्य में दो रियासतें हैं। असली अरब अधिकतर नज्द में बसे हुये हैं। यहीं के घोड़े असील और अच्छे होते हैं, जिसका मुख्य कारण यहां की खुश्क आब ़हवा है।

कोयत अल्हसा का बन्दरगाह है। अरबी घोड़े प्रायः इसी स्थान से और देशों को जाते हैं।

२००—नगर—ऐसे देश में जहां केवल दशवें भाग में खेती होती है, बड़े बड़े नगर नहीं हो सकते। इसी कारण यहां

शहर बहुत कम हैं और जो हैं भी उनकी आबादी अधिक नहीं।

मक्का (Mecca) अरब के तमाम शहरों में अधिक प्रसिद्ध हैं। यहां मुसलमानों के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद साहब पैदा हुये थे। पृथ्वी के अनेक भागों से लाखों मुसलमान यहां तीर्थयात्रा



करने के लिये आते हैं। यहां की खास मसजिद की भीतरी कोठरी में एक घनाकार खम्भा बनाहुआ है। जिस में एक काला पत्थर जड़ा हुआ है। इसके घनाकार (मुकाब) होने के कारण वह काबा कहाजाता है। जियारतके समय मुसलमान उस पत्थर को चूमते हैं। मक्का का बन्दरगाह जद्दा (Jiddah) है।



मदीना

मदीना (Medina) में मुहम्मद साहब का मज़ार है। वह अपने शत्रुओं से बचने के लिये १५ जुलाई सन् ६६२ ई० को मक्का से मदीना चले गये। इसी तारीख से सन् हिजरी शुरू होता है (हिज्र का अर्थ वियोग या जुदा होना है)।

यनबू (Yembo) मदीना का बन्दरगाह है।

सना (Sana) अरब के सब शहरों में सुन्दर है । यहां क़हवा की मंडी है :

हदीदा (Hodeida) सना का बन्दरगाह है । मुक्खा (Mocha) का क़हवा बहुतही अच्छा होता है जो अधिकतर अदन में जाकर बिकता है ।

३०१ राज्य प्रबन्ध—मक्का में रूम के सुल्तान की ओर से एक अफ़सर रहता है जिसे **शरीफ़** कहते हैं । बद्दू अलग अलग दलों में रहते हैं और अपने सरदारों के सिवाय जिनको **शेख़** कहते हैं किसी का हुक्म नहीं मानते । भिन्न भिन्न दलों के लड़ाई झगड़े प्राय: पंचायत से तै होते हैं । दंड (जुर्माने) में पशु लिये और दिये जाते हैं ।

प्रश्न

१—अरब के नाम पड़ने का क्या कारण है ? नक़्शा देख कर बताओ कि किस किस कटिबन्ध में कहां तक यह देश फैला हुआ है ।

२—अरब के पश्चिमी किनारे पर अच्छे बन्दरगाह क्यों नहीं हैं ?

३—अरब के किनारे पर कौन कौन से द्वीप हैं । दक्षिण पूर्व में कौन कौन से बन्दरगाह हैं ?

४—दक्षिणी हिन्दुस्तान और अरब की बनावट का मुक़ाबिला करो ।

५—मंगोलिया और अरब का मुक़ाबिला करो।

६—अरब में रेगिस्तान अधिक और नदियां कम क्यों हैं?

७—अरब के कौन कौन से भाग उपजाऊ हैं और क्यों?

८—अरब की आबहवा कैसी है? अरब की आबहवा का गोबी के रेगिस्तान और पश्चिमी तुर्किस्तान की आबहवा से मुक़ाबिला करो।

९—समूम से क्या समझते हो और उसका अरब के ऊपर क्या असर पड़ता है?

१०—अरब की ख़ास पैदावार क्या है? यहां के व्यौपारिक पदार्थ कौन कौन से हैं?

११—राज्य प्रबन्ध के विचार से अरब के कितने भाग हैं?

१२—अरब का कौन सा भाग हमारी सरकार के अधिकार में है? उसका राज्य प्रबन्ध किस तरह होता है?

१३—नीचे के स्थान क्या हैं:—

पेरिम, नज्द, हज़्रमौत, अल्हसा, यमन, उमान, हजाज़, मसन्दम, स्कोतरा, रासुल्हद।

१४—पुराने समय में अरब के लोग जहाज़ चलाने में क्यों चतुर थे और किन किन देशों से व्यौपार करते थे?

१५—अरब का पुराना समुद्रीय व्यौपार अब तक जारी क्यों नहीं रहा?

१६–अरब के लोग किस जाति के हैं ? उनकी रहन सहन की रीति और स्वभाव बताओ।

१७–क्या प्रमाण है कि अरब में पहाड़ों के मेह का पानी नखिलस्तानों तक रिस रिस कर पहुंचता है ?

१८–अरब का अधिक भाग वहीं के लोगों के अधिकार में है, इसका क्या कारण है ?

१९–नीचे के स्थान क्या हैं और किस लिये प्रसिद्ध हैं ? मक्का, मस्क़त, यनबू, हदीदा, मदीना, जद्दा, बहरेन, सना, उमान, कोयत।

२०–नज्द, यमन और हज़्रमौत में मेह क्यों बरसता है और शेष भागों में क्यों नहीं ?

२१–साबित करो कि अरब का राज्य अपनी भौगोलिक दशा के कारण ही पुरानी दुनिया में शीघ्र फैल गया था।

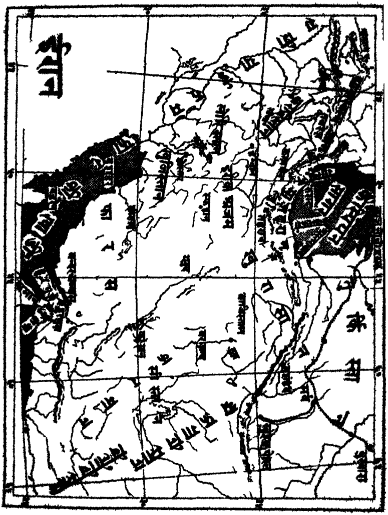
२२–अरब का नक़्शा खींचकर उसमें प्रश्न नं० १९ के स्थानों को दिखाओ।

ईरान या फ़ारिस (Persia)

" केते भये यादव, सगर * सुत केते भये,
जात हूं न जाने ज्यों तरैया परभात की "

३०२–यह पद ईरान के ऊपर अच्छा घटता है। इस

* सगर रघुवंश में एक राजा हुये थे जिनके ६० हज़ार बेटे थे, इन्हीं के कुल में राजा भागीरथ हुये थे जो गंगाजी को लाये थे।



देश का कभी वह समय था जब **दारा** बादशाह का राज्य सिंध नदी से रूम सागर के किनारे तक फैला हुआ था। दारा का नाम सुन कर संसार के राजा और महाराजा कांप उठते थे। अब यह दशा है कि पुराने राज्य का केवल आधा भाग रह गया है और उसका भी ठीक प्रबन्ध नहीं है। वास्तव में यह राज्य उसी समय से घटने लगा जब दारा यूनान के एक छोटे राज्य के बादशाह महाबली **सिकन्दर** से हार गया। अब न सिकन्दर ही रहा और न दारा, केवल दोनों के नाम बाक़ी हैं। सत्य है समय के चक्र से कोई भी नहीं बच सकता।

३०३—**ईरज** और **तूरज** दो राजकुमार थे। एक ने अपने राज्य का नाम **ईरान** (Iran) और दूसरे ने **तूरान** (Turan) रक्खा। सच यह है कि **आर्य्य** लोगों के यहां बस जाने से इस का नाम **ईरान** पड़गया।

फ़ारिस नाम पड़ने का कारण यह है कि **हुशंग** बादशाह के बेटे का नाम **पारिस** था। उसी के नाम पर यहां के लोग ईरान को पारिस कहने लगे। अरब के लोगों ने पारिस को बदल कर फ़ारिस † कर दिया।

३०४—**विस्तार**—इसके उत्तर में कास्पियन सागर और पश्चिमी तुर्किस्तान, दक्षिण में फ़ारिस और उमान की

† अरब वाले इस देश को अजम भी कहते हैं।

खाड़ियां, पूर्व में बिलोचिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान, और पश्चिम में एशियाई रूम है। गुर्जिस्तान, अर्मीनिया और कुर्दिस्तान के कुछ भाग जो पहिले इसमें शामिल थे, अब इस राज्य के अधिकार से निकल गये।

अरारात पर्वत के पास फ़ारिस, एशियाई रूम और एशियाई रूस की सीमायें मिलती हैं।

इस का क्षेत्रफल हिन्दुस्तान के क्षेत्रफल का तिहाई है।

३०५–**किनारा**–कास्पियन सागर और फ़ारिस की खाड़ी का किनारा सपाट है। बन्दर अब्बास (Bundar Abbas) लिंगाह (Lingah) और बूशहर (Bushire) दक्षिणी किनारे पर प्रसिद्ध बन्दरगाह हैं। कास्पियन सागर के दक्षिणी किनारे पर **अबुल्फ़र्श** * है। किनारों के पास द्वीप भी बहुत कम हैं। हुर्मुज़ के मुहाने के उत्तर में **किश्म** का द्वीप है जो कुछ बड़ा है। इसी के पास ही उत्तर पूर्व की ओर एक छोटासा द्वीप **हुर्मुज़** है।

३०६–**बनावट**–(अ) ईरान में पश्चिमी प्लेटो का आधा भाग शामिल है। (प्लेटोओं का नक़्शा देखो) यह देश चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है और भीतर भी

* नक़्शे में बालफ़र्श जैसा कि कुछ अंगरेज़ी और उर्दू नक़्शों में दिया हुआ है लिखा गया है। ठीक नाम अबुल्फ़र्श है जो पीछे से मालूम हुआ।

पहाड़ों की कई समानान्तर श्रेणियां हैं। अल्बुर्ज की सब से ऊंची चोटी जो सुप्त ज्वालामुखी है **दमावन्द** (Demavend) है। यह हज़ारों वर्ष से बन्द है, परन्तु कभी कभी इस से धुएं जैसी चीज़ निकलती है, कहीं कहीं गर्मी के कारण इस पर आदमी एक मिनट से अधिक नहीं बैठ सकता। इसका मुंह बर्फ़ से ढका रहता है जिसके किनारे गंधक मिलती है।

ज़ग्रोश पहाड़ अरारात से शुरू हो कर दक्षिण पश्चिम की ओर एशियाई रूम और फ़ारिस के बीच में सीमा बनाता हुआ शीराज़ तक चला गया है। पूर्व में कुछ पहाड़ों की चोटियां ***सीस्तान झील*** (Seistan) के नीचे मैदान के सामने हैं।

(ब) **मैदान**- कुछ चौरस मैदान फ़ारिस की खाड़ी, उमान की खाड़ी और कास्पियन सागर के पास है। इस देश का दो तिहाई भाग बंजर और रेगिस्तान है। ख़ुरासान की ओर ऐसी ज़मीन है जिस में नौनी बहुत होती है। उत्तर पश्चिम की ओर का भाग उपजाऊ है।

(स) **झीलें और नदियां**–इस देश में दलदल और खारी झीलें बहुतसी हैं। उन में सब से बड़ी **उर्मिया झील**(Urumya Lake) है, जिस का पानी **मृतक सागर** की तरह खारी, कड़ुआ और भारी है, सीस्तान झील का कुछ

भाग इस देश में भी है और कुछ अफ़गानिस्तान में। दो तिहाई ज़मीन का पानी रेगिस्तानों और झीलों में ही रहजाता है, समुद्र तक नहीं पहुंचता (नक़शे में झील और उन में गिरती हुई नदियां देखो) केवल दो नदियां अर्थात् सफ़ेद नदी और क़ारू समुद्र में गिरती हैं। क़ारू नदी का पानी शत्तल अरब की राह से फ़ारिस की खाड़ी तक पहुंचता है और सफ़ेद नदी का कास्पियन सागर तक। अरगोश के चूने के पहाड़ों में छोटी छोटी नदियां गड्ढों के भीतर ही भीतर बहती हैं, बाहर से दिखाई नहीं देतीं। केवल क़ारू नदी में होकर नावों पर माल कुछ दूर तक आ जा सकता है।

३०७—**आबहवा**—" इस देश में दुनिया के भिन्न भिन्न देशों की आबहवा पाई जाती है। कुछ स्थान बहुत ही गर्म हैं, कुछ सामान्य और कुछ ठंडे। दक्षिण में करमान, यज़्द, लारिस्तान आदि ज़िले बहुत गर्म हैं और कुछ अरब की तरह रेगिस्तान है। गर्मियों में बहुत ही अधिक गर्मी होती है। पहिले दो महीनों में आंधियां चलती रहती हैं। रेत के जंगल के जंगल उड़ते हैं। **आज़र बाय जान** और उसके आस पास के भाग **तबरेज़** आदि में ऐसा जाड़ा पड़ता है कि थर्मामीटर का पारा १४ अंश फ़ार्नहीट तक आजाता है। अक्तूबर में बर्फ़ बहुत ही अधिकता से पड़ने लगती है। जनवरी में यह दशा हो जाती है कि अभी

कटोरे में पानी डाला और अभी जम गया। अंगीठी के पास लिखने पढ़ने का काम न रखते हैं, तिस पर भी दवात क्षण क्षण पर जम जाती है" (मौलाना आज़ाद) मेह इतना कम बरसता है कि खेती का होना पहाड़ों के मेह और बर्फ़ के पिघलने पर निर्भर है। आठ बजे दिन को गर्मी १२३ अंश फ़ार्नहीट होती है।

३०८—**पैदावार**—कुल क्षेत्रफल के पांचवें भाग में खेती होती है। (नक़्शा देखो) कास्पियन सागर के किनारे पहाड़ों पर देवदार, चीड़ आदि के वृक्ष बहुतायत से होते हैं। जिस ज़िले में उर्मिया है वह अधिक उपजाऊ है। यहां प्रायः वही अनाज, फल, मेवे आदि पैदा होते हैं जो एशियाई कोचक में। शाम की तरह यहां भी पिस्ते के बाग लगाये जाते हैं। ख़रबूज़े और अंगूर दस बारह प्रकार के होते हैं। फूल और गुलाब यहां की ज़मीन में अधिक पैदा होता है। चूंकि चरागाहें बहुत हैं, इस लिये भेड़ बकरियों से ऊन अधिक मिलती है।

३०९—**क़नात** अर्थात् ज़मीन के नीचे की नहरें—सिंचाई के लिये पहाड़ों से ज़मीन के भीतर भीतर नहरें निकाली गई हैं। इन नहरों को क़नात या कारेज़ कहते हैं। इन में थोड़ी थोड़ी दूर पर कुएं बनाये जाते हैं जिन में सिंचाई के लिये पानी इकट्ठा रहता है। इन्हीं के द्वारा नहरों की

मिट्टी साफ़ की जाती है। उन का ढाल शीनेकी तरह होता है।

३१०–खानिज पदार्थ–फ़ीरोज़ा, गंधक और नमक अधिक निकलता है। नमक उर्मिया झील से निकलता है और खानों से भी। रांगा, तांबा और लोहा भी पाया जाता है। यहां चूने के पहाड़ों में कहीं कहीं ऐसे गड्ढे हैं जिन में एक प्रकार का तेल टपकता है जिसको **मोमियाई** कहते हैं। यह तेल बहुत से रोगों में काम आता है। इन गड्ढों की रखवाली सरकार करती है। **बूशहर** के पास मिट्टी का तेल भी निकाला जाता है। इस देश के और भागों में भी मिट्टी के तेल के सोते पाये जाते हैं, परन्तु कलों से तेल निकालने का रिवाज अभी नहीं हुआ है।

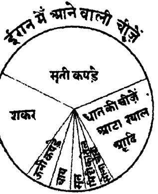
३११–पशु–यहां के घोड़े फुर्ती और तेज़ीमें तुर्की और अरबी घोड़ों से कम नहीं होते। यहां की बकरियां बड़ी बड़ी होतीहैं जिनके बालोंसे कश्मीरकी तरहके दुशाले बनाये जाते हैं।

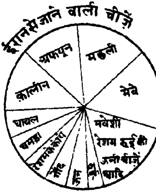
३१२–शिल्प और कारीगरी–ईरान के लोग अधिकतर खेती का काम करते हैं। यहां के किसान बड़े बुद्धिमान् और मेहनती होते हैं और समझ बूझकर खर्च करते हैं। जब वह दोपहर को धूप के कारण काम नहीं कर सकते, तो किसी पेड़ के नीचे इकट्ठे होकर **हाफ़िज़** और **फ़िरदौसी** की कविता गाया और सुना करते हैं। यहां के कारीगर क़ालीन, नमदे, दुशाले और ज़रदोज़ी का काम अच्छा

करते हैं। जंगली कुर्दों की स्त्रियां ऐसे अच्छे क़ालीन बुनती हैं कि मख़मल उनके सामने कुछ चीज़ नहीं। पीतल और तांबे के बेल बूंटे के बर्तन अच्छे बनते हैं।

३१३—**आने जाने के रास्ते**—जैसा पहिले लिखा गया है, केवल **क़ारूं नदी** में होकर माल कुछ दूर तक आ जा सकता है। ऊंचे ऊंचे पहाड़ों, गहरी गहरी घाटियों और रेगिस्तानों के कारण सुगमता से आना जाना नहीं हो सकता। दक्षिणी रेगिस्तान में पानी न मिलने के कारण राह चलना कठिन है। क़ाफ़िलों के सब रास्ते **तेहरान** में मिलते हैं। (एशिया का नक़्शा देखो) केवल तेहरान के पास थोड़ी दूर तक रेल जारी है। इस देश के कुछ भागों में तार भी लगा हुआ है।

३१४—**व्यौपार**—यहां से जो जो चीज़ें और देशों को जाती हैं और बाहर से जो जो चीज़ें यहां आती हैं, वह नीचे के वृत्तों में दिखाई गई हैं।





३१५-प्रसिद्ध नगर-तेहरान (Tehran) ईरान की राजधानी है। यह नगर अल्बुर्ज पहाड़ के नीचे बसा हुआ है। इस के सामने **दमावन्द** की चोटी का दृश्य बड़ा मनोहर है। यह व्यौपार की बड़ी मंडी है।



तहरान

इस्फ़हान (Ispahan) पुराने समय में यह एक बड़ा रमणीक नगर था। ईरान की पुरानी राजधानी यहीं थी। यह शहर जिन्दारोद की घाटी में बसा हुआ है। इसके चारों ओर बाग़ और हरे भरे खेत मीलों तक चले गये हैं। परकोटेकी दीवार के खंडहर २२ मील के घेरे में हैं। अब भी यह शिल्प और विद्या का घर है। यहां का गुलाब और बर्तन प्रसिद्ध हैं।

हमदान (Hamadan) बहुत पुराना शहर है । यहां प्राचीन समय के सिक्के बहुधा पाये जाते हैं । प्रसिद्ध हकीम बूअली सीना की क़ब्र भी यहीं है ।

तबरेज़ (Tebriz) व्यौपार के विचार से अव्वल नम्बर का शहर है । यहां बहुत से बाग़ हैं । महल और मसाजिदें भी बहुत सी हैं । भूकम्प से इस शहर को कई बार हानि पहुंच चुकी है । शम्स तबरेज़ यहां के प्रसिद्ध कवि हुये हैं ।

मशहद (Meshed) ख़ुरासान के सूबे की बड़ी मंडी है और शिया मुसलमानों का तीर्थ स्थान है । यहां हज़ारों मुसलमान यात्रा के लिये जाते हैं, क्योंकि यहां उन के एक इमाम की समाधि है ।

तूस (Tus) ईरान के प्रसिद्ध कवि फ़िरदौसी की जन्मभूमि है । फ़ारसी की मशहूर किताब शाहनामा इसी की लिखी हुई है, जिसमें ईरान के बादशाहों का हाल है ।

यज़्द (Yezd) में ईरान के असली बाशिन्दे जो अग्नि की पूजा करते हैं मौजूद हैं । हिन्दुस्तान के पार्सियों

की तरह उनके आतिशखानों (अग्निकुंडों) में बराबर आग जला करती है।

करमान (Kerman) में दुशाले ऐसे अच्छे बनते हैं, जैसे कश्मीर में।

शीराज़ (Shiraz) गुलाब, शराब और बुलबुलों से तो प्रसिद्ध है ही, परन्तु फ़ार्सी के सर्वप्रिय कवि **सादी** और **हाफ़िज़** की जन्मभूमि होने के कारण और भी प्रसिद्ध है। **सादी साहब** ईरान के **तुलसीदास** थे।



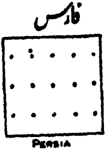
शीराज़ شیراز

बूशहर–(Bushire) दक्षिणी ईरान का बड़ा

नोट–जिस सूबे में शीराज़ है उसका नाम भी फ़ारिस है।

व्यापारिक बन्दरगाह है। जिस ओर आँख उठती है खजूर ही खजूर दिखाई देते हैं। यूरप के बड़े बड़े राज्यों के राजदूत भी यहीं रहते हैं। यहां से थोड़ी दूर पर **मुहम्मरा** के इलाके में अंगरेजी कम्पनियां मिट्टी के तेल निकालने का ठेका लेती हैं। **सीस्तान** के पास ईरान के मशहूर पहलवान **रुस्तम** की जन्मभूमि थी, जिसका हाल शाहनामे में है।

३१६—**आबादी**—इस देश की आबादी भी क्षेत्रफल के विचार से कम है।



ईरान की आबादी ... प्रति वर्गमील।

३१७—**बाशिन्दे**—पूरी आबादी का चौथाई भाग ईरानी हैं, बाकी में यहूदी, तुर्क, कुर्द, अर्मन, तुर्कमान आदि हैं। जैसा कि **तूरान** के बयान में लिखा गया है, तुर्क खुरासान

के लोगों को पकड़ कर गुलाम की तरह बेच डालते थे। तुर्क और ईरानी स्त्रियों की सन्तान को तुर्कमान कहते हैं।

३१८—स्वभाव—ईरानके लोग बड़े सुशील और मिलनसार होते हैं। अतिथि का बड़ा सत्कार करते हैं। बाग़ों, सोतों और प्राकृतिक दृश्यों के बड़े शौक़ीन होते हैं। इनका रहन सहन और पोशाक हिन्दुस्तान के मुसलमानों की तरह है।

ईरानी खाना खारहे हैं।



तुर्कलोग पशुओं के पालने और लड़ाई के काम में बड़े चतुर होते हैं। यह बहुत ही कम बोलते हैं। जब किसी जगह इकट्ठे होते हैं, तो एक दूसरे का मुँह देखा करते हैं और

बेकाम बात नहीं करते । ईरानी लोग बड़े बातूनी और गुण-वान् होते हैं ।

३१९–शिक्षा–यहां के लोगों को विद्या से बड़ा प्रेम है, परन्तु पुराने ढंग की शिक्षा को पसन्द करते हैं। अब कुछ शिक्षा के नये नियमों का प्रचार हो रहा है । देश भाषा अधिकतर फ़ार्सी है, परन्तु तुर्की और अर्बी भी बोली जाती हैं।

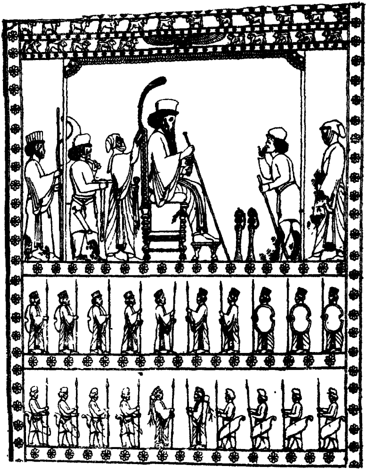
३२०–धर्म–पुराने समय में यहां के लोग अग्नि और सूर्य्य की पूजा करते थे । (नीचे के चित्र में जलती हुई आग देखो) उनकी रीतियां बहुधा हिन्दुओंसे मिलती जुलती थीं ।

प्राचीन सिक्का (ईरान) ایران کا قدیم سکہ



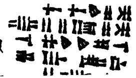
अरब के लोगों से हार जाने पर यह लोग मुसलमान हो गये ।

तख़्त जमशेद تخت جمشید



قدیم زمانے کے فارسی حروف

प्राचीन समय के फ़ारसी अक्षर



३२१–शीराज से थोड़ी दूरपर पुरानी राजधानी **इस्त-ख़र** (Persepolis) के खंडहरों में एक मकान अब भी मौजूद है, जिस को यहां के लोग **जमशेदका तख़्त** या * **चहल-मीनार** कहते हैं। यह मीनार एक ऊंचे चबूतरे पर बने हुये हैं जिन पर चढ़ने के लिये चारसौ से कम सीढ़ियां नहीं हैं। सीढ़ियों पर भी चित्र बने हुये हैं। संगमरमर की सफ़ाई, खम्भों की उंचाई और चित्रों और मूर्तियों के बेल बूंटों को देखकर आदमी दंग रहजाते हैं। (चित्र देखो) इस महल पर जो पुराने पार्सी अक्षर खुदे हुये हैं, वह हिन्दी अक्षरों से मिलते जुलते हैं। चित्रों से उस समय की पोशाक, हथियार, सवारी आदि का पता लगता है। इस शहर को महाबली **सिकन्दर** ने शराब के नशे में जलवा दिया था। बहुतसे पहाड़ों पर पुराने बादशाहों की शिकारगाहों, दरबारों, सवारी आदि के चित्र खुदे हुये हैं।

३२२–**राज्यप्रबन्ध**–बहुत दिनों से यहां के बादशाह स्वतंत्र राज्य करते थे। अब थोड़े दिनों से यहां भी पार्लमिन्ट है जो राज्यप्रबन्ध में बादशाह को अपनी राय देती है। कुल देश सूबों में बटा हुआ है। बड़े बड़े सूबों के नाम नक़्शे में लिखे गये हैं। हर सूबे के अफ़सर को **नाज़िम** कहते हैं। उत्तरीय भाग रूस की और दक्षिणी भाग अंगरेज़ों

* ४० मीनारों का मकान।

की निगरानी में है। कास्पियन सागर रूसियों के अधिकार में है और ईरान की खाड़ी हिन्दुस्तान की सरकार के।

ईरान और हिन्दुस्तान का ऐतिहासिक सम्बन्ध

३२३—ईश्वर की माया बड़ी विचित्र है। एक समय वह था जब ईरान के एक बादशाह ने अकबर के बाप **हुमायूं** को बड़े आदर से अपनी शरण में रक्खा और उसे फ़ौज देकर हिन्दुस्तान में मुग़ल राज्य की उखड़ी हुई जड़ को फिर से जमाया। फिर इसी मुल्क के बादशाह **नादिरशाह** ने, जो मामूली सिपाही के दर्जे से बढ़कर बादशाह बन बैठा था, मुग़ल राज्य की जमी हुई जड़ को उखाड़ दिया। उसने दिल्ली पर चढ़ाई की और उसकी सेना ने लोगों को मार कर लाशों के ढेर गली कूचों में लगा दिये।

प्रश्न

१—ईरान और फ़ारिस के नाम पड़ने का कारण और विस्तार बताओ।

२—ईरान और शाम की बनावट का मुक़ाबिला करो।

३—फ़ारिस के मुख्य पहाड़ी सिलसिले कौनसे हैं? हर सिलसिले का हाल लिखो।

४—ईरान में नदियां कम और छोटी हैं। इसका क्या कारण है? कौनसी नदियां समुद्र में गिरती हैं।

५—फ़ारिस की आबहवा का चीन की आबहवा से मुक़ाबिला करो।

६—फ़ारिस की बनस्पति संबंधी पैदावार क्या हैं? मेमि-याई किस तरह मिलती है?

७—फ़ारिस में खेत किस तरह सींचे जाते हैं?

८—फ़ारिस में आने जाने के रास्ते क्या क्या हैं? उस के उत्तर में ही क़ाफ़िलों के रास्ते क्यों अधिक हैं?

९—फ़ारिस में किस जाति के लोग बसे हुये हैं? उसका पश्चिमी भाग क्यों अधिक आबाद है?

१०—ईरानियों और तुर्कों के स्वभाव और चाल चलन का मुक़ाबिला करो।

११—फ़ारिस की मुख्य कारीगरी क्या है? यहां के व्यौ-पार की क्या दशा है?

१२—फ़ारिस और एशियाई कोचक के किनारों और बन्दरगाहों का मुक़ाबिला करो।

१३—फ़ारिस का नक़्शा खींचो। उसमें नीचे के स्थान दिखाओ और अगर उनमें कोई प्रसिद्ध बात हो, तो उसे भी बताओः—

१४—सफ़ेद रौद, कारूं, जरगोश, अबुलफ़र्ज़, उर्मिया, मशहद, शीराज़, तेहरान, बूशहर, बग़दाद से मशहद तक क़ाफ़िलों के रास्ते, हुर्मुज़, सीस्तान, अस्तुर्बा।

१५—नीचे के स्थानों का संक्षेप हाल लिखो:—

करमान, यज़्द, उस्तख़र, तबरेज़, स्फ़हान, लिंगाह, दमावन्द, हमदान, तूस, बन्दर अब्बास ।

१६—ईरानियों का पुराना धर्म क्या था ? उन लोगों ने उस धर्म को क्यों छोड़ा ?

१७—साबित करो कि बहुत ही पुराने समय में ईरानियों और हिन्दुओं की रहन सहन और धर्म मिलते जुलते थे ।

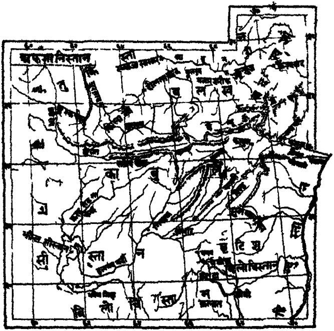
१८-ईरान में बहुधा अकाल पड़ा करते हैं । इसका क्या कारण है ?

१९—आज कल ईरान का राज्यप्रबन्ध क्या है ? अंगरेज़ों और रूसियों का सम्बन्ध कहां कहां है और क्यों ?

२०—सादी, हाफ़िज़, बूअली सीना, रुस्तम, फ़िर्दौसी कहां कहां पैदा हुये थे ?

अफ़ग़ानिस्तान (Afghanistan)

३२४—इस देश का नाम अफ़ग़ानिस्तान पड़ने के कई कारण बताये जाते हैं । उनमें से एक यह है कि **शाम** के बादशाह **तालूत** के पोते ने जिसका नाम **अफ़ग़ान** था इस देश को बसाया, परन्तु इतिहास लिखनेवाले इसको नहीं मानते क्योंकि यह नाम ईरानी मुसलमानों का रक्खा हुआ बताते हैं । उनकी राय में बहुत ही पुराने समय में यहां हिन्दू बसते थे, जिसके प्रमाण यह हैं:—



(अ) क़न्धार (Kandbar) का नाम संस्कृत में गन्धार है। कौरवों की मा रानी गंधारी यहीं की थी।

(ब) हिन्दूकुश के इलाक़े बामियान में अब भी मन्दिरों और मूर्तियों के चिह्न पाये जाते हैं। दो मूर्तियां एक १८० फ़ीट ऊंची और दूसरी १७० फ़ीट ऊंची पहाड़ों में कटी हुई मौजूद हैं। पुराने सिक्के जो इन खंडहरों में कभी कभी मिलते हैं उन पर बैल और जनेऊ पहिने हुये आदमियों के चित्र बने हुये हैं। (अफ़ग़ानिस्तान का इतिहास)

३२५–**विस्तार**–इस देश की शक्ल चौकोर है। इस के उत्तर में जैहूँ नदी और तुर्किस्तान, दक्षिण में बिलोचिस्तान, पूर्व में हिन्दुस्तान और पश्चिम में ईरान है। इसका क्षेत्रफल संयुक्त प्रदेश से दुगुना है।

३२६–**बनावट**–(अ) इस देश में सूखे और बिना वृक्षों के पहाड़, लम्बे और तंग घाटे और ऊंची ऊंची घाटियां बहुत हैं। यही कारण है कि मैदान पांचवें भाग से भी कम है। इसके दक्षिण पश्चिम में रेगिस्तान है जिसका सिलसिला सीस्तान होता हुआ ईरान तक चला गया है। हिन्दूकुश * की पश्चिमी श्रेणियां कोहबाबा, (Koh-e-Baba) सियाह कोह, (Sivah Koh) सफ़ेद कोह (Safed Koh) के नाम

* वास्तव में इसका नाम हिन्दूकोह था। मैदान के हिन्दुस्तानी लोग इसकी कड़ी चढ़ाई पर मर जाते थे, इस लिये इसका नाम हिन्दूकुश पड़ा।

से प्रसिद्ध हैं। हिन्दूकुश की कुछ चोटियां तीन मील से अधिक ऊंची हैं जो बर्फ़ से ढकी रहती हैं। पूर्व में **सुलेमान पर्वत** के सिलसिले की सब से ऊंची चोटी **तख़्ते सुलेमान** है जो २½ मील के लगभग ऊंची है।

(ब) नदियों के बेसिनों के विचार से इसके चार भाग हैं:—

(१) उत्तरीय भाग का पानी **जेहूं** और **अराल** में (२) पूर्वी भाग का पानी **काबुल** नदी (Kabul) में होकर **सिंध** में (३) बीच के देश का पानी **हरी रोद**(Harirod) नदी में और (४) पश्चिमी भाग का **हलमन्द**(Helmand) में गिरता है। सीस्तान झील के सिवाय एक झील और भी है। यह ग़ज़नी के पास है और उसका घेरा **मानसरोवर** झील के बराबर है। इसका पानी इतना खारी और कड़ुवा है कि जो मछलियां **ग़ज़नी की नदी** से बहती हुई इस में आजाती हैं वह तुरन्त मरजाती हैं।

३२७—**आबहवा**—यहां की आबहवा ईरान की तरह है। बाबर ने अब से ४०० वर्ष पहिले अपनी किताब " तुज़्के बाबरी " में इस तरह लिखा है:—

" काबुल के आगे एक दिन चलकर वह इलाका आता है जहां बर्फ़ कभी पड़ती ही नहीं और दो घंटे चलकर उस जगह पर पहुँचते हैं जहां बर्फ़ कभी पिघलती ही नहीं। ग-

मियों के दिनों में सारे देश में गर्मी अधिक पड़ती है, विशेष कर दक्षिणी भागों में। सिन्ध के पश्चिम में गर्मी अधिक होती है। आँधियों और तूफ़ानों से गर्मी इतनी बढ़ जाती है कि वह सही नहीं जा सकती। कन्धार के इलाके में बर्फ़ बहुत कम पड़ती है। हिरात की आबहवा सामान्य है। जाड़ों में मेह बहुत कम बरसता है और गर्मियों में तो न होने के बराबर।

३२८—**पैदावार**—ऐसी घाटियों में जहां सिंचाई के लिये पानी मिल जाता है या क़नात और कारेज़ों के द्वारा सिंचाई हो सकती है, वहां मेवे और अनाज (गेहूँ, बाजरा, मक्का आदि) खूब पैदा होते हैं। यहां भी प्रायः वही मेवे होते हैं जो फ़ारिस में। मजीठ और हींग बहुतायत से होती है। खेती कम होने के कारण भेड़ बकरियां अधिक पाली जाती हैं।

३२९—**खानिज पदार्थ**—उत्तर के पहाड़ी इलाकों में सीसा और गंधक निकलता है। दक्षिण-पश्चिम में शोरा पाया जाता है। **बदख़्शां** (Badakhshan) के सूबे में लाल और नीलम निकलते हैं।

३३०—**शिल्प और कारीगरी**—हिरात के क़ालीन अच्छे होते हैं। पोस्तीन बहुतायत से बनते हैं और दूसरे देशों को जाते हैं। क़न्धार की मावा और मूंगे हिन्दुस्तान में आते हैं।

३३१—**व्यौपार के रास्ते**—मध्य एशिया या ईरान से

हिन्दुस्तान आने के लिये अफ़ग़ानिस्तान नाका या चौकी का काम देता है। प्राचीन काल में ख़ुश्की की राह से जिन लोगों ने (आर्य्य, सिकन्दर, चंगेज़ख़ां आदि) हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की वह सब इसी देश में होकर आये थे। इसी कारण हिन्दुस्तान को इस देश पर अपना अधिकार रखना आवश्यक है। आजकल यह हमारी सरकार के आधीन है और पहिले देहली राज्य का सूबा था। **हिरात** (Herat) मध्य एशिया, एशियाई पंजाब और हिन्दुस्तान का चौराहा है, क्योंकि यहीं से एक रास्ता **ईरान** को, दूसरा **तूरान** को, तीसरा काबुल को और चौथा क़न्धार होता हुआ हिन्दुस्तान को जाता है। क़ंधार से एक रास्ता ईरान को और दूसरा **ग़ज़नी** (Ghazni) होता हुआ काबुल को जाता है। काबुल से एक रास्ता **ख़ैबर** के घाटे में होता हुआ आता है और दूसरा **बलख़** (Balkh) होता हुआ तिब्बत को चला जाता है। (एशिया के नक़्शे में इन रास्तों को देखो)

ख़ैबर का घाटा (Khyber Pass)

३३२—यों तो अफ़ग़ानिस्तान से हिन्दुस्तान आने के लिये पहाड़ी नालों में होकर बहुत से घाटे हैं, परन्तु अधिक प्र-

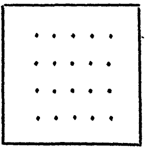
---

नोट—हिरात और क़न्धार के बीच का रास्ता सुगम है, जिस में फ़रहरोद नदी, गिरश्क, और फ़रह की बस्तियां हैं।

सिद्ध और सुगम खैबर का घाटा है। यही कारण है कि **पेशावर** में जिसके पास यह घाटा है अंगरेजी फ़ौज अधिक रहती है। जो क़ाफ़िले हिन्दुस्तानसे गजनी जाते हैं, वह सीधे गोमाल होते हुये जाते हैं जो गोमाल नदी की घाटी में है।

३३३—**व्यौपार**—अफ़ग़ानी व्यौपारी दुस्से, पोस्तीन, घोड़े, फल, मेवे, हींग, मजीठ आदि लाकर हिन्दुस्तान में बेचते हुये रंगून तक चले जाते हैं। हिन्दुस्तान से शक्कर, चाय, और विलायती सूती, ऊनी और रेशमी कपड़े अफ़ग़ानिस्तान को ले जाते हैं। यह बंजारे जो **पाविन्द** कहलाते हैं ख़ुरासान और बुख़ारा तक भी जाते हैं।

३३४—**आबादी**—आबादीका औसत प्रतिवर्गमील२०है।





३३५—**बाशिन्दे**—कुल देश में दो प्रकार के लोग रहते हैं। एक वह जो घर बनाकर बसते हैं, दूसरे घर न बनाकर रहनेवाले। अफ़ग़ानों के कई भेद हैं जैसे **दुर्रानी, अफ़्रीदी, वज़ीरी, यूसफ़ज़ई** आदि। कुछ **मुग़ल, तातारी** और **तुर्क**

भी हैं। इसके सिवाय कुछ हिन्दू भी बसे हुये हैं जो हिन्दकी कहलाते हैं। यह हिन्दू बड़े बड़े नगरों में दुकानदारी, महाजनी और साहूकारी करते हैं। व्यौपार इन्हीं के हाथ में है। इनसे जज़िया * अधिक लिया जाता है।

क़ाफ़िरिस्तान के बाशिन्दे



* वह कर जो मुसलमानों के सिवाय और लोगों से लिया जाता है।

३३६–काफ़िरिस्तान में अब काफ़िर नहीं हैं। इनको मुसलमान न होने के कारण अफ़ग़ानी काफ़िर कहते थे। बहुत दिनों तक यह लोग अपनी शूरवीरता से स्वतंत्र बने रहे। जब यह देश अमीर साहब के अधिकार में आया, तो अधिकतर लोग मुसलमान होगये। जो काफ़िर चितराल की सरहद पर हमारी सरकार की शरण में आकर बस गये हैं, वह अपने असली धर्म पर हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मुसलमानी धर्म फैलने से पहिले यही लोग कुल अफ़ग़ानिस्तान में बसे हुये थे जो भाग कर हिन्दूकुश के कठिन और दुर्गम * स्थानों पर बस गये।

३३७–स्वभाव–जंगली बद्दुओं की तरह अफ़ग़ानी भी अतिथि का सत्कार करते हैं, परन्तु परदेशी के कपड़े तक उतारने से नहीं हिचकते। लूट खसोट से नहीं चूकते। लड़ाई, दंगा और मौत से भी नहीं डरते। स्वतंत्रता अधिक चाहते हैं। अमीर की राजनीति को कम मानते हैं।

३३८–धर्म्म–अफ़ग़ानी सुन्नी मुसलमान हैं।

३३९–भाषा–अफ़ग़ानियों की भाषा पश्तो है जिस में संस्कृत, फ़ार्सी और अर्बी के शब्द अधिक मिले हुये हैं। यह भाषा केवल बोली ही जाती है। लिखने के लिये अर्बी

* ऐसे स्थान जहां पहुँचना कठिन हो।

और फ़ारसी अक्षर काम में लाये जाते हैं। शहरों और क़स्बों के लोग फ़ारसी बोलते हैं।

३४०-**नगर-काबुल** अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी है और काबुल नदी के किनारे पहाड़ के नीचे बसा हुआ है। यहां की धरती चौरस और उपजाऊ है। व्योपार की बड़ी मंडी है। थोड़े दिनों से हथियार और चमड़े की चीज़ें बनाने के कारख़ाने खोले गये हैं।

जलालाबाद (Jalalabad) एक उपजाऊ घाटी में पेशावर और काबुल के बीच में है।

ग़ज़नी महमूद ग़ज़नवी की राजधानी थी। यह वही **महमूद ग़ज़नवी** है जिसने हिन्दुस्तान पर कई बार चढ़ाई की थी। पुराना नगर अब बिल्कुल उजाड़ होगया है। उसमें महमूद की क़ब्र के दो मीनार बाक़ी हैं। नई आबादी में एक छोटासा क़िला है।

क़न्धार बहुत ही पुराना शहर है। क़ाफ़िलों के रास्ते पर होने के कारण अब भी प्रसिद्ध स्थान है। यह हिन्दुस्तान में आने जाने का दूसरा फाटक है।

हिरात का सूबा हरीरोदके कारण अधिक उपजाऊ है। क़ाफ़िलों का चौराहा और हिन्दुस्तान का पहिला फाटक है। **बसरा** की तरह यहां के बाज़ार भी पटेहुये हैं। यहां के मेवे अफ़ग़ानिस्तान और अन्य भागों से अच्छे होते हैं।

ग़ोर हिरात के पास उत्तर पश्चिम में सुलतान **शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ोरी** की राजधानी थी, जिसने महमूद ग़ज़नवी के वंश का नाश करके हिन्दुस्तान जीता और दिल्ली को मुसलमानों की राजधानी बनाया।

अफ़ग़ानी तुर्किस्तान के शहर

३४१–हिन्दूकुश और जेंहूं नदी के बीच का देश **अफ़-ग़ानी तुर्किस्तान** कहलाता है। यह भाग पहिले पश्चिमी तुर्किस्तान में शामिल था, परन्तु हमारी सरकार और रूस की राय से यह देश अमीर काबुल को मिल गया। यहां के बा-शिन्दे अधिकतर **उज़बक तुर्क** हैं।

बलख़ जो प्राचीन काल में बहुत ही बड़ा शहर था, अब एक गांव रह गया है, परन्तु इसके खंडहर कई मील तक फैले हुये हैं। पुराने समय में इसको बाख़्तर (Bactria) कहते थे। आतिशपरस्तों (अग्निकी पूजा करनेवालों) के आचार्य्य **ज़रतश्त** यहीं पैदा हुये थे।

बदख़्शां भी इसी सूबे में शामिल है।

३४२–**राज्यप्रबन्ध**–अमीर काबुल इस देश पर राज्य करते हैं, परन्तु अंगरेजी सरकार के आधीन हैं। इसी का-रण एक **रेज़ीडन्ट** काबुल में रहता है। अमीर के राज्य का सिक्का ऐसा नहीं जमा है जैसा हमारी सरकार का। हर एक

दल अपने आपको स्वतंत्र समझता है और केवल अपने सरदार का कहना मानता है, परन्तु मालगुज़ारी और महसूल अमीर को दे देता है। कुछ दल (जातियां) ऐसे भी हैं जो बिना लड़े मालगुज़ारी भी नहीं देते। माल के महकमे में मुहर्रिर चुंगी और पटवारी से लेकर दीवान तक के दर्जे बहुधा हिन्दुओं के हाथ में हैं।

३४३–**इतिहास**–हिन्दुओं के बाद यह देश बारी बारी से ईरानियों, यूनानियों, मुग़लों और अफ़ग़ानों के अधिकार में रहा। औरंगज़ेब के समय तक दिल्ली का सूबा था।

प्रश्न

१–अफ़ग़ानिस्तान का यह नाम क्यों पड़ा? उसकी सीमा और विस्तार बताओ।

२–अफ़ग़ानिस्तान की बनावट और आब हवा वर्णन करो।

३–अफ़ग़ानिस्तान के प्रसिद्ध पहाड़ और नदियां कौनसी हैं? इस में कितने बेसिन हैं और किस प्रकार के?

४–अफ़ग़ानिस्तान की पैदावार और व्यौपारिक चीज़ें कौन कौनसी हैं?

५–अफ़ग़ानिस्तान का दक्षिणी भाग उत्तरीय भाग की अपेक्षा रेगिस्तानी क्यों है?

६—अफ़ग़ानिस्तान का नक़्शा खींचो और उसमें वह रास्ते दिखाओ जो और देशों को जाते हैं।

७—अफ़ग़ानिस्तान में किन किन जातियों के लोग बसे हुये हैं ? यहां का राज्यप्रबन्ध कैसा है ?

८—नीचे के स्थान कहां हैं ? उनका संक्षेप हाल लिखोः— काफ़िरिस्तान, हिरात, ग़ज़नी, हलमन्द, जलालाबाद, बलख़, फ़रह, हिन्दूकुश, गोमाल, तख़्ते सुलेमान, बदख़्शां, हरीरौद, काबुल, गिरश्क, क़न्धार।

६—साबित करो कि पुराने ज़माने में अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दुओं की आबादी थी।

१०—अफ़ग़ानिस्तान और एशियाई कोचक की बनावट, आब हवा और पैदावार का मुक़ाबिला करो।

११—हिन्दुस्तान का अफ़ग़ानिस्तान से मुख्य संबन्ध क्या है?

१२—अफ़ग़ानिस्तान के प्रसिद्ध घाटे कौन से हैं ? उन से भूगोल और इतिहास का संबन्ध किस तरह साबित होताहै ?

१३—अफ़ग़ानी तुर्किस्तान से क्या समझते हो ? वह अमीर काबुल को कैसे मिला ?

१४—अफ़ग़ानिस्तान के प्रसिद्ध सूबे और नगर बताओ।

१५—पुराने ज़माने में बाख़्तर का विस्तार क्या था ?

१६—अफ़ग़ानिस्तान के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों का संक्षेप हाल लिखो।

बिलोचिस्तान (Baluchistan)

३४४–**विस्तार**–इसके उत्तर में अफ़गानिस्तान, दक्षिण में अरब सागर, पूर्व में हिन्दुस्तान, और पश्चिम में ईरान है। चूंकि इस में बिलोच अधिक बसे हुये हैं, इसलिये इस देश को बिलोचिस्तान कहते हैं। इसका क्षेत्र फल संयुक्त प्रदेश के बराबर है। इसके किनारे पर कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है।

३४५–**बनावट**–एक यात्री ने इस देश की बनावट इस तरह लिखी है:–

"चटियल से चटियल और बंजर देश जिसका मनुष्य ध्यान कर सकता है, उन में बिलोचिस्तान का नम्बर सब से बढ़कर है। यह देश बड़ी बड़ी शिलाओं और पत्थरों के टुकड़ों से भरा पड़ा है, जो इसके पहाड़ों के टूटने फूटने से इकट्ठे होगये हैं। उन नख़्लिस्तानों के सिवाय जहां खजूर के पेड़ पाये जाते हैं, बाक़ी सब ऊजड़ है। नदियों को छोड़ते ही रेगिस्तान मिल जाता है, चाहे वह रेतीला हो चाहे पथरीला। वनस्पति का उसमें नाम तक नहीं होता"।

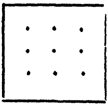
बिलोचियों की यह कहावत कि "सब मुल्कों को बनाने के बाद जो मलवा बच रहा था, उससे ईश्वर ने बिलोचिस्तान को बनाया है" वास्तव में ठीक है। इसके किनारे

सैकड़ों मील चलने के बाद जहाज चलानेवालों को कहीं कहीं कोई वृक्ष खुश्की का पता देता है। सिंध के पास उत्तर पूर्व की घाटियों में जहां सिंचाई के लिये पानी मिलजाता है कुछ अनाज और फल पैदा होजाते हैं। अरब की तरह यहां भी लू चलती है।

३४६—**आबहवा**—गर्मियों में यहां अफ़गानिस्तान से भी अधिक गर्मी और जाड़ों में अधिक सर्दी पड़ती है। दिसम्बर और जनवरी के महीनों में घाटियों में भी बर्फ़ गिरती है। क्वीटा की सर्दी और बर्फ़ से हिन्दुस्तानी सिपाही तंग आजाते हैं।

३४७—**व्यौपार**—कुछ ऊन, खाल, तम्बाकू हिन्दुस्तान में आता है।

३४८—**आबादी**—आबादी का औसत प्रति वर्ग मील ९ है।



३४९—**बाशिन्दे**—बाशिन्दे अधिकतर ऐसे हैं जो घर बना कर नहीं रहते। भेड़ बकरियां आदि पालकर अपना निर्वाह

करते हैं। यहां दो मुख्य जातियां हैं, एक **बिलोची** और दूसरे **बराहू** जो आपस में लड़ाई झगड़ा और सरहद पर लूट मार करते रहते हैं।



“ बिलूची ” को “ बिलोची ” पढ़ो

३५०—**स्वभाव**—बिलोची बहुत मेहनती होते हैं। भूख प्यास बहुत सह सकते हैं, यहां तक कि रेगिस्तान में ऊंट

की तरह बिना पानी के चले जाते हैं। रात दिन में एक बार पानी पी लेना काफ़ी है। चलने में तेज़ घोड़ों को भी मात करते हैं। घोड़ों को बड़े चाव से पालते और उन पर सवारी अच्छी तरह करते हैं। बैलों पर भी सवार होते हैं। दोनों जातियों में कोई लिखने की भाषा नहीं है।

३५१–राज्यप्रबन्ध के विचार से इस देश के दो भाग हैं। एक भाग में हमारी सरकार का राज्य है, और दूसरे में यहां के **खान** का जो हिन्दुस्तान की सरकार के आधीन है। **क़िलात** (Kalat संस्कृत कलूत) राजधानी है, जिसकी आबादी हिन्दुस्तान के एक बड़े क़स्बे से अधिक नहीं है।

ब्रिटिश बिलोचिस्तान *

३५२–अंगरेज़ी इलाक़े की राजधानी **क्वेटा** (Quetta) है, जो फ़ौज की छावनी है। हिन्दुस्तान की रक्षा के लिये सिंध से रेल की एक शाख यहां तक आई है और दूसरी **सीबी** (Sibi) और **पेशीन** (Peshin) होती हुई **चमन** (Chaman) तक चली गई है। इस रेल के बनाने का कारण यह है कि **हिरात** और **क़न्धार** का रास्ता **बोलान** के घाटे में होता हुआ सिंध तक पहुंच जाता है। **बोलान पास बोलान नदी** की घाटी में **शिकारपुर** से बिलोचिस्तान जाते हुये पड़ता है।

* बलोचिस्तान भी कहते हैं।

प्रश्न

१–बिलोचिस्तान का विस्तार और बनावट बताओ।

२–बिलोचिस्तान अफ़ग़ानिस्तान से गर्मियों में अधिक गर्म और जाड़ों में अधिक सर्द क्यों रहता है ?

३–बिलोचिस्तान का अधिक भाग बंजर और रेगिस्तान क्यों है ?

४–बिलोचिस्तान की मुख्य जातियां कौन सी हैं ? उनके रहन सहन की रीति क्या है ?

५–राज्यप्रबन्ध के विचार से बिलोचिस्तान के कितने भाग हैं ?

६–हिन्दुस्तान की रेलों का सिल्सिला चमन से क्यों मिलाया गया है ?

७–नीचे के स्थान कहां हैं ? उनका संक्षेप हाल लिखोः–
क़िलात, सीबी, पेशीन, बोलान, क्वीटा।

पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह

(The Malay or East Indian Archipelago
or East Indies)

३५३–कोलम्बस स्पेन से सन् १४९२ ई० में हिन्दुस्तान का पता लगाने चला था। जब वह अमेरिका के दक्षिण-पूर्व के द्वीपों में पहुंचा, तो उसने उनको हिन्दुस्तान के द्वीप

समझ कर उनका नाम **"हिन्दुस्तान का द्वीपसमूह"** (Indies) रख दिया। जब पुर्तगाल वालों ने एशिया के द्वीपसमूह को मालूम किया, तो यह बात प्रकट हुई कि कोलम्बस ने अमेरिका के द्वीपसमूह का जो नाम रक्खा है वह ठीक नहीं। इस ग़लती को दूर करने के लिये एशिया के दक्षिणी पूर्वी द्वीपों का नाम **पूर्वी हिन्द का द्वीपसमूह** (East Indies) और अमेरिका के दक्षिणी पूर्वी द्वीपों का नाम **पश्चिमी हिन्द का द्वीपसमूह** (West Indies) रक्खा गया। पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह में चूंकि मल्य जाति के लोग अधिक बसते हैं, इस लिये उन द्वीपों को **मल्य (मलाया) द्वीप** भी कहते हैं।

३५४–**विस्तार**–इन द्वीपों की बनावट को देखकर बुद्धि चकित हो जाती है। यह द्वीप एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच में भूमध्य रेखा के दोनों ओर ९५° की देशान्तर रेखा से न्यूगिनी द्वीप के पश्चिमी किनारे तक इस तरह फैले हुये हैं, जैसे आकाश में तारे। चौड़ाई में २०° की उत्तरीय अक्षांश रेखा से १०° की दक्षिणी अक्षांश रेखा तक फैले हुये हैं। इन द्वीपों में बड़े द्वीप कम हैं और छोटे बहुत। कुल छोटे बड़े द्वीपों की संख्या १० हज़ार से भी अधिक है। समुद्र के धरातल पर यह इस तरह मालूम देते हैं, जैसे

तालाब में कमल के फूल। यह द्वीप एशिया और आस्ट्रेलिया के बीच में एक प्रकार का डमरूमध्य बनाते हैं।

एशिया और आस्ट्रेलिया के महाद्वीपी द्वीप

३५५—इन द्वीपों में एक अनोखी बात यह है कि जो द्वीप आस्ट्रेलिया के पास हैं उनमें आस्ट्रेलिया के से और जो एशिया के पास हैं उनमें एशिया के से जंगली जानवर और अपने आप उगनेवाले वृक्ष पाये जाते हैं।

आस्ट्रेलियाई द्वीप सिलीबीज़ का जंगल।

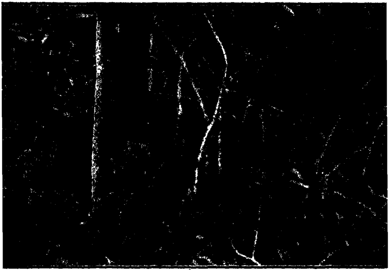


آسٹریلیائی جزیرہ سلیبیز کا جنگل



(आस्ट्रेलिया का गोंद का पेड़) पहिले चित्र के पेड़ इस पेड़ से मिलते जुलते हैं।

एशियाई द्वीप का जंगल (बांस के पेड़ बहुत हैं ।



ایشیائی جزیرے کا جنگل (بانس زیادہ ہیں)

बाली (Bali) और **लम्बोक** (Lombok) द्वीपों के बीच समुद्र बहुत गहरा है । इस गहराई का सिलसिला **मकासर** (Macassar) के मुहाने में होता हुआ फ़िलीपाइन द्वीप (Philippines) के दक्षिण तक चला गया है । **लम्बोक** में तो आस्ट्रेलिया के से पशु और वृक्ष होते हैं और **बाली** में एशिया के से, यद्यपि दोनों द्वीपों में कुल १३ मील

का अन्तर है । इसी तरह **मलक्काज़** (Moluccas) के जंगली जानवर और वनस्पति **बोर्नियो** और **फ़िली-पाइन** के जंगली जानवरों और वनस्पतियों से भिन्न हैं। (आगे पशु और वनस्पति के चित्रों को देखो) इस तंग और गहरे समुद्र की सीमा को **वालस लाइन** (Wallace Line) कहते हैं, क्योंकि सब से पहिले **वालस** साहब ने इसका पता लगाया था । इस तंग मुहाने के पूर्वी द्वीपों की वनस्पतियां और पशु पश्चिमी द्वीपों की वनस्पतियों और पशुओं से भिन्न हैं । नक़्शे में यह लाइन बिन्दुओं से प्रकट की गई है । भूगोल के विद्वानों की यह राय है कि इस लाइन के पश्चिमी द्वीप **फ़िलीपाइन बोर्नियो** (Borneo) **जावा** (Java) आदि एशिया से मिले हुये थे और पूर्वी द्वीप आस्ट्रेलिया से । इनके बीच की भूमि के दबजाने से यह द्वीप अलग अलग होगये । सब से पहिले फ़िलीपाइन के द्वीप एशिया से अलग हुये, इसके बाद जावा, फिर **सुमात्रा** (Sumatra) और बोर्नियो और सब से पीछे सिंहापुर के दक्षिणी द्वीप ।

पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह के भाग

३५६—इस द्वीपसमूह के मुख्य भाग चार हैं । हर भाग एक अलग द्वीपसमूह है ।

१–संडा के द्वीपसमूह–संडा के बड़े बड़े द्वीपों में (The Great Sunda Islands) सुमात्रा, जावा और बोर्नियो हैं और संडा के छोटे छोटे द्वीप (The Lesser Sundas) जो बारह सौ मील की लम्बाई में फैले हुये हैं, लम्बोक और तिमूर के बीच में हैं।

२–सिलीबिज़ (Celebes) के द्वीपसमूह।

३–मलक्काज़ के द्वीपसमूह (Moluccas)

४–फ़िलीपाइन के द्वीपसमूह (Philippine Islands)

३५७–किनारा–द्वीपों के अधिक होने के कारण बहुत से छोटे छोटे समुद्र और मुहाने पैदा होगये हैं, जो उन्हीं द्वीपों के नाम से प्रसिद्ध हैं जिनके पास वह हैं। हर द्वीप में एक या दो बन्दरगाह अवश्य हैं। मकासर के मुहाने के पश्चिमी किनारे के समुद्र उथले हैं। उनकी गहराई ६०० फ़ीट से अधिक नहीं है, परन्तु पूर्वी किनारे के समुद्र गहरे हैं। सिंहापुर से जहाज़ बनका (Banca) बटेविया (Batavia) बाली, लम्बोक और तिमूर होते हुये आस्ट्रेलिया जाते हैं।

३५८–बनावट–(अ) बहुत ही छोटे छोटे द्वीप मूंगे

के बने हुये हैं और बाक़ी दबे हुये पहाड़ों के उभरे भाग हैं। **बोर्नियो** और **सिलीबीज़** के सिवाय और द्वीपों में ज्वालामुखी पहाड़ हैं जिनकी कुछ चोटियां २½ मील तक ऊंची हैं। झीलें प्रायः ज्वालामुखी पहाड़ों के मुंह हैं। इन द्वीपों में नदियां भी अधिक हैं, परन्तु बहुधा छोटी छोटी हैं। सुमात्रा और जावा के सिवाय और द्वीपों की नदियों में तेज़ बहाव के कारण नावों का आना जाना कठिन है।

ज्वालामुखी पहाड़ों की श्रेणियां और ज्वालावृष्टि

(ब) इन ज्वालामुखी पहाड़ों में से कुछ तो बिल्कुल बन्द हैं और कुछ जारी हैं। इनका सिल्सिला **सुमात्रा, जावा, सम्बवा** (Sambawa) होता हुआ **फ़्लोर्स** (Flores) तक चला गया है। यहां से उत्तर की ओर घूम कर **मलक्काज़** और फ़िलीपाइन होता हुआ **जापान** के ज्वालामुखी पर्वतों से जा मिला है। **बैरन के** द्वीप का सुप्त ज्वालामुखी पहाड़ भी इसी सिल्सिले में है। इस सिल्सिले के किनारे किनारे थोड़ासा भूकम्प आजाना मामूली बात है और कभी कभी तो भूकम्प इस ज़ोर से आते

हैं कि गांव के गांव नष्ट होजाते हैं। जितने वेग से यहां ज्वालावृष्टि होती है, उतनी दुनिया के और किसी भाग में नहीं। यहां ऐसे जोर से ज्वालावृष्टि होचुकी है कि पहाड़ तक उड़गये * हैं और उनकी जगह पर भीलें बन गई हैं। कई द्वीप लोप होगये और कई नये द्वीप समुद्र की तह के उभर आने से बनगये। हजारों गांव और आदमी नष्ट होगये। कई बार इन द्वीपों की ज्वालावृष्टि का असर पृथ्वी के हर भाग में मालूम हुआ।

२५६–आब हवा–उष्ण कटिबन्ध में होने के कारण इन द्वीपों में गर्मी बहुत पड़ती है और हवा मरतूब रहती है, परन्तु समुद्र की ठंडी हवा से गर्मी का असर कुछ कम होजाता है। इसी लिये गर्मियों में भी दिनको उन द्वीपों में, जो भूमध्य रेखा परहैं, ९० ° फ़ार्नहीट से अधिक गर्मी नहीं पड़ती। एशिया के और भागों की अपेक्षा यहां मेह अधिक बरसता है, क्योंकि यहां भाप के लिये कढ़ाई सदा चढ़ी रहती है। इन द्वीपों के उन स्थानों में जो भूमध्य रेखा पर हैं और उनके उत्तर दक्षिण में थोड़ी दूर तक साल भर मेह बरसा करता

* सन् १८८५ ई० में सम्बवा की ज्वालावृष्टि से कई हजार आदमी मरगये। कराकतवा (Karakatau) के द्वीप में ३ महीने तक बराबर ज्वालावृष्टि रही। अगस्त सन् १८८३ ई० में ३ दिन तक इस जोर से ज्वालावृष्टि हुई कि आधा द्वीप उड़कर लोप होगया और समुद्र का पानी वहां चढ़ आया।

है। और जगह दो ऋतुएं होती हैं। एक ऋतु में वर्षा अधिक होती है और दूसरी में नहीं। यह अन्तर मानसून की दिशा और पहाड़ों के कारण है। **लंका के छोटे द्वीपों** की आब हवा जो आस्ट्रेलिया के पास हैं खुश्क रहती है, क्योंकि आस्ट्रेलिया भी अरब की तरह रेगिस्तानी है।

३६०–**पैदावार**–दुनिया में ऐसे स्थान बहुत ही कम हैं जो इन द्वीपों की तरह उपजाऊ, हरे भरे और रमणीक हों। प्राय: इन द्वीपों में समुद्र की नीची ज़मीन से लेकर सात हज़ार फ़ीट की उंचाई तक पहाड़ों के किनारे ऐसे हरे भरे हैं कि तिल भर भी जगह खाली नहीं। ज्वालामुखी पहाड़ों की मिट्टी और मेह की अधिकता के कारण यहां की धरती उपजाऊ है। एशियाई द्वीपों में इन्दोचीन और चीन के से जंगल हैं। यहां की धरती ने खाने पीने की चीज़ों का सदावर्त खोल रक्खा है। खेती से जितना अन्न और फल फूल एशिया के किसान साल भर में पैदा करते हैं, उतना यहां के लोग थोड़े दिनों की मेहनत से पैदा कर लेते हैं। कुछ द्वीपों में एक आदमी दस दिन की मेहनत से साल भर के खर्च के लिये सागूदाना पैदा कर लेता है। रोटी के वृक्ष में जो फल लगते हैं, उनके बीजों का आटा गेहूं के आटे की तरह लाभदायक और स्वादिष्ठ * होता है।

* जो खाने में अच्छा लगे।





नारियल, अनेक प्रकार के केले, अनन्नास, धान, शक्कर, क़हवा, तम्बाकू यह चीजें प्रायः हर द्वीप में पैदा होती हैं। इनके सिवाय ख़ास चीजें जैसे साग़ूदाना, रबड़, गटापारचा, कपूर, कुनैन, गर्ममसाला, सन, रोटी के वृक्ष मुख्य मुख्य द्वीपों में बहुतायत से होते हैं। (पैदावार का नक़्शा देखो)

लौंग आदि गर्ममसालों के चित्र मलक्काज के बयान में दिये गये हैं।

नोट—(१) गटापारचा एक प्रकार का वृक्ष है जिस का गोंद जमा कर खिलौने, जूते आदि चीजें बनाई जाती हैं जिन पर पानी का असर नहीं होता।

(२) यहां कपूर वृक्षों के भीतर से भी निकलता है और गोंद की तरह भी रिसता है।

३६१—**खानिज पदार्थ**—कुछ द्वीपों में रांग की खानें हैं। सोना और हीरा नदियों के रेत से निकाला जाता है।

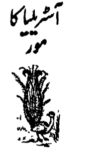
३६२—**पशु**—कुछ एशियाई द्वीपों में बड़े बड़े हाथी, चीते, शेर, गेंडे आदि पाये जाते हैं। बन्दर बहुत से और अनेक प्रकार के होते हैं। आस्ट्रेलिया के द्वीपों में फाड़खाने वाले जानवर नहीं होते। कागरू की तरह ऐसे जानवर होते हैं जो अपने बच्चों को थैलियों में लटकाये फिरते हैं।



कांगरू की थैली में बच्चा।

लम्बे पंख के पक्षियों में एक का नाम **स्वर्ग की चिड़िया** है जो बहुत ही सुन्दर होती है।

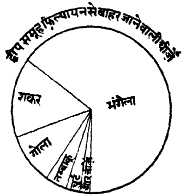


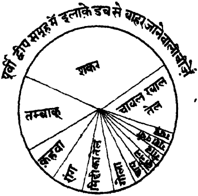


आस्ट्रेलिया का मोर

स्वर्गकी चिड़िया जो आस्ट्रेलियाई द्वीप सिलीबीज़ में पाई जाती है। (स्वर्ग की चिड़िया से मुकाबिला करो)

३६३-**व्यौपार**-इन द्वीपों की पैदावार का व्यौपार भी अच्छा होता है। यूरप और अमेरिका के जहाज़ यहां के अनेक बन्दरगाहों से माल लेजाते हैं, जिसका अनुमान इन व्यौपार संबन्धी वृतों से होसकता है।





गेहूं, सूती और ऊनी कपड़े, दियासलाई, साबुन आदि चीजें और देशों से इन द्वीपों में आती हैं। व्यौपार अधिकतर डचों के हाथ में है।

३६४–बाशिन्दे–काकेशिया की तरह यहां भी बहुत सी नस्लें पाई जाती हैं। पूर्वी द्वीपों में कुछ समुद्री हब्शी पाये जाते हैं जिनके बाल अफ्रीका के हब्शियों की तरह घूंघरवाले होते हैं, परन्तु घने और अधिक मुड़े हुये नहीं होते। होंठ भी हब्शियों की तरह बहुत मोटे नहीं होते।



इन द्वीपों में असली मल्य जाति के कुछ लोग बसे हुये हैं और कुछ मल्य हिन्दू, चीनी और अरबों की खिचड़ी हैं। हिन्दू जाति के लोग अब वहां ऐसे कट्टर नहीं हैं जैसे हिन्दुस्तान में। बाली द्वीप के हिन्दुओं ने अब तक अपना धर्म

नहीं छोड़ा है । उनमें छूत और जाति पांति का विचार अब भी अधिक है । हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की तरह यह लोग भी महादेवजी और देवी देवताओं की पूजा करते हैं । मल्य अधिकतर मुसलमान हैं । यहां मुसलमानी मत अरब के व्यौ-पार के कारण फैला ।

३६५–**भाषा और सभ्यता**–एशियाई द्वीपों के लोग अधिक सभ्य हैं, विशेष कर सुमात्रा और जावा के । जितना पूर्व की ओर बढ़ते जायँगे उतने ही वहां के लोग असभ्य मिलेंगे । इनमें कुछ फ़िर्क़े ऐसे हैं जो अब भी मनुष्य का बलिदान करते हैं । यह लोग शरीर को गुदवाना बहुत पसन्द



गुदा हुआ चेहरा।

करते हैं, छाल पहनते हैं और पेड़ों पर घर बनाकर रहते हैं । बहुधा घर स्याम के घरों की तरह होते हैं ।





बाली के पास के एक द्वीप में इस तरह के घर बने होते हैं।

केवल सुमात्रा और जावा में ही संस्कृत से मिलती जुलती भाषा बोली और लिखी जाती है, और द्वीपों में लिखने की भाषा नहीं है।

राज्यप्रबन्ध के विचार से पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह के विभाग

३६६–इन द्वीपों में से अधिकतर द्वीप डच और अमेरिकावालों के अधिकार में हैं। कुछ डच किसानों की तरह बसे हुये हैं और सरकार की ओर से खेती करते हैं। जो स्थान डचों के अधिकार में हैं, वहां का राज्यप्रबन्ध हिन्दुस्तान की तरह है और उन सब के लिये एक बड़ा हाकिम (गवर्नर जनरल) नियत है जिसके आधीन और सब अफ़सर हैं।

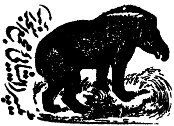
बोर्नियो और उसके पास के कुछ द्वीप अंगरेज़ों के अधिकार में हैं। इन द्वीपों का सोलहवीं सदी में पुर्तगालवालों ने पता लगाया था। बहुत दिनों तक यह उनके अधिकार में रहे, परन्तु फिर डच लोगों ने उनसे जीत लिये।

डच लोगों का अधिकार (Dutch East Indies)

३६७–डच लोगों का अधिकार सुमात्रा के आधे भाग, जावा, बोर्नियो के दक्षिणी भाग, सिलीबीज़ और मलक्काज में हैं।

सुमात्रा (Sumatra)

३६८—यहां पहिले पहल डच लोगों ने सन् १५१८ ई० में अपनी बस्ती बसाई। यह देश पहाड़ी है। इसके बीचों-बीचमें पहाड़ का सिल्सिला है जिसमें पांच प्रचलित ज्वालामुखी पहाड़ हैं और बहुत से सुप्त। एक चोटी २ मील ऊंची है। जैसे घने जंगल यहां हैं, पृथ्वी पर और जगह कम हैं। कपूर, गटापारचा आदि के वृक्ष बहुतायत से हैं। **यहां के हाथी और गेंडे बहुत बड़े होते हैं और कालीमिर्च बहुत अच्छी होती हैं।** यहां हाथी से मिलता जुलता एक पशु होता है जिसे टेपिर कहते हैं।



टेपिर।

३६९—**बाशिन्दे**—यहां के असली जंगली लोगों के सिवाय कुछ अरब और मल्य जाति के मुसलमान, हिन्दू जाति के लोग और डच बसे हुये हैं।



सुमात्रा की औरतें

سماٹرا کی عورتیں

३७०—**प्रसिद्ध नगर—पडांग** इसकी राजधानी और बन्दरगाह है। दूसरा बन्दरगाह **एचीन** (Achin) है। **बंका** के द्वीप में जो सुमात्र से मिला हुआ है, रांग बहुतायत से निकलता है और सिंहापुर चला जता है।

जावा (Java)

३७१—पूर्वी हिन्द के द्वीपसमूह में यह द्वीप बहुत ही उपजाऊ और धनवान् है। डचों के अधिकार में जितने द्वीप हैं उन सबकी यह राजधानी है। इस द्वीप के बीच में भी ज्वालामुखी पहाड़ का सिल्सिला है, जिस में कई चोटियां नैनीताल के बराबर ऊंची हैं। नदियां बहुत सी हैं, जिनकी घाटियां और मैदान अधिक उपजाऊ और हरे भरे हैं। **यहां का नील बहुत अच्छा होता है।**

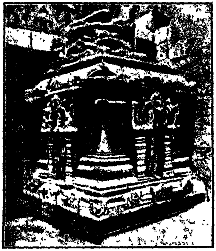
३७२-**शिल्प और कारीगरी**-यहां के लोग कपड़े बुनने, छपाई का काम, ज़रदोज़ी, नावें और मिट्टी के बर्तन बनाने में बड़े चतुर हैं।



जावा के दूल्हा और दुलहिन

३७३-**बाशिन्दे**-क्षेत्रफल के विचार से आबादी बहुत ही घनी है, परन्तु पैदावार अच्छी होने के कारण खाने पीने की कमी नहीं है। यहा के लोग अधिकतर मल्य जाति के हैं। इस देश के मध्य भाग में कुछ हिन्दू जाति के लोग भी पाये जाते हैं। उनकी भाषा में हिन्दुओं की पुरानी संस्कृत भाषा का असर मालूम होता है। अक्षर भी दो प्रकार के हैं। एक संस्कृत से मिलते जुलते हैं जिन मे धर्म की पुस्तकें लिखी हुई हैं और दूसरे अक्षर और कामों में बरते जाते हैं। यहां के लोग गाने बजाने और नाटक के बड़े शौक़ीन हैं। नाटक में बहुधा रामायण और महाभारत के खेल होते हैं।

जावा की प्राचीन अद्भुत चीजें



जावा के एक मंदिर का कोना (बोरो बोदर)

مندر (جاوا)

३७४—यहां के हिन्दू और बौद्ध मन्दिरों के खंडहर बड़े विचित्र हैं। यह मध्य भाग में अधिक पाये जाते हैं। इन से यहां के पुराने समय के हिन्दुओं की सभ्यता का पता चलता ह। सब मन्दिरो में **बोरो बोदर** * का मन्दिर अधिक प्रसिद्ध है, जो ५०० फ़ीट ऊंचे वर्गाकार चबूतरे पर बारह सौ वर्ष से भी पहिले का बना हुआ है। इसका घेरा तीन मील

* यह नाम बलभद्र या बौद्ध से बिगड़कर बना मालूम होता है।

है और दीवारों पर जानवरों और आदमियों के अनेक कामों के चित्र बने हुये है।

बाली (Bali)

३७५—बाली का छोटा द्वीप भी पहाड़ी है। जावा और इसके बीच में एक स्थान पर एक मील की दूरी है। यह बहुत ही उपजाऊ है, इसी कारण खेती अच्छी होती है। आबादी बहुत घनी है। कुछ लोग मुसलमान हैं और अधिकतर लोग हिन्दू धर्म के माननेवाले हैं।

बोर्नियो (Borneo)

३७६—**विस्तार**—आस्ट्रेलिया, न्यूगिनी और ग्रीनलैंड के बाद विस्तार में **बोर्नियो** का नम्बर है। यह देश भी पहाड़ी है, परन्तु इस में ज्वालामुखी पहाड़ नहीं हैं। इस द्वीपसमूह की आब हवा सुमात्रा की तरह है।

३७७—**पशु और बनस्पतियां**—यहां प्रायः उसी तरह के पशु और वनस्पति पैदा होती हैं जो सुमात्रा में। **शेर और चीते** यहा नहीं होते।

बनमानुष—यहां एक तरह का बनमनुष होता है जिसकी ऊंचाई तो आदमी के बराबर और हाथ २½ गज लम्बे होते हैं। नदियों के किनारे वृक्षों पर घोंसला बनाकर रहता है। बलवान् इतना होता है कि मगर से लड़कर उस को भगा देता है।


बनमानुष (बोर्नियो)

३७८—**खानिज पदार्थ**—बोर्नियो सोना, हीरा और दूसरे रत्नो के लिये विशेष प्रसिद्ध है। रागा तो खानों से निकाला जाता है, परन्तु सोना और हीरा नदियों के रेत में से मिलता है।

इस द्वीप का अधिक भाग डच लोगो के अधिकार में है। अबाबील के घोंसले जिनका शोरबा चीनी लोग खाते हैं, बहुधा यहा से जाते है। दूसरी अनोखी व्यौपारिक चीज कछुओं की खोपड़िया हैं।

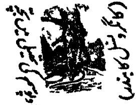
सिलीबीज़ (Celebes)

३७९—जैसा टेढ़ा मेढ़ा सिलीबीज़ का द्वीप है वैसा दुनिया में और कोई नहीं। इस छोटे से द्वीप में चार प्राय-द्वीप हैं। कोई स्थान समुद्र से १०० मील से अधिक दूर नहीं। हर एक में पहाड़ हैं जिनमें सुप्त ज्वालामुखी पहाड़ों की चोटियां पाई जाती हैं। इसका उत्तरीय भाग डचों के

अधिकार मे है और दक्षिणी भाग मे मुसलमानी रियासतें हैं।

३८०-**पैदावार**-यहा का कहवा बहुत अच्छा होता है। **सागूदाने के वृक्षों के बन के बन दलदलों में अपने आप उगते हैं और उनके पत्ते आदमी के डील से दोगुने होते हैं।** दस बारह वर्ष के बाद जब फूल आने बन्द होजाते है तो पेड़ भी सूख जाते हैं। पेड़ के तने मे से सूखे सेब की तरह गूदा निकलता है, जिसको पीसकर दाना बनाते है। गूदे को पीसकर उसके आटे की रोटिया बनाकर धूप में सुखा लेते है और वर्षों तक खाते रहते है। इसी कारण यहा धान की खेती नहीं होती।

३८१-**सिलीबीज़ के अद्भुत पशु**-इस द्वीप-समूह के पक्षी तो एशिया के पक्षियों से मिलते जुलते हैं, परन्तु कुछ जानवर न तो एशिया के जानवरों से मिलते है और न आस्ट्रेलिया के जानवरो से। बड़े बड़े दूध पिलाने वाले जानवर और फाड़ खाने वाले जन्तु यहा नहीं पाये जाते। यहा एक प्रकार का जगली सूअर होता है जिसके **चार दांत** ऊपर को निकले और **मुड़े होते हैं। कांगरू जाति**



ओपोसम की थैली मे बच्चा।

के **ओपोसम** से मिलता जुलता एक जानवर पाया जाता है जिसके कारण यह द्वीप आस्ट्रेलिआई मानाजाता है ।

३८२—**बाशिन्दे**—यहां अधिकतर मल्य जाति के मुसलमान बसे हुये हैं । यहां के असली बाशिन्दे **दयाक** कहलाते हैं, जो फ़ारमूसा के जंगली लोगों की तरह अपने बैरी का सिर काटकर लटकाना बड़ी बात समझते हैं । लड़कों का विवाह उस समय होता है जब वह अपने बैरी का सिर काट लाते हैं । स्त्रियां उन खोपड़ियों को लेकर बहुत खुश होती और गीत गाती हैं ।

मकासर—राजधानी और व्यौपार की मंडी है ।

मलक्काज (Moluccas)

३८३—मलक्काज के द्वीपसमूह में **सेरम** (Ceram) **अम्बायना** (Amboyna) आदि द्वीप शामिल हैं । इन द्वीपों के झुर्मुट में जो द्वीप सिलीबीज की तरह टेढ़ा टेढ़ा है, उसका नाम जिलोलो (Gilolo) है । इन द्वीपों में भी ज्वालामुखी पर्वत हैं । इनमें लौंग, इलायची और जायफल बहुतही अधिक पैदा होते हैं । जायफल अम्बायना में अधिक पैदा होता है । इसी कारण इन द्वीपों को **मसाले के द्वीप** भी कहते हैं । यही यहां के मुख्य व्यौपारिक पदार्थ हैं ।







अंगरेज़ों का अधिकार (British Borneo)

३८४–बोर्नियो का उत्तरीय भाग **सरावक** (Sarawak) है जो अंगरेज़ों के अधिकार मे है । बोर्नियो के सुल्तान ने एक अगरेज़ी अफ़सर को उसकी सच्चाई और बहादुरी से प्रसन्न होकर सरावक का राजा बना दिया था । अब भी वहां उसी अंगरेज़ी अफसर की सन्तान का राज्य है । वह सरावक का राजा कहलाता है ।

सरावक राजधानी और बन्दरगाह है । इसको क्यूचंग भी कहते हैं ।

उत्तरीय बोर्नियो और **लाबुअन** (Labuan) के द्वीप **अंगरेज़ी बोर्नियो कम्पनी** के अधिकार में हैं, परन्तु कम्पनी के प्रबन्ध की देख भाल सरकार की ओर से होती है ।

ब्रूनी (Brunei) की रियासत भी बृटिश राज्य के आधीन है । यहां पत्थर का कोयला बहुत अच्छा मिलता है । तम्बाकू, क़हवा, कालीमिर्चे मुख्य व्यौपारिक पदार्थ हैं ।

अमेरिका की संयुक्त रियासतों का अधिकार ।



फ़िलीपाइन के निवासी (यहां के लोग सिर पर फूलों की टोपी पहनते हैं और शरीर में भी फूल लटकाए रहते हैं).

३८५—फ़िलीपाइन के द्वीपसमूह में एक हजार से अधिक द्वीप शामिल हैं और उनका क्षेत्रफल पंजाब के दुगुने से कुछ अधिक है, परन्तु उनमें बड़े और प्रसिद्ध **लूज़न** (Luzon) **पलावन** (Palawan) **मंडनाव** (Mindanao) **समर** (Samar) आदि हैं । यह द्वीप भी पहाड़ी हैं । यहां बहुधा ज्वालावृष्टि हुआ करती है और भूकम्प भी आते हैं । आब हवा मरतूब है, परन्तु नीरोग है । मेंह अधिक

बरसता है। उत्तर में तूफ़ान बहुधा आया करते हैं। इन द्वीपों में तम्बाकू और सन अच्छा पैदा होता है। **लूज़न** का बन्दरगाह **मनीला** (Manila) है। यहां से शक्कर, तम्बाकू, सन आदि और देशों को जाते हैं।



सन् १८९८ ई० में यह द्वीप **स्पेन** के हाथ से निकल कर अमेरिका की संयुक्त रियासतों के अधिकार में आये।

प्रश्न.

१—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के नाम पड़ने का क्या कारण है? इनको मलाया का द्वीप समूह क्यों कहते हैं?

२—नक़्शा देखकर बताओ कि पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह किन किन अक्षांश और देशान्तर रेखाओं के बीच में फैले हुये हैं?

३—भूमध्य रेखा पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के किन किन द्वीपों में होकर जाती है। इसका उन द्वीपों पर क्या असर पड़ता है?

४—नक्शा देखकर पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के समुद्रों और मुहानों को बताओ। वालस लाइन का क्या मतलब है?

५—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह की साधारण बनावट क्या है?

६—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह में नदियां बहुधा बहुत छोटी हैं और ऐसी नदियां बहुत कम हैं जिनमें नावें आ जा सकती हैं। इसका क्या कारण है?

७—क्या प्रमाण है कि पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के कुछ द्वीप एशिया और कुछ आस्ट्रेलिया से मिले हुये थे?

८—एशिया और आस्ट्रेलिया के द्वीपों की बनस्पति और पशुओं में क्या अन्तर है?

९—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह की पैदावार क्या है?

१०—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह में कौन कौन से मुख्य द्वीप समूह हैं? हर एक की राजधानी बताओ।

११—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के लोगों का संक्षेप हाल बताओ।

१२—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के मुख्य व्यौपारिक पदार्थ क्या क्या हैं? यहां कपूर किस तरह मिलता है?

१३—राज्य प्रबन्ध के विचार से पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के कितने भाग हैं?

१४—नीचे के स्थान क्या हैं ? उनका संक्षेप हाल लिखो। बटेविया, मकासर, लम्बोक, सम्बवा, बाली, एचीन, ब्रूनी, मनीला, लाबुअन, पडांग, सरावक, बंका, जिलोलो, अम्बायना।

१५—क्या प्रमाण है कि पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के कुछ द्वीपों में कभी हिन्दू बसे हुये थे ?

१६—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह में इस्लाम मत कब फैला ?

१७—सिंहापुर से आस्ट्रेलिया जाने में कौन कौन से बन्दरगाह और द्वीप मिलेंगे ?

१८—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह के किन किन द्वीपों में होकर ज्वालामुखी पहाड़ों का सिल्सिला जाता है ?

१९-किन किन द्वीपों में ज्वालामुखी पहाड़ों से ज्वालावृष्टि हो चुकी है ? इसका संक्षेप रीति से हाल बताओ।

२०—आस्ट्रेलिया के पास के द्वीपों और फ़िलीपाइन के द्वीपों की आब हवा का मुक़ाबिला करो।

२१—पूर्वी हिन्द के द्वीप समूह एशिया से किस तरतीब से अलग हुये ?

॥ इति ॥

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

१५१ ब्रजला

काल नं०

लेखक लाल साहब।

शीर्षक नवीन भूगोल दर्पण।

खण्ड २ क्रम संख्या ८२३